

बांजिन व्यय्दिमाचान पुरस्काद्यार् प्रन्यः प्रन्याकः ३४

क्येंद्रेली मंगह

जैनाचाय जगम युग् प्रधान महारक श्री मज्जिन क्रपाचन्द्र सूरियरजी महाराज के सदुप ३ से इन्दोर निवासी सु श्रावक चादमलजी सावस सुलाकी धर्म पली चैन चाई के स्मार्गार्थ प्रति ५ ० ० ००१५% चार्यों

इन्दोर निवामी सेठ उत्तर्मचैदजी-सार्वण सुसा की स्वर्गस्य पुत्री चेनीप बाई की तरफ से प्रति ५००

प्रकाशकः---

श्रीजिन कृषाचन्द्रसृरि ज्ञान भेदार इन्होर

[प्रति १०००]

वीर सं० २४४४



अर्वाचीन गहूंली संग्रह।

जात्रा नवाणुं, करीये ए चाल.

एहवा सद्गुरु वांदीए भविकजन, एहवा म०॥ भ्राप तरं स्वानकुंतारं, मरगा तिहाररे गहिये भ०॥१॥ जिम सारधपित साधीजनकुं, वंद्वित देशे वहीये भ०॥१॥ २॥ तिम मद्गुरु असृत्वरदेशे, रहे भविक सुख कहीये भ०॥३॥ गांपसमा गुम्गुगा नित्वारं, राखेगोजन्महीए भ०॥४॥ वित्व निर्धामक उपमा धारे, जिम नायिक नी तरीए भ०॥४॥ एक स्रसंजम दोयविध वंपन, त्रिविधदंड प्रीहरीए भ०॥६॥ बार कपाणिन-वारक तारक, प्रमाहात घरीए भ०॥॥॥ पट्ठाय स्थापनि-वारक तारक, प्रमाहात घरीए भ०॥॥॥ एहवा पट्ठाय स्थापन

॥६॥ गौनमस्वामीसमा सुनि उत्तम, सर्वजीवसम धरीए भ०॥ १०॥ हृद्यकमल नित्रप्ति राखीजे, आनंद शिवपद छहीए भ०॥ ११॥ इति

॥ अथ वधावो ॥

भवितुमे वंदोरे, शीतल जिनपतिरे ए चाल सुख हरस्वामीरे श्रीतीर्थेक्टरे,वरधमान जिनराज। द्रशन जेहनोरे शशी ज्युं दीपतारे,सोभे तेज समाज, भविजनवंदोरे भावेगच्छपतिरे ॥१॥ तसु पटराजेरे सु-धरसगणधरुरे. ज्ञातां व दशअंग । जंबुस्दामीरं शिष्य सोहामणोरे, चौदपुरवधर छंग ॥२० ॥२॥ प्रभवम् उयं-भव जगमें परगडारे, श्रीजसोभद्रपृष्टि । श्रीमंसुन-विजयभद्रवाहुर्जारे,श्रीधुलभद्रदिगंद भ०॥३॥ एम अ-लुक्रम द्वापुरवधकरे हुवा वयरसुणीश । श्रीजिनसतदी-ष:यो भूतलेरे, सुरनर नामत सीस भ० ॥४॥ ताम परं-पर चंद्रकुले भरारे, श्रीकोटीकगराधार । श्रीउद्योतन स्ति सुहामणारे, त्रयरीमा लं मंझार भ०॥५। वरधमान पम्मुख शिष्प जेहनारे, पारअशी परमाण। गच्छची-राशी प्रगर्देपात्यां धकीरें, जाणे चतुर सुजाण भ०॥६॥ तास शिष्यजिनेश्वरस्रिजीरे दुर्छभरायसमक्ष। खरतर विरुद्द लयो ते रुवंडारे, मठपति जीतप्रतक्ष भ०॥७॥

नवकंनी वृतिकारक दीपातारे, श्रीचामवदेवसृरिराय। श्रीजिनव्छ मजिनद्त्रारक्ष्यत्रिं श्रीजिनव्याल अ-माय भ० ।८॥ प्रमन्नभावक इगा र चत्रुमें थयारे,स्थाना-रजगुणवन। ग्रुद्धमधाचारी जग तेरकं,रे सुणिहंगीदन हाय सन भाषा शा शहर पर थाय अनुत्र मेरे, श्रीजिन-लामसरीण । ताम पर,धर जगमां परगड,रे. श्रीजिनच-इमुणीवा भागारिया तेजानापे जीती दिनमणीरे, सोस्वपणे हिजपत्ति । मभीरमुण सामाने जीतीय रे. सु सेव दिनरिन भार ११॥ स्याद एद जितवर्षे बखा-गानारे नयनिश्चपविचार।भगपदान्ध ऋति विस्तारतारे, थावे भवि हिनकार भ० ।१२॥ ज्ञानपूर्वक कियासाधे जे भलीरे, जिरवाणी अर्स र । एहने सेबोरे क्यू सुना-भम रे थाय मफल अवनार भः॥ १३॥ सुरतस्द्रां-उ,बांबलब्रादरेरे कोइनर मृद्गामार। ए उख णासाची मन कोरे, लहि एवा गवाधार भ०॥१४॥ नामधारक आ-चारज हे घण रे पचमवालम्झार । विण हम्म सर्वाख-गमां को नहिरे नो परेतारगाहार भना १६॥ याच्याला-मण्यक्रमल प्साय्थारे, क्रम्हसूदर्गा ए श्रा । जे मां-नमी ते सुरानित पामर्शन, पातिकनी दारि हागा भ० ॥१६॥ इति बघावो ॥

॥ वधावो ॥

मोतियडे मेह वरसीयो, सावित्राज हुवो आणंद पूज पंचार्था विहरतां, नासे सौभाग्यसुरिंद् ॥ जिनह-र्षस्रिंद्नो नंदरे,सद्गुरुसुरतरुनो कंद्रे । मुखसोहे पून-मचंदरे, सर्खा मोर्ताडे मेह॰ ॥ १ ॥ श्वांतिशुणेकरीशो-भता,सचि पंचमहाव्रत धार। वरछतीसपुरो सदा,विच-रे जे निरतिचाररे॥ रशीया जे पर उपगाररे, उपशामर-सना अंडाररे। पाले पंचाचाररे,सर्खा मोती०॥२॥ मेघनग्रीपरे गाजता सिंव मीठी जेहनी वाग्रा। भाप तरे पर तारता,गुणगण रतशरी खाणरे/सह आगमना जेजा णरे, तपेजिम झलहलतो भाणरे। तेहना ऋतिशयबहु विण्णाणरे.सर्खी मोती० ॥३॥ पर तिम्न सुरत**र** सार खाः सखी इण पंच म कलिकालरे। माथे जेहने शोभतां, सुनि-वर जीसा मोतीमालरे। केइ थिवरने केइ बालरे, बंदीजे तेइत्रिकालरे । सखी माती०॥ ४॥ सूरीसकलसर-शेहरो, सखी खरतरगछिसणगाररे। जैनधर्भदीपाधता, महिमा जेहनी खपाररे। सहु संघ तणा सिरदाररे,सिख सुमति तणा भरताररे। जेहनेपणमें नित नरनाररे, छखी मोती ।। १॥ सूत्रं अरथं विस्तारता, सिख देता धर्मो पदेशरे।दान शीवल तप भावना, धारे भावनासु विशे-षरे। इत्यादिक अर्थ निशेषरे, गुण अरू पर्याय प्रदेशरे।

सखी मोनी । ६ ॥ स्तानां श्रीजिनराजना, सखी प्रमुनवचन विलामरे। क्षण में वर्मम्म्हनो सखि निश्च होवे नागरे। थाये निंज ज्ञान प्रकाशरे,वहै याल स्गुर-सहवासरे। करना निजहर सुभापरे,सखी मोती०॥॥॥

॥ नणद्रस्त्रिंद्रस्त्री दे । चास्र ॥

जिनकासन जयकरी,जगगुरु गोतमगणधारी रे. सहीयां गुंहली करो गुंहली करो । गुरुक्तेंग गुरु भक्ति मणे उछरंगरे सहीदां०॥ विचरमां सुनिराया, राउगू ही नगरी आयारे सही० ॥ १॥ पंचेद्री विषय निवारी, नवविध ब्रह्मत्रत धारीरे सही० ॥ च्यार कपायक्तं टःहे, पचमहावत सुधा पार्कैरे मही०॥ २॥ सेवै पचाचार, धरे पंचसमिति मनुहारने सही । श्रिणागुप्ति वस्ति छाजै, इम छत्रीम गुण गुरुराजैरे सही० ॥ ३ ॥ चरगा धरगा गुणसगी, गुद्धातम अनुभवरंगीरे मही० इत्सर्गने अप-वादी, बहुनयगम भगप्रवाद्री सही० ॥४। मोक्षमारग उपदेशी, धरै घरमध्यान झुक्लेकारे कही । रहान्नय अभ्यासी, भविजन वितकमल विकाशीरे मही० ॥६॥ श्रेगिकनरपति आने, गणधर धेदन हाम आहेरे सही।। चेलणा स्वस्तिक पूरे, मोहर्तिमा भरमने चूरेरे सही० । द ॥ निसुणी गुम्मुसवाणी, समकिन निर्मल की

॥ वधावो ॥

मोतियडे भेह बरसीयो, सालिग्राज हुवो आणंद पूज पंचार्या विहरतां, नामे सीभाग्यसुर्दि ॥ जिनह-र्षस्रिंदनो नंदरे,सद्गुरसुरतरना कंदरे । मुखसोष्टे पून-मचंदरे, सर्वा मोर्ताडे मेह०॥१॥ क्षांतिगुणेकरीशो-भता, सचि पंचमहावन धार। वरछतीसगुणे सदा, विच-रे जे निरतिचाररे॥ रशीया जे परउपगाररे, उपदामर-सना भंडाररे। पाले पंचाचाररे,सर्खा मोती०॥ २॥ मैघनणीपरे गाजना,सिख मीठी जेहनी वाण॥भाप तरे पर तारता,गुणगण रतनारी खाणरे/स्षु आगमना जेजा णरे, तपेजिम झलहलतो भाणरे। तेहनो अतिशयबह विण्णाणरे,सखी मोती०॥३॥परतिख सुरतर सारखाः सखी इण पंचम कलिकालरे। माथे जेहने शोभतां,सुनि-वर जीसा मोतीमालरे। केइ थिवरने केइ वालरे, वंदीजे तेहत्रिकालरे । सखी माती॰ ॥ ४॥ स्रीसकलसिर-शेहरो, सखी खरतरगछिसणगाररे। जैनधर्मदीपायता, महिमा जेहनी अपाररे। सहु संघ तणा सिरदाररे,सिख सुमित तणा भरताररे। जेहनेप्रणमें नित नरनाररे,सखी माती ०॥ ५॥ सूत्र ऋरथं विस्तारता, सखि देता धर्मोः पदेशरे। दान शीवल तप भावना, धारे भावनासुविशे-षरे। इच्यादिक आर्थ निद्योपने, गुण ग्रम पर्याय प्रदेशहे।

गुण कहीचे केता मुझे ज्ञान नहि एता । शिष्पादिव स्मे प्रविद्या, स्तनअमोलख देतारे आज० ॥ ८ ॥ खरतरगच्छमे स्वि इव राजे, जयजयकारवानाम । कृताच्यमुनवर जुलाबी, द्विष्यार्टद्गुणगायारे ऋष्ज० ॥ ६ ॥ इति गहुंखी

॥ दं ॥ श्रय चउमम् लिख् ने

प्रणमु पद्पक्त पासरे, जम न में हीहदिहासरे गुणगण गाया उलाम, महु संघ वीनवे गुरुजी तस्तरे, दइ दरसन पावन वरिया ग्रामने मह० ॥१॥ ग्रामा टमासे ऋत्रे वधार्घारे, शिष्टव रंगाथे चार स्व स्वारं, सह स्वनणे मन भाव्या महु०॥ २॥ भूतनगर माहे क्राधकारीके, केठसाहुकार है मने हारीक से तो बाट जीताया हमारी सहरू ॥३॥ श्राव्यमासे सुप्रम'त जामं रे, मह मच मल्या गुणशम रे, भगवति मुणवा रह रागी स्टु०। शा वर्ला अधिक व्यधिक व्याह्य थार्रे, श्रांसदने हरप न मार्रे, तिहाँ आनद आनद यानाथ स॰ ॥ ५ ॥ तुमे ज्ञानःतन भडाररे, दरवा भ्रम पर उपगाररे, धजा नाधाराना आधार सद । ईव भादग्यो भलापरे ग जेरे गुरुगजना टक्साइ छ.जेरे, तुमारी बाणी गंगापूरे गाजे सन् ॥ ७ ॥ हुसे र गयी नहि रगायारे, नहि द्वेष रपुधी वंघायारे, महामोहधी नहि लिपाचा स० ॥ ८॥ पांचे इंद्रि सुभटथी सुरारे, अःलम विक्रणाथी दूरारे, चार चोर कर्या चकचुरा स० ॥ ९। आसु म सन्तेनी चाप वैराशीरे, थया कंचनका-मना त्यागीरेः जेनी मुक्तिपुरीसुं लय लागी स० ॥१०॥ धनमाल अने राजधानीरे, महासंगट आकरी जानीरे, तुमे छोडी दुनीयादिवानी स० ॥ ११ ॥ तुम विद्या वेलडीये विंटायारे, जेनी कल्पतरसम कायारे, एती सुमनाजलयां विंटाया स०॥ १२॥ ज्ञानदोरीथी मन-कनी बांध्युरे, तीन तत्व रमण मन साध्युरे, जिहां समिकत अदभृत लाध्युं स० ॥ १३ ॥ तुमे शास्त्र सोधी रम लीधारे, महामाह रिष्ठ वस कीधारे, तुमे अनु मत्र प्णालो पीघो स० ॥ १४ ॥ तुम आणा मदा जिर धरसुरे, नपनियम विशेषे करशुरे, विल विनय सदा ग्रनुपरसुं स० ॥ १५ ॥ कृपाचंदजी नाम तुम-रोरे. प्रतयाध कर्यो यहमारारे । प्रयवंतने लागांछो प्यारो स०॥ १६ ॥ मुनिजीनी देशना बहु सारीरे, भवि जीवते लागे छे प्यारीरे, अतिबाध पाम्या नरनारी स्।। १९॥ मुतावर संयम स्रारे, मुनिकियामाहे प्रारे । परिणामे मु नर्जा ग्रातिम्हा स्० ॥१८॥ मुनि-जीए लाभ घणेरा ही यारे, श्रीमंघना फारज सीधारे, उपगार महामुनिजाए कीचा छ० ॥१९॥ मु,नजीनं

नाम चणुं सार्करे । क्रवाचंटजी लागे प्याकंरे । जिनशा -सन चणुं ग्रजवाल्यु स० ॥२०॥ जेह सुनीवरमा गुण गासेरे । प्राणी पापरहित ते धासेरे । वली शिवपरि नयगिये जासे स॰ ॥२१॥ चतुर्मास हणी परे गायोरे, चतुरविध श्रीसंघ सवायोरे॥ तिहां ग्रानंद संगल बरतायो। स० ॥२२॥ इति चोमासो सं०॥

विचरता गामोगाम, मुनि आव्या एणे ठाम । आ-छेलाल, वह परिवारे परिवर्षाजी ॥१॥ मारवा**ड देश**ङ-न्पण, बीकानेरसंपन्न ॥ आङेलाल **॥ माता ध्यमरा**हे जनमियाजी ॥२॥ पाले पच खाचार । छकावजीव प्रतिपाल । च्यांग्रेलाल सुमनिगुपतीसु मालताजी ॥३॥ करता उग्रविहार, आव्या करूछ मझार । आछेलाल महेसर पधार्थाजी ॥ ४ ॥ देशविदेशमा लोक,बांदवा ष्यावे थोफ। ष्याञ्चेलाल । नयगम प्रश्न प्रज्ञताजी ॥५॥ धांने मञ्जिमद्वांत । नदीमञ्ज महत् ॥ आञ्चेलाल । सं-देह भागे मह तणाजी ॥ ६॥ चतुर चेला तुम स्चार, विधा तणा भटार । ग्राहेलाल । गुमग्राणा शिरधा-रताजी ॥ भागनली करी चित्तलाय, पामी द्याप पसाव च्याङेखाल । इणीपर मैवककरे बीनतीजी ॥८॥ इति ॥

॥ पुन गहूंळी ॥

जीरे मारे प्रणिष्ठं श्रीजिनवरशाय, मुकी मनती

विसदिव गुरुमुख निर्धे । चात्रक जिस भविजन हरसे ॥ थां०॥ ७ ॥ ज्रुभ उगणीसं चमालीसे, फागण सुदि ग्राति मन हीसे ॥ थां० ॥८॥ श्री नागपुर नगर सुहावे । चारित्र सुगुरु मन भावे ॥ था० ॥६॥ सहु संग मिला षहु भावे । कृपाहीसे वंकिन पावे ॥ थां० ॥१०॥ इनि॥

॥ पुनःगहुंकी ॥

हो प्रीतमर्जी प्रीतकी रील अनीतकरी चितधारियै ए**देशी।। सुण सा**हेली भगवती म्त्रनी वाणी,अवण रस पीजीयै। गुरु गुगावंता वंदीने, नर अवनी लावी लीजिय।। गुरु उपगारी प्रवहणा सम,संसार समुद्र तरी जिये।।सुण = ॥ १॥ पंचय अंगे भगवती जाणी, विखिवाह पद्यती त्रक द्याणी । बीर जगत गुरु बखागाँ ॥ सुरा ॥ ३॥ षद् हृद्य जिहां वरवाण्या है, भाव भंग निक्ता जा-ण्या छै। नय द्विध सप्त करी आण्या छै॥ सुरा ॥३॥ सुय खंत्र एहनो एक कहीयै, ज्ञातक इकतालीस सर. द्हियै। एह सुग्ता क्षोताजन मोहियै॥ सुण॥ ४॥ पंचांगी प्रमां छाजे, शुद्ध परंपरने काजै। वर्ला जीत लणा डंका बाजै ॥ सुण ॥५॥ सुंद्रवर संख्यिन वर्णी, मधुरे स्वर गावै वरतरूणी। करै गहुंली अनुपन्न सन हरणी ॥ सुण ॥ दं ॥ द्रव्य भाव पूजा की जै, ज्ञान

भक्ति करी द्रव्य खरचीजै। कृपाचन्द्र शिव सुख लीजै। सुण॥ ७॥ इति॥

.॥ गहंली ॥

महीपळ म्हारी सरगुरू आव्या, आज चली सापरा जहये र ॥स०॥ बांदवा रे महांरा राज ॥ १ ॥ स् ॥ देश विदेश मभार, ग्राम नगर पर कडा र ॥ स॰ ॥विवरतारे महारा राज ॥ २॥ म॰॥ पंचाचार प्रवीण, ब्रिकरण सुद्धे मंजम रं॥ स॰ ॥ पालता हो महाराराज ॥३॥ म०॥ ण्यणाटोप यतालीस,सुञ्जेजिनवर भाल्यार ॥ मः॥ डालता रे भहारा राज ॥४॥ सः॥ पटकाचा प्रतिपाल, मुनिवर मारग माचारे॥ स०॥ इजवालता ने महारा राज ॥५ ॥ स॰ ॥ गीतारथ गुरु राज, सूत्र सिद्धांत बखागै रे॥ म०॥ भली परेहो महारा राज ॥ ई ॥ स० ॥ वार्ग्या गहिर गभीर,जिब वरसाले गाज ने ॥ स० ॥ अलधक रे महारा राज ॥ ७ ॥ स॰ ॥ आज भरो सुविशण, एरवा सुरगुरुने भेटण है।। स॰ ॥ उसगस्र हे महारा राज॥ 🗆 ॥स०॥ गोतम ने श्रमुहार म॰ जगम सुरतक सारिखा रे ॥ स० ॥ सख करो ने महारा राज ॥ ९ ॥ म० ॥ गह गुर नो मजोग,कृषा करीने मिलजो रे ॥ म० ॥ मुझ भगी ने महारा राज ॥ १० ॥ स० ॥ इति ॥

आमलो जीरेजी।। जीरे धारे पामी तास पमाय, खरतरपतिकूपा करो जीरेजी ॥ १ ॥ जीरे मारे पनरमा श्रीतिनराय । धर्मनाधर्जी सुखकरो जीरंजी ॥ जीरे मारे बीकानेर उत्पन्न, शुरु कुलवासे दिनमणीजी-रेजी ।। २ ॥ जीरेमारे रहानञ्चवनिधान । माता ग्रमरादे जनमीया जीरेजी । जीरेमारे ग्रहगणमां ज्योतीसार,सुर-जकला अतिसारी है जीरेजी ॥ ३ ॥ जीरेमारे मुनि परिवारमां नेम ॥ गुणसतावीसे शोभता जीरेजी। ॥ ४॥ जीरेमारे मांडवीनगर मझार ॥ श्रावक लंकि सुखीत्रावदो जीरेजी। जीरेमारे सुगुमवरण पसाध, रागी सोभागी करे विनती जीरेजी ॥४॥ जीरेमारे न-रनारीना बहु वृंद, आवे वह आडंबरे जीरेजी । जी-रेमारे नववाङ राजी सणगार॥ माग्यकवाइ गावे गहुंली जीरेजी ॥ ६ ॥ जीरमारे आतमबाजोठ पीठ, कंकुबाई पूरं साथीयो जीरेजी। जीरेमारे समिकत श्रीफलहाध। ह्यलि लुलि लीये लुज्जणा जीरेजी ॥ ७ । जीरेमारे धुंघह खोल्या गार । विचविच गुरुसुख जोवती जीरेजी। जीरेमारे देशना अस्तधार, शोभागी शोभा रस लीए जीरें जी ॥ ८ ॥ जीरेमारे पत्रवणा सूत्रनी वात । स्याद्बाद रचना करे जीरेजी। जीरेमारे खरतरमञ्

सिग्रागर । पुनिकृषार्वद्जी मया करो जीरेजी ॥ ६ ॥ जीरेमारे जगमें तीर्थनाथ,नीर्थवंदावो कृषा करी जीरेजी । जीरेमारे मारवाड देशना लोक, विनती करे बहुपरे जीरेजी ॥ १० ॥ जीरेमारे पेप्रकरण चरदास। पाली तथो चोमासुं पधारजो जीरेजी । जीरेमारे च्यमने डज-मग्राना भाव। ते तुमे आवे नीपजे जीरेजी ॥ ११ ॥ जीरेमारे विनती मानो च्यम एक,लाभ लेशो तुमे घणा जीरेजी । जीरेमारे पामी च्याप पमाय । आणदमुनी जे तप तपे जीरेजी ॥ १२॥ जीरेमारे कुशलस्टिय पमाय, सम च्यामा फली वर्णा जीरेजी । जीरेमारे साचा सु गुमरे पमाय, घरवर मगल वरतीया जीरेजी ॥ १३ ॥

॥ गहुंसी ॥

मृण्यामें स्टगुरु म्हारा,थांरा वचन सुहामगारि॥
म्हारागजा। यांरी वाणी मनमोहनीरे माहाराराज ॥१॥
थारी वाणी समृतव्विन गाजे । जहथी सव पातिक
भाज थां० ॥२॥ गुरु पाचै समिते मिमता। धेनो सीतुं
गुपर्निय गुपता ॥था० ॥ ३ ॥ गुरु पंचमहात्र १ पाते ।
एतो स्वैतपक्ष अजुवाले॥ या० ॥४॥ गुरु धर्मना धारक
एतो हुगैतिना निवारक ॥थां० ॥५॥ गुरु वचनामृत रस्र
पीनो । एनो श्रोता सुण मन भीनो ॥ थां- ॥ ६ ॥

विसदिन गुरुमुखं निरखे । चालक जिस भविजन हरखे ॥ थां०॥ ७॥ ज्ञुस उगणीस चमालीसे, फागण सुदि आति मन हीसे ॥ थां० ॥८॥ श्री नागपुर नगर सुहांवे । चारित्र सुगुरु मन भावे ॥ था० ॥६॥ सहु मंग्र मिली बहु भावे । कृपाहीसे वंकित पावे ॥ थां० ॥१०॥ हि॥

॥ पुनःगहुंकी ॥

हो प्रीतमजी प्रीतकी रीत अनीतकरी चित धारिये एदेशी।। सुण साहेली भगवनी स्त्रनी वाणी, अवण रस पीजीयै। गुरु गुण्वंता बंदीने,नर भवनी लावौ लीजियै॥ गुरु उपगारी प्रवहण सम,संसार समुद्र तरीजियै॥सुण -॥ १॥ पंचम अंगे भगवनी जाणी, विखिवाह पहाती यन ऋाणी । बीर जगत गुरु नखागाँ ॥ सुगा ॥ ३॥ षद् हृद्य जिहां वर्षाण्या है, साव भंग निद्धेपा जा-ण्या छै। नय द्विध सप्त करी आण्या छै॥ सुगा ॥३॥ सुघ खंत्र एहनो एक कहीयै, शतक इकनालीस सर. दृहिये। एह सुर्ग्ता क्षोताजन मोहिये॥ सुण॥ ४॥ पंचांगी एहमां छाजै, शुद्ध परंपरने काजै। वली जीत त्रणा डंका बाजै ॥ सुण ॥५॥ सुंद्रवर सखियन वर्णा, मधुरे स्वर गावै वरतरूणी। करे गहुंली अनुपन मन हरणी ॥ सुण ॥ दं ॥ द्रव्य भाव पूजा कीजे, ज्ञान

भक्ति करी इच्छ खरचोजै | कृपाचन्द्र शिव सुख लोजै ॥ सुण ॥ ७॥ इति ॥

.॥ गहुंली ॥

महीपल म्हारी मटगुरु आव्या, आज चलो आपग जहये रे ॥स०॥ बांद्वा रे घहांरा राज ॥ रे ॥ स॰ ॥ देश विदेश मभ्मार, ग्राम नगर पुर रुड़ा रं ॥ स० ॥विचरतारे महारा राज ॥ २॥ स०॥ पंचाचार प्रवीण, ब्रिकरण सुद्धं राजम रं॥ स॰॥ पालता हो महाराराज ॥३॥ स०॥ एवणाढीप वंतालीस,सुब्रेजिनवर भालपारे ॥ मना रालना र महारा राज ॥४॥ मना पटकाया प्रतिपाल, मुनिवर मारग साचारे ॥ सः॥। इजवालता ने महारा राज ॥५ ॥ म॰ ॥ गोतारथ शुरु राज, सब मिहांत बखागे हैं॥ मह ॥ अली परे हो महारा राज ॥ ई ॥ स० ॥ वार्गा गहिर गभीर,जिम बरसाले गाजे रे ॥ स० । अलधक रे महारा राज ॥ ७ ॥ म॰ ॥ आज भलो सुविराण, ण्रवा स्टगुरुनै भैटवा रे ॥ म॰ ॥ उमगसु रे महारा राज॥ ८ ॥स०॥ गातम ने अनुहार स॰ जगम सुरतक सारिखा रे ॥ स० ॥ सुख करो रे महारा राज ॥ ९ ॥ म० ॥ एह गुम नो मजोग,कृषा करीने मिलजो रे ॥ स० ॥ मुझ भगी रे महारा राज ॥ १० ॥ स० ॥ इति ॥

॥ गहूं छी ॥ राग गोपी चंद

सेरे संतगुरूजी, अवको चीमासो मेरे देशसें, सें । देशदेशसें भाप पधारे, करता जन उपगार। खनकी हमारी यही खरज है, उतारो भवपारजी।।मै०।। १ ॥ पंचमहाव्रतधारताजी क्या, करता उग्र विहार। ईयी समितिको पालताजी क्या, देते ज्ञान अपारजी ॥ मे॰ ॥२॥ कोघ मन मायाको जीता छोडा सब संसार। सुमति गुपतिको पालतेजी क्या, करते पर उपगारजी ।। मै॰ ।।३।। दोष वंतालीम टालकेजी क्या, लेले उगप ं ब्राहार। पाँच दोष मांडलकेछोडे, करते चाप आहारजी ्या से ।। ४॥ वाणी आपकी ऐसीवरसे, ज्युं अमृत के वेण। स्वाद्वाद आगमसं पूरी, जैसे शब्दसे एनजी ॥ मे० ॥५॥ सुरि हमारे कृपाचन्द्रजी, जाने सब संसार। चरण आपके सेवकेजी क्या, उतरे भवसे पारजी ॥ मे॰ ॥६॥ संवत उगणीसे त्रियासीजी क्या, आवणभास मकार । गहूं ली गावे शिवसुखपावें, पहुंचे मुक्ति महार जी ॥ मे ॥ ७॥ इति गहुंली

॥ गहूंछी ॥

॥ राग फूलझडीकी चालमें ॥ गछपति झावियाजीहो,केसहियांचालो गुरुने वां- दवा, कांईसेव्यांमं सुखधाय ॥ गञ्जति० ॥ स० ॥ मस्थर देशके मांयने,एतो चासुनगर सोहंत ॥ ग० ॥ स०॥ वाफणा गोऋे जवतर्घा, एतोमैघराज जसवंत ॥ ग०॥ स०॥ १॥ मातत्र्यमरादे जनमिया, एतो उगणीमे तेरे साल ॥ ग० ॥ म० ॥ युक्ति अमृत ब-चनामृते, गुरु पायो धर्मरसाल ॥ २ ॥ ग० ॥ स० ॥ छतीमेकी मालमें,गुरू लीयो संजनभार ॥ ग० ॥स०॥ सूत्र सिद्धान्त मन धर्षा, एतो स्थाद्वाद मन धार ॥ ३ ॥ ग॰ ॥ स॰ ॥ नय भंगाने ओलव्या, एतो पह दर्भगा ना जाण ॥ ग० ॥ म० ॥ कठिन क्रियाने पासता यर्ला,पच सुमित मन काण॥ ४॥ ग०॥ स०॥ याहे भेदेतपतपे, एतो परकाय रखवाल ॥ ग०॥ स०॥ भृ-भइसमें विचरता,गुरू करता मुनि प्रतिपाल ॥५॥ ग०॥ स॰ ॥ उगनीसे बहुत्तरे, एती शहर बस्बह सझार ॥ ग० ॥ स० ॥ आचारज पदवी लही,तय हरप्यी सघ ष्रापार ॥ ६ ॥ म० ॥ म० ॥ खरतर गर्छम सोभता, एती कृषाचन्द्रसृरि गुगाम्याण ॥ ग० ॥ स० ॥ ग्राम नगरपुर विचरता,प्रधार्या जैञाण ॥ ७ ॥ म० ॥ स० ॥ यात्रा करी उमेगसु,णतो मेवचतुरविध आस ॥ ग० ॥सः॥ लाभ चातुषमजागाकै,गुरकीयो चातुरमाम।ग०।स०।८। सुरी श्रीजिन भद्रनी,खोळाच्या ज्ञान भटार ।ग०।स०।

तांडपत्र पुरतंक तगां, करायां जीण उद्धार।ग०।मा०।ह।
॥ ग०॥ स०॥ पूर्वपुन्यपसायथीं, एतो मिलियो गुरु
सुखकार॥ ग०॥ स०॥ लोक मिहिं निर्धि चन्द्रमा
एतो शुभ मंवत् सन धार-॥ग०॥ स०॥ १०॥ खासे चमके
बीजली एतो श्रावन पेली तीज॥ ग०॥ स०॥ गुरु
गुण गाया भावसुं एतो वर्त्योमंगलवीज॥ ग०॥ स०॥
११॥ इति गहली ॥

ा अथ गहूंली॥

सदग्रंजीं नितंबंदिये, एतो जेशलमेर पधारया है माय । संघ मिली वंधाविषा, एतो चैत्य अनुपम बंद्या हेमाय ॥ स० ॥ गु० ॥ १ ॥ मत्रभाहन गुरुजी सिल्घा एती, गुरुसेचा सुखकारी हेमाय। देशना देता भव्यने एतो, बोध-बीज दातारी हेमाय ॥ स० ॥ गुरु ॥ २ ॥ पंचमहावत पालता एनो,छकायजीव प्रतिपाले हेमायः सात भयोंने नियारता, । एतो आउमदोने गाले हेसाय ॥ स् ॥ गु ॥ ३॥ नवविष ब्रह्मने पालता, एतो दश्चविध यतिधर्भ पाले हेमाय । अंग उग्धारे जागाहे, एतो बारहविध तप माले हेमाय ॥ स० ॥ गु० ॥ ४ ॥ देशविदेशमां विचरता, एतो मरुधर देशपधारया देमाय, शिष्यादिक परिवारसं, एतो यात्रये कारज सारवा हे-साय ॥ स॰ ॥ गु॰ ॥ ६ ॥ उगणीसे वेपांसीये, एतो

संब्धक्ती ग्रयगाया बेमाय क्ष्याचंत्रस्टिराजना एती सुखसागर सुखपाया बेमाय ॥ स॰ ॥ शु॰ ॥ ६ ॥ इति गहूंकी संपुर्ण

॥ गहुंछी ॥

॥ बाल पणीहारीका ॥

इजो दंगा सुखी सांश्रको मोरी सजनीरे को,सुणती पातिक जाय बालाको ॥ १ ॥ बीरजिनंद समीसस्या, मो०॥ राजग्रही प्ररोमाय वालाको ॥२॥ श्रेणिक वेलणा तिया समे मो० बार परषदा सार बाला हो ॥३॥ घरण करम् बलाणीया।।सो० ॥ व्यर्ध कहे सुविवार बाक्रा को ॥४॥ स्वयंत्रभ दोय अति भता ॥ भोरी ।। अध्य-यन तेबीस सार बाज को ॥५॥ मत खंडया पांखडीना ||मो०|| तीनसे तेस्ट बार बाला को ||^६|| शुक्सूकर सली मैं सुपयो ॥ मों॰ ॥ ब्रानंद ब्रंग न माय वाला छो ॥७॥ भावभक्ती मैं माद्यों ॥ मो॰ ॥ भातमसुख सह है।य बाहा हो ॥८॥ पुन्यसंघोगे सुजे फिल्यो ॥पो०॥ सदग्रह तणी संयोग बाला जो ॥ ६ ॥ अवंडाटबी हुवे नहिं किरु ॥ मो० ॥ मृरिकूषाचेत्र सेव बाला जो ॥१०॥ जगणीसे तैयांसीचे ॥ मो० ॥ जेशाचे गहसार बाक्षा ॥ ११ ॥ आजग मंश्विमें मैं श्रुपयो ॥, भी । हुँज ध्वल बुधवार वाला को ॥ १२ ॥ इति गहूं ली

॥ अथ गहुं ही ॥

चाल—सांतिप्रभुविन्ती इक मोरीरे

स्ररीश्वर बीनती, एक मोरीरे, मैं बाहुं सेवा तोरी बी-सरील ॥१॥ स्वामी देशविदेशथी आयारे,मैं पूर्वपु-न्यथीपायारे 🕩 नरजनम सफल कहावा॥ सुरी०॥२॥ पंच आश्रवना स्वामी त्यागीरे, पंच संबरधी रह लागीरे । स्वामी-ज्ञानिकवावडभागी ॥ सूरी । ३॥ सृरि अंगडपांगना ज्ञातारे, नयनिक्षेप भंग सुहातारे । सुरि नंदित्रज्ञनुघोग द्रांता ॥ सूरी० ॥ ४ ॥ सूरि आठ मद्ना त्यागीरे, बाठ बुद्धि तगा स्वरि रागीरे। आठ कम तृणा स्रित्यामी ।।स्०।।५॥ गुरुगुण छत्तीसे राजेरे, तर्णिपरं तेजे छाजेरे । मेघ तणी परे सूरि गाजे॥ स्री ।। ६ ॥ डगनीसे तेयांसी सुखकारीरे, श्रावण-मास सुद् मनुहारीरे । कृपाचंन्द्रसुरि षळीहारी ॥ सुरी ।। ७॥ इति गहुंली॥

ा अथ गहुँछी ॥

॥ कम्तिणी गति जानिये ए चाल ॥

्ञिंग भगवतीमें सुर्यो, वीर जितंद देखांण। सु-

नंतां भातम रहाते, थाये कोड कल्याण । विस्ति ।। १॥ गीतमस्वामीने कर्या,पश्च छत्तीस हजार । दे गीतम प्रमु इस कहे, वर्धमान दरबार ॥२॥ अग० ॥ सुयर्खध एक अति भलो, शतक इकतालीस जाण। उद्देश दश सहसं छे,पद दो लख मन चाण ॥३॥ चंग० ॥ ज्ञान भक्ति करी भावसं, पूजन विविधमकार। गीतम नाम इथ्य होकीने, साहमीबत्सलसाँर ॥ ४ ॥-अंग०॥ मोति माणक स्वस्तिकरो पूजो खँग उदार । इच्यभाव भक्तिकरो, सिवस्रखनो दातार ॥ ४ ॥ अंग० ॥ अंग संखी ए गुरुमुखे, सुणतां पाप पुछाय विधिधी ए आ-राधिये, भवमां न रहाय ॥ ६ ॥ अंग॰ ॥ ७ सन्न ब-इमानथी, निस्रणी तजी प्रमाद । शृद्ध समकित-तेथी जवजे, परभवमें सुखत्बाद् ॥ व्या श्रेग० ॥ सूर रिक्रपाचन्द्र प्राम्पिये, प्रहक्कीने सार । सुखसागर शुण गावतां, पामे भवनी पार ॥ ८ ॥ छाग० ॥ इति गहंली ॥

॥ गहुँली ॥

॥ श्रीसीमन्घर सारिया, बीनतडी अवधार छाल-रे, ए बाल ॥

त्रिशासानंदन वंदिये, भानुपम स्व उदार-लाल्वरे

। समबसरख्यां वेतीने, चंडविह धर्म दातार खालरे ॥ १ ॥ जिश्रासाः ॥ पहिलो गह रजत तनो, सोवन कांगरे होय छालरे। बीजो गह स्रोना तगा,रतन कां-गरे जोय लातरे ॥ २॥ त्रि०॥ तीजो गढ रतन तणो, अणि कांग्ररे मनोहार लालरे। अदी गाउ ऊंचो कहाो, एक योजन विस्तार लालरे ॥ ३॥ त्रि०॥ गौतमादि गण्धराः चबदे सहस्स ऋषिराय लालरे। लिब्ध सिद्धि दापक सदा, प्रसमीजे तसु पाय खालरे ॥ ४ ॥ ब्रि॰॥ सती चेलना तिया समे, मोतियन चोक पूराय लालरे। राजगृही ख्यानमां, समवस्या जिनराय लालरे॥५॥ त्रिः।। सुरिक्रपाचन्द्र सेविधे, खरतरगछ सिगागार खालरे । सुखसागर गुण गावतां, पामे अवनी पार डाबरे ॥ ६॥ त्रि॰॥ इति गहुंसी

॥ अथं गहुंहीं ॥

क्षे पजुसनाद्याविया रे, जानन्द दंग न माय सलूणा। जिम जिम ए पर्व सेवियेरे, तिम तिम पाप पुलाय
सल्णा।। १॥ पर्व०॥ इन्द्रचन्द्रादिक सहु मिलीरे,
दीवनन्दिसर जाय सल्णा। पजुसण चछच्व करीरे,
द्यापो स्थानक स्थाय सल्णा।। २॥ पर्व०॥ समारी
पटह चजवायनेरे, देवो द्वि ज्यार सल्णा। धन ल-

रचो बहु भाषधीरे,कातमने हितकार सलुणा ॥ ३ ॥ पर्वे ॥ भाश्रम पांच निवारीनेरे,कवाय करो वली दूर सञ्चणा ॥ सामायिक पौषध करीरे, जिन पुजामें इंजुर सलुवा ॥ ४ ॥ पर्व० ॥ शीयल सुरगी वालीनेरे, अ बभवमें हितकार सल्लुणा । सीता सुभद्रा सती परे,रं क्षममें जय जयकार सल्लगा ॥ ६ ॥ पर्व० ॥ कमेनिः काचित जे कर्यारे, तपथी ते क्षय जाय सलुणा ॥दृह-प्रहारीनी परेरे, केवलज्ञान गृहिवाय सल्ला ॥ ६॥ पर्वे ।। आवना भावो भावधीरे, पामो भवतणी पार सल्जा ॥ मरुदेवीमाता परेरे, केन्ल रुक्मी अपार सल्णा ७ ॥ पर्व० ॥ खरतग्रज्ञना राजियारे, सृरि-कृताबन्द्र थाय सल्गा । चरग्रकमल तसु सेवीने रे, सुखसागर गुणगाय सलुणा ॥ ८ ॥ पर्व० ॥ इति गहुली ॥

॥ - गहुँछी ॥

बासुप्रव्यस्वानि चंपाना वासी झंतरजानि सिव-पुरवासी एचाल॥ शुभपवेको सेवो वांछित लेवो कहेतेहें भगवान । सुनो मखीरी चाये पज्रसन वृजन करो जिन्हराज। इन्द्र इन्द्राणी सुर स्थ मिलीके गातेंट्र चंगलसाजरे,

॥ १ ॥ शुभ० ॥ तेलेका करना पापका हरना कल्प श्रवण सुखकार, ज्ञान पूजनसे दान देवनसे उतरोगे . भवपाररे ॥ २॥ शुभ० ॥ खमतखामना संघर्से करना संवत्सरी दिल धार,साहमीवत्सल प्रेमसे करना कहते हैं जगद्राधाररे ॥३॥ शुभ० ॥देवलोकसं स्वामि चवके माताके गर्भमें आये,सुपनों को देखा ऋ।नन्दलेखा जीव नके सुखदायेरे ॥ ४ ॥ शुभ० ॥ गज वृषभ सिंहदेवी द्वाम सिस दिनकर ध्वज्वज कुंभ जाण, पद्मसरसागर विमान रहनराशी, अग्रिशिखा मन प्रानरे॥ ५॥ शुभ०⊪कंतसें पूळे केंसेहै सुपने मुजको कहो सुखकार, सुपन पाठकोंको बुलाके पूछाहोगें जग्रधाररे ॥ ६ ॥ शुभ्या दानोंको देवुं तीथोंको सेवुं जगजनका उद्धार, अगनन्द्रमंगल होत नगरमें वरते जयुज्यकाररे ॥ ७॥ शुभ०॥ इति गहुंली

॥ अथः गहुंली ॥

्यूजश्रीकृषांचन्द्रसृरि वीनतडी अवधारो, सद्गुरु अमतग्री ॥ त्यांकडी ॥

सरस्वती को समरणकी जे गुरु गुगागात्र बुद्धिदी जे गुरुभिक्तरस बम्मुतवी जे ॥ पूज्य ॥ १ ॥ संवत जग-ग्रीसे तेरे वरसे चामुनगरे जनम्या ग्रुभिद्विस बत्तीसे

दीक्षा मनहरूषे ॥ पूज० ॥ २ ॥ शहर भुंबह गुरु छाये नरनारिदरस उमाये जंगम। आचारज पद पाये ॥पूज० ॥३॥ गुरु महेर करी मरुधर आये,बीयाल पुर संघ व-धाये । सब्धावक मिलकर लाये ॥ पूजर्शाशागण सद छठे ग्रंड आवे.संब आवक मन आणंद पावे। सद मा-ठमकी जात्रा जावे ॥५ ॥ पूज०॥ गुरुपास प्रभुको स्त-बन करीयो, यूजा कर श्रीसंघर्ट्य अरियो। प्रश्च अस्ति मानंदमंगल वरियो ॥ पूज० ॥ ६ ॥ वीकांणेंसु श्रीसंघ र्घाये, पानू भेरंदान विनती लाये । गुरू वर्तमान जोग फरमाये ॥ वृज्ञ० ॥ ७ ॥ फागुण सुद् इग्यारस दिवसे व्यालपुर स्थाया ठाँगुं नवसे । श्रावक दरसम् कर मन हर्षे ॥पूज०॥८॥ होली वैत्रमासी ग्रह ठावे,लोहावट संघ दरशण पाने । जोधपुर श्रीसंघ गुणगाने ॥पू०॥२॥चैतकूष्ण आठम जाणो,पारसपम् जात्रा मन**ञा**णो । गुरु पर्धारे छ ठाणुं ॥ पूज्ञञ्॥ १०॥ चैत्रवंदी बारस जायो, गुरु व्यालपुर राध हरखांणी । आया गछपति गुगाखाणी ॥ पुज्ञ ।। ११ ॥ वीनतही हमारी सुराजो, बतुर्मास इयां पुरु करजो । श्रीसंघक्षी धार्जी सुणजो ॥ पूज० ॥१२॥ पोकरचंद घरणोंकी साय लोबी, बीनती सदगुरके भेट कीवी । स्वीकार कृपाकरी लीवी ॥पूज० ॥ १३ ॥ .इति गष्ट्रंदी ॥

॥ अथ गहुं ली ॥

स्वामी साता में रहजो कैम करो छो आप बिहार रै। रिषवारै रिलियामणोरे, रहेवाथी रंग रसाल रै।। स्वा-मी॰ १॥ सोमवारे सुखसंपदारे, पासे लील विलासरे ॥ स्वामी० ॥ २ ॥ मंगलवारे मंगल करोरे जिनवाणी सुखकार रे ॥ स्वामी० ॥ ३ ॥ बुद्धवारे बहु परिवार-भीरे, प्रवरिया विहार रे ॥ स्वामी ॥ ४ ॥ गुरुवारे गुरु गुणनिधि रे, सामा जोवी गुरुराज रे ॥ स्वामी० ॥४॥ शुक्रवारे सद्गुरु मिलीया रे, सारो वांछित काज रे ॥ स्वामी० ॥ ६॥ शनिवारे थिरता करोरे, मननी पूरो भास रे ॥ स्वाभी०॥ भातवार साता दिये रे, जभी कर अरदास है।। स्वामी शादा संघ सह मिल वीनवेरे न्हेर करो महाराज रे॥ स्वामी० ॥९॥ इतिगहुंली

ा। अध बीनती रूप गहूं छी।।

स्रीश्वर सुरत शहर पघारोरे,गुणनिधि गुण तु-भारा गाशुं ॥ स्रीश्वर० ॥ १ ॥ तुम रागथी नहिं रंगा-घारे,नहिं डेपरिपुधी धंधायारे,महामोहथी नहिं लेपायारे स्री० ॥ २ ॥ पंचआचार मांहे पुरारे,चालस विकथा यी दूरारे, छकायनी रक्षामें सुरारे ॥ स्री० ॥ ३ ॥ प्रव कानतणा भंडारारे, करवा अमपर डपगाररे, एतो

निराधारना च्याधारारे ॥ सुरी० ॥ ४ ॥ ज्ञान डांरीथी मन कस चान्ध्योरे जणतत्वरमणतामें साध्येरे। जिहां-समिकत अद्भुत लाध्युरे ॥ हरीश्वर० ॥४॥ मारी वी-नती सनमां घरलोरे, आवता चोमामो स्रत करलारे। साये सकल समुदायने लीजोरे ॥ स्रीश्वर० ॥ ६॥ मारवाडमां कीघा सुवारोरे, हवे सुरतमां पधारोरे, तेथी धर्मनो थासे वधारोरे ॥ सुरी० ॥७॥ गुरुज्ञानतयो छे दीवोरे, सकलस्य कष्टे घणा जीवोरे, एअरदास सहुनी मानि लेबोरे ॥सुरी०।८। गुरु छावे नगर सोभा वधसेरे, कोइ उत्तमजीव निकलकेरे प्राथेंहरपे चारित्रलेसेरे. सुरी ।।। धन अमरादेवी मातारे, जेगी जाया सुरीश्व-ररायार, मेचराजर्जारी चर्चाद्वाया रे स्०॥ १०॥ सवत उगणांसे त्रयांभी वरसेरे, कात्तिक वट द्रणमी दिवसेरे, गुरु गुणगाया अतिहरपेरे, स्वा ११॥ जेगरमेर पुराणे काहेररे किल्लो अपूर्वले नेहरे, जिनविम्य तेगों मोहोटु मेहरे, ॥ सुरी॥ १२॥ जिहा श्रीजिन क्रवाचन्द्रमृरी विराजेरे,गुरुनादरकाणसुखने काजेरे,गुरु नी वाणीधी दृखडा भाजेरे ॥ स्०॥१३॥ सुरत शहेरवी दरमने आधारे कल्याणचद सुत गुरू मनभागारे,पेमचद्भाइ टर्सण पायारे ॥ स्र्र ॥१४। इति गहली

॥ अथ गहूळी ॥

गुम्राज हवे क्यां मिलसेरे, मम भाग्य द्शा क्यारे

फलसंरे। तम सेवक क्यां जह ठरसेरे ॥ १००१॥ धनमाल अने राजधानी रे, महा संकट आकरो जाणी रे। तुमे छोडी दुनिया दिवानी ॥ गु० ॥२ ॥'गुरु विद्यावेतडीये विंदाया रे,जेहनी कल्यतर सम छाया रे। तुमे समतः जलथी सिंचाया ॥ गु०॥३॥ तुम ऋाणा सदासिर घरसुरे,तप नियम विद्योषेकरसुं रे। तमारी वाणी सदा घनुसर्सुं ॥ गु० ४॥ सुरतंथी प्रेमचन्द्भाइ आया रे, नाना मोटाने साथे लावा रें। गुरुना दरसनथी मन हुलसाया ॥ गु० ५॥ ऋाप सुरत बाहर पधारो रे, अस विनतहीए अवधारोरे, अमारा मनना मनोरथ सारो गु०६ ॥ तुमे जेसाणे जिन बिम्ब जहारा है। त्यां वैत्यं अनुषम सारा रे । चिंतामणि षास मनुहार । ॥ गु०७॥ संवत उगणी से तथांसी वरसे रे, कार्त्तिक वदी इग्यारस दिवसे रे । बुधबारे गुण गाया हरसे ॥ गु० ८॥ इति गहुंली

॥ गहुंछी ॥

धन्य दिवस म्हारो आजनो म्हारा सुरीजी हो।। मने मिलीया गुरु महाराज वाला छो॥ १॥ करम कठीन दुरे टल्या॥ मा०॥ काढ्युं मोहती मारुं आज ॥ वा० ॥२॥ मने अद्धा करावी शुद्ध धमनी॥ मा०॥ जेथीं मिलसे दिखनो राज॥ वा०॥ ३॥ ओलखाण करावी सुदेवनी ॥ मा०॥ धर्म खरो आपनार ॥वा०॥ ॥ ४ ॥ हेय उपादेय ज्ञाननुं ॥ मा० ॥ नत्वनु कराव्युं भान || बारु ।।५ ॥ मन घारणा झाठ बुद्धीना ||मारा| वली सूत्र सुणावी दीवृज्ञान ॥ बा० ॥ ६ ॥ आप्या लोचन दिव्य ज्ञानना ॥ मा० ॥ कराव्यो प्रकाश हृदय मझार ।। बा० ॥ ७ ॥ प्रभु वाणी चामृत स्वादनी ॥ मः ॥ हेतो पामास भवनो पार ॥ बार ॥८॥ मिथ्या-त्व भृत आज काहीने ।। मा०॥ ग्राप्यु समकितरत्ननु दान ।{वा०।।९॥ मने रुची करावी त्रण तत्वनी ।[मा०॥ क्युँ ज्ञिबपुर मनमुख ध्यान ॥ वा० ॥ १० ॥ कर्म कलक मारु टालवा ॥ मा० ॥ पचक्खाणधी करी मने सुद्ध ॥ वा० ॥ ११ ॥ मे विनती करी गुरु हरपथी ॥ मा ।। काढी कुमनी करावी युद्ध ॥ वा० ॥ १२॥ व्हाला गुरुजीनो। घटलो नही वरे ॥ मा० ॥ मनु करतां कोटी उपाध ।। वा० ॥ १३॥ आज्ञा धर गुरुदेवनी ॥ मा० ॥ जेवी भवना फेरा मिटी जाय ॥ बा० ॥ १४॥ भव भव गरण है ज्ञापनु ॥मा०॥ मारी भवनी भां-गी जजाल ॥ वा० ॥ १५ ॥ कृपाचद्रसरी प्रमायबी ॥ मा० ॥ गुरु गुण महिमा गाय ॥ वा० ॥ १६ ॥ उग-र्णासे त्रीयासेवे ॥ मा०॥ मावण मास मन त्राण ॥ या० ॥ १७॥ इति०॥

ऋषभजिणंदसूं प्रातड़ीए

रत्नत्रयी आराधवा आग्री अधिक हो मनधारी डमेद् ॥ आगम ग्रर्थ विचारता गुण गणीधी हो बहु वरते ग्रामेद् ॥ सुरीव्याजी नित बंदिये ॥ १ ॥ पर परि-णामे ते टालवा अजुवालवा हो गुरु आतमध्म।।भव परणतिने टालवा, बलि लहिवाहो साधन शिवशर्म ॥ सूरी०॥२॥ द्रव्यभाव संजोगधी जे रहेवो हो, वलिनित्य अलेप ॥ स्याद्वाद् दीये देसना गुरु जागोहो नय गम निक्षेप ॥ सूरी० ॥३॥ आतम भाव सरूपने प्रका-से हो जे भानु वमान। स्वपर विवेचन श्रुतथकी तिण भ-क्तिहो श्रुननो बहुमान ॥ सूरी० ॥ ४ ॥ रुचीवंनसु श्रावको करवा हो बहु श्रुतनी भक्ति ॥ विनयवंत बहु-मानथी फोरवताहो निज आतम शक्ति ॥ सूरी० ॥ ५॥ च्यातम वाज़ोट उपरे समकीतनो हो अले स्वस्तिक पुण।। लली लुज्ञणा लेवंती मिथ्यामतनो हो ते करे चकचुर्ण ॥ सूरी० ॥ ६॥ जो सुणे आगम इसा विधे जनम सफल हो विल होवे तास॥ इहारे भव भवमा होजो गुऊ सहा-ये हो ज्ञान महोद्य वास॥ सूरी०॥७॥ समत उगनीसे तेइयासीये सुभभावेहो गुरु गुण पर कास । गहुली करी गुरु आगले म्हारी पुरीहो मनड़ेनी ग्रास ॥ सूरी०॥८॥ सरी कृपाचन्द्रसेवता भव भवनाहो पातिकडा जाय॥

कर्ठान कम सब काटीने ''महिमा''नेहो दीजो ज्ञान पसाय ॥ सुरी×बरजी हो नित्य वदिये ॥ ६ ॥

॥ गहूंछी ॥

सुरीभार महारारे। गच्छना प्रतिपालरे ॥ विनती मां महोहोजी ॥ मां मलीने गुरु संसारधी मुज नार, गु-गु घनेगरे कांभल्या तुम तणा ॥ तुम छो। गुक जान नणा भडार ॥ सुरी० ॥१॥ मक्त्यरदेश मनोहक ॥ चासु नगर मजार ॥ वाफना गोजे चावतर्था ॥ मेघरथ ऋल भान ॥ तुमछो गुरु अमरा मातके नद् ॥ सुरीश्वर० ॥२॥ युक्ति ग्रामृत उपदेशयी ॥ पाम्यो मन वैराग्य ॥ छ-तीसेकी सालमें ॥ एक संयम से मन लाग ॥ तुमे छो गुरु नीज कुलना उजमाल ॥ सुरीभ्वर० ॥ ३ ॥ पच महात्रन पालता ॥ सुमित गुह्मियतीपाल ॥ पच इन्द्रिकी वदासरी ॥ विचरे परमञ्जूषाल ॥ तुमछो गुरू संघमना प्रतीपाल ॥ सुरी० ॥ ४ ॥ उगनीमे बहोतरे ॥ सहैर षम्याह सोराय ॥ ग्राचारदा पढवी लही ॥ संघ मे रर्प न माय।। तुमञो गुरु मयनगा। प्रतीपारः॥ स्ररीभ्वरः॥। ५॥ देश विदेश में विचरता॥ चेला कीया गुण खाण ॥ पाटवी पाठक जय सुनि प्रवर्तक सागर जागा ॥ त्म छो। गुरु घणा जीवाना प्रतीपाल ॥ सुरी ४१र० ॥६॥ षाचक रायसागर बली ज्ञानतणा भंडार ॥ विनय करे

गुरुजी तणो सदगुण तणो अभ्यास ॥ तुममें गुरु गुण त्तणो नहीं पार ॥ सुरीश्वर० ॥७॥ विवेकसागरमें गुण घणा विवेकतणो नहीं पार ॥ उद्यसागर उद्यकरे ॥ हरख तपसी कहे बाच॥ तुमछो गुरु कठीन कम काटनार ∥ सुरोश्वा० ॥८॥ मितसागर वेयावची मंगल करें च्यभ्याम ॥ कीर्निमागर में गुण घणां ॥ वांचेसरस व-खान ॥ तुमारी गुरु शोभा न वरणी जाय ॥ सुरीश्वर० ॥ ६ ॥ खरतरगच्छमें दीपता कृपाचंन्द्रसुरि राय॥ जेसाणेगड आवीया करिया ग्यान डघार ॥ तुमछो गुरू मुक्तिनणा दातार ॥ सुरीश्वर० ॥ १० ॥ हाथजोड़ म-हीमा भणे॥ लुललुल शीस नमाय ॥ एक विनती खरधरो देजो मुक्ति बास ॥ तुमने तो गुरु किया घणा उपकार ॥ सुरीश्वर ॥ ११ ॥ समत उगनीसे तीयासीये भादव मास मनरंग गुरु गुण गाया भावसुर सफली हुइ उमंग करजो गुरु अमची सारसंभाल ॥ सुर्रिश्वर० श १२॥ इति

॥ गहूंळी ॥

राग- (गुरु देव मनावो)

धन भारय हमारा,सूरिजी पघारे बीकानेर में। चाल । पंच महावत सुधा पाले,पंचाश्रव को टाले । सत्योपदेश देते हैं गुरुजी, मिथ्पात्व को दूर निकाले जी ॥ १ ॥ पांच सुमित और तीन गुप्ति को, पालन में परवीन. चारित्र धर्म विवियुत पाले,जान ध्यान में लीनजी। २। प्रानाचार बावन को छोडे, गुरु है समता धारी। भ्रमर भिक्षा सुनि सुझर्ता लेवे,दोप वैयालीस टारीजी॥ ३॥ पांचो इन्द्रिय वस में करली, पाप कम से दुग, निर्मोही निर्लोभी गुरुजी, परिसह सहन में सुराजी ॥ ४॥ कंचन कामिनी के हैं त्यागी, ज्ञान्त दान्त वैरागी. इन गुरुवरके दर्शन करके क्रमति क्रिटिलता भागीजी ॥ ४॥ धर्म रूप नौका के ग्रुक्जी, ध्याप है खेवन हार, शुद्ध धर्म बतला कर स्वामी, करते देहा पारजी ॥ दं ॥ क्रपाचंद्रसृरिजी पधारे, प्रन्योदय हे भाई. सुखसागरजी व्याख्यान देते, मर्व जीव सुख टाईजी ॥७॥ क्षमा शोल संतापी है गुरु, धीर बीर गम्भीर, " अगरचद " कहे ये गुरुसेवो, जिम भांगे भव पीर जी ॥ ८ ॥ संवत उगगीसे साल प्वासी, वैत्र मास ग्रलजार । शुक्क पक्ष में गुरु गुण गाया, वरत्या जय जय कारजी ॥ ६ ॥ इति॥

गहुंछी

(मुनिवर को वंदी पाप निकंदी) गुरु है सुखकारी, पर उपकारी, तारण तरण झः हाज ।। टेर० ।। पंच महाबन ख्धा पाले, चारित्र नि-रतिचार, भ्रमर भिक्षा मुनि र्भती लेवे, दोप दया-लीस टार जी ॥ गुरु हैं ॥ १ ॥ मात विना परिवार को छोडा, जानी सगला असार, क्षमा शील वैरागी गुरुजी, जीते काम विकार जी ॥ गुरु हैं ॥ २ ॥ धर्म रूप नौका के जानों, आप ही खेवन हार, समद्धिर-खते हैं सब पर, ऐसे भाव उदार जी॥ गुरू हैं ॥३॥ छकाया की रक्षा करते, ग्रातम के समजान, बोली मधुर सुहावनी जी, घामृन के समानं जी ॥ गुरु हैं ॥ ४॥ समत्व भाव को छोड़ दिया है, लीनी समता घार, वावीस परिसह सहन में सूरा, हैं गुणना भंडारकी ॥ गुरु हैं।। ५।। महिमा वर्णन करुं में कितनी, नहीं कोई है पार, ज्ञान ध्यान में लीन रहे गुरु, भविजन तारण हार जी ॥ गुरु हैं ॥ ६॥ कृपाचंद्रजी नाम आ पका, सूरि कृपा के कोप, कुख सागर जी व्याख्यान देतें, जीता रागने रीष जी ॥ गुरु हैं ॥ ७ ॥ सेवक जाणी भोहे तारो, यह विनती गुरुराय। " ग्रागरचंद" कहे विनती सुन जो, सुक्ति राह बतायजी। गुरु हैं ॥८॥ संवत उगणीसे साल पचासी, द्वितीय सास सुखकार, गंगाशहर में आप प्धारे,बरत्या आनंद् कारजी। गुरु हैं।६।

गहूंली

राग- (सांवरो सुखदाई)

सृरिजी का द्दान पाया,आनंद मेरे अंगन भाया। धन्य कतार्थ प्राज जन्म है, प्राज हुवा मन चाबा, गुण के सागर गुरुजी देखी, हृद्य कमल विकसाया॥ गुरुजी सब को म्हलदाया। सुरिजी का दर्शन पाया।। १ ॥ देख क्वांत सुद्रा सरीश्वर की, रोम रोम इलसाया, क्या तारीफ करु गुरुवर की,देखन पाप नशाया, मिमेल हुई मेरी काया । सुरिजी का दुर्शन पाया ॥२॥ सत्योपदेश देते हे गुरुजी, सुन हीयड़ा हरखाया, धीर वीर भवि ये गर मेवो, भाव शह दिल लाया, प्रारू चरगो। में शीका नमाया। सुरिजी का ढर्शन पाया॥३॥ दो शुद्ध समितत चेही विनती,है मेरी गुरु राघा, पुण कर मेरी ये वानता, दो मेरे कर्म नशाया, के भव का भ्रमग मिटाया। सरिजी का दर्शन पाया।। ४ ॥ इन्द्रिय मन को यश करने का, दो मोहे ज्ञानयताया, "अगरचंद" भक्ति वम किश्चित, गुरुजी का गुरा गाया, देवो अ-ज्ञान मिटाया । सुरिजी का दुर्शन पाया ॥५॥ इति ॥

गहुंली

रागः— (देखी तोरे समवसरण की बहार) श्री श्री कृपाचन्द्र स्रिराज, देखी तोरी शान्त भुद्रा सुखकार ॥ टेर ॥ सेघराजजीके नन्दन कहिये, ग्रमरा मात उदार । गोत्र वाफग्गा उज्वल कियो, चा-मु ग्राम मझार ॥ देखी ॥१ ॥ संवत उन्नीसे तेर साल में जन्म दिवस सुखकार। छतीसे में दिक्षा लीनी, जैनधर्म जयकार ॥ देखी ॥ २॥ साल वहोत्तर में सूरि पद, बम्बह नगर मैझार। सह संघ मिल करके दीना, आनंद हर्ष अपार ॥ देखी ॥ ३ ॥ किया बहुत उपगार गुरुने, कह न सकूं लगार। जेसलमेर के ज्ञान भंडार का, आपने किया उद्धार ॥ देखी ॥ ४ ॥ देश देश ग्रामो ग्राम विचर के, किया धर्म प्रचार । उपधान तपं आदि गुरु ने करायो, फलोधी शहर मंझार ॥ देखी ॥ ५ ॥ द्रशम करने से मन परसन, होवे शान्त अपार। भविजन के तारण को मानो, यानसमा निर धार ॥ देखी ॥ ६ ॥ बीकानेर में छाप पधारे, शोभा धापरंपार । देशना अजन सोहमणी रे, मानो अमृत धार ॥ देखी ॥ ७ ॥ ज्ञासन के सम्राट गुरुजी, ज्ञास्त्र विशारद सार । खरतर गच्छ में हैं दिनमगी सम. ज्योति फौली संसार॥ देखी॥ 🗆 ॥ हुं असमर्थ गुरु गुण कहने, गुणानां भंडार । "अगरचंद" कहे भक्ति से सेवो, ज्यों होवे बेड़ा पार ॥ देखी ॥ ९ ॥

गहूंली

राग:-- (मुबारिक हो मुबारिक हो)

धन्य गुरु राजजी आये, मुवारक हो मुवारक हो॥ धन्य दिन आज है मेरा, गुरुजी दर्शन किया तेरा। मिटा भव दुःख तत्मा फेरा, गुवारक हो मुवारक हो॥ १॥ गुरू हें जान के दाता, दर्श से दुःख टल जाता। मिले हिय शान्ति अरु शाता, मुवारक हो मुवारक हो॥ २॥ शास्त्र के है विशारद आप, सेवे से टलता सन संताप। नमन से दुर होते पाप, मुवारक हो मुवारक हो॥ ३॥ बम्बड में पाये पद सुरि, गच्छ आधार धर्म धृरि। जान वतलाते है भूरि, मुवारक हो मुवारक हो॥ ४॥ " अगर " इक विनती करता, चरयो का ध्यान हिय धरता। मिटे भव अमया दुःख हरता, मुवारक हो मुवारक हो॥ ५॥

राग:- (जिन धर्म का डंका खालम में)

रागः (। जन यम का डका आलम म) गुम्ताज की सेव करो सवही, जिम भव दु खसे छुटकारा हो, जिन मत्गुरु के भव अटवी से, पहुचावे कीन किनारा हो । १ । जो सत्गुरु की सेवा करते, वे पुन्य कोप निखय भरते, अज्ञान को हियमे वे हरते, शुद्ध झान का हिये उजारा हो । २ । जो नैया पड़ी है मक्त धारे, विन गुरु कीन खेवनहारे, अब सेव करो भाइ सारे, जिम नैया भव से पारा हो। ३। ये स्वार्ध का संसार महा, इसमें जो तृने खुख चहा। नहीं साथ है चाले कोइ च्रहा, पितु मातु खुता या दारा हो। ४। मित्थात्व को दूर हदाते हैं ग्रुद्ध समिकत को द्रसाते हैं, जिन धम का सार बताते हैं, छिब उत्तम भाव उदारा हो। ४। ग्रुद्ध भम देशना देते हैं, भव बीच नाव को खेते हैं, जो इन गुरु वर को सेते हें, उनका भव से नि-स्तारा हो। ६। कहे " अगर " सुनो विनती मोरी मैं सरण बही गुरु वर तोरी, कृपाचन्द्रसुरिजी धमी-धोरी, मेरा कर्मी से निपटारा हो। ७। गुरुराज०।।

॥ गहूंली ॥

(राग:- गुरु द्त्त जती शुद्ध राधु व्रती)

कृपाचन्द्रसूरि, गुण कोष भूरि, अब सागर से पार लंघादो सूरि। आप पंच महाव्रत के धारी, हिय से ममता को दियाटारी, टारी विषय वासना जो है बुरी, भव सागर से पार लंघादो सूरि। १। छतीसे गुणे करी गुरु सोहे, अविजन के मन को ले मोहे, गच्छ स्थंभ आधार है धर्म धुरी, अब सागर से पार लंघादो सूरि। २। व्याखान मानो अमृत धारा, मोहे भविजन आनदकारा,जानामृत मानो भरी कोठरी,भव सागर से पार लंघादो स्ररि।३। न्याय तर्के झादि शास्त्र सारे जानत है गुरुवर सुखकारे, धन भाग्य आये बीकानेर पुरी, भव सागर से पार लंघादो सुरि । ४। कोइ पुन्य उदय गुरुराज मिले, आज सकल मनोर्ध मेरे फले । धन भाग्य दशा मेरी सुधरी,भव सागर से पार लघादो हरि। ५। भमा चार गति में दु ख सहे, वहतो गुरुवर नहीं जाय कहे, क्रवा कोप तारो मोहे क्रवाकरी, भव सागर से पार लघादो सृरि । ६। कहे " अगर " सुनो विनती मोरी, में सरण ग्रही गुरुवर तोरी.जिावपन्ध बतावो करोन देरी. भव सागर-से पार लघादी स्वरि । ७ ।

॥ गहंली ॥

[गजल]

हेल गुरु राज को मेरे, हिये आनंद छाया है ॥ भमा गति चार के माहि, ऐसे गुरुजी मिले नाहि॥ सता दुरा मेंने मदाही, अब मद्गुरु को पाया है॥१॥ गुरु ह जान के घारी, हिये की ममता को मारी॥ काम की यासना टारी, पाप से मन हटाया है॥ २॥ राखते भाव सम सप पर, अञानित दिलकी ली है हर॥ आतम गुण को विकासित कर, ध्यान में मन लगाया है।। ३॥ आश्रव के मार्ग को रोका, कर्म को मार्ग बिच टोका॥ बना के धर्म की नोका, भविकोदुः खसे से छुडाया है॥ ४॥ सुनो इक विनती मेरी, मिटे भव अमण की फेरी॥ मुक्ति सुख में नही देरी, "अगर" सरणे में आया है॥ ४॥

ा। गहुंली ॥

राग— (बतावो मुक्ति डगर शिवगाभी)

बतावो मुक्ति की राह, गुरु ज्ञानी। १। भव जल को नहीं थाह गुरुजी, फिरतो फिरतो हारग्रो। २। मोह भंवर बिच मांही पड़त है, चक्कर बहुत लगायो। २। मिथ्यात्व रूपी आंधी चली है, समय डूबन को आ-यो। ३। तुम बिन नहीं कोइ मेरो सहाइ, तुम्हारी सरण में आयो। ४। "अगर" कहे कृपाचन्द्र सुरिजी, दो शिवसुख सुखदायो। ४। बतावो॥ इति

॥ गहुंली ॥

राग- (राखुं रे हमारे घट में)

कृपास्रि नाम तेरा, राखं सदा हृद्य में ॥ टेर ॥ तुम नाम खुखकारी, भय शोक देवे टारी, सुख देत हैं ये भारी ॥ राखं ०।१। पालत है पांच समिती,हृय गई दूर कुमित, बध गई आत्म क्वाक्ति ॥राखुं०२॥ तुम पंचाचार पालो, भृमि निरख के चालो, दृषण सभी
को टालो ॥ राखुं ॥३॥ पद सरि मन भाया, छतीस
गुण सुहाया, यतना करत छ:काया ॥ राखुं ॥४॥ मद्
मोह लोभ टारी, उपदेश देवो भारी, भवि जीव देते
तारी ॥ राखु ॥५॥ गुण तुमरे अपारा, गिण्ता न आये
न पारा, तुम दर्श सुलकारा ॥ राखुं ॥६॥ मेरी है एक
विनती, निश्चल रहे ये भिक्त, कहे "झगर" पाऊं
मुक्ति॥ राखुं ॥ ७॥

॥ गहूंळी ॥

राग— (में आयो तेरे चासरे)

में सरण ग्रही अब ताहरी, कृपाचन्द्र स्रिराया॥ चार गित में सही वेदना, भ्रमन्त काल विताया। वितायारे विताया। अक लख चौरामी योनि में, दुःख बहुत सा पाया॥ में ॥१॥ आतम गुणों को कर आच्छादित, पाप में मोहे रमाया। रमायारे रमाया। क्या कहुं दुःख जो दिये कर्माने, काल अनन्त कलाया॥ में ॥२॥ चार कपायादिक ने मुझ को, गुरुजी बहुत सताया। सन्ताया रे सताया। रक्षो रात दिवस में पापमें, धम न पलक सहाया॥ में ॥३॥ रहाो मिध्यात्व में पाइ न सम

कित,को कभी भी गुरु। राघा राया रे राघा। कुगुरु कुरेब कुधर्म को, मैंने सत्य ठहराया॥ में ॥ ४॥ पुन्य प्रबल के कारण मैंने, खाज छापको पाया। पायार पाया। कहे " अगर " एक मोरी विनती, दो भव दुःख से छुड़ाया॥ ५॥ इति

॥ गहुंछी ॥

राग- (होह आनंद बहाररे)वसंत

कृताचन्द्र सहिरायरे, कोई पुन्य से आये ॥ देर ॥ शान्त सूरत सोहामणी रे. आवे सह ने दायरे ॥ कोई ॥ १ ॥ पंच महाव्रत के हैं धारी, रक्षा करे छड-काय रे ॥ कोई ॥ २ ॥ आठार सहस कीलांगना मोरी देख्या पाप पुलायरे ॥ कोई ॥ ३ ॥ धन्य भाग्य ऐसे गुरुजी पधारे, गुरु संगम सुख दायरे ॥ कोई ॥ ४ ॥ धन्य कृतार्थ आज जन्म है, देख्या में गुरु राय रे ॥ कोई ॥ ४ ॥ कोई ॥ ४ ॥ जुद्ध समितत देजो गुरु हम को, एहीज मन की चाह रे ॥ कोई ॥ ६ ॥ अनेक गुणों के धारक गुरुजी " अगर " किन्चित गुणगाय रे ॥ कोई ॥ आ

गहुंली

रागः (मोहे गिरि की डगरिया) गुरुजी तत्व का प्याला पिलादो मुझे, भव भ्रमण में ग्रायती वर्चाटी मुझे ॥ टेर ॥ चारगतिमें घुमते, वीता अनन्ता काल है, नरक और निगोदमें तो. इख सहा विकरालंह, भव के दुख से अवनो छुडादो मुके ॥ १॥ मिथ्यान्वमें ह फंमरहा, शुद्ध घर्मको जानु नहीं, कुन्य और अकृत्य को मै, कुछ मा पहिचानु नहीं, गुद्ध समकित का राह दिखादो मुझे ॥ २ ॥ अवगुणी हु में गुन्जी, त्याप गुण भंडारहे, धर्मनैया के खंबैया, गच्छ के मिगगार्रह, पहा सरण में अपनी धचालो मुक्ते ॥ ३ ॥ भन्न मनुद्र प्रवाहमें, नैया पही मझघार हैं. कठिन नाना है गुरु, अब आप खेवन हार है, प्रधार जल मे पार-लगादो सुके ॥ ४॥ ^{(१} अगर ²² कहता है 'गुरु, विनति मेरी सुन लीजिये, पहा है में शरणमें, मरला हुवे सो कीलीये,मुक्तिं महल में खामी पहचाटो मुझे ॥५॥ इति ॥

॥ गहली ॥

राग:- (धन धन वो जगमे नरनार)

्षन्यभाग्य आये गुम्साय, सत्य जिञ्जा के देनेवार्ले ॥ देर ॥ गुन्यसे आये हें गुम्साज, घन्य दिन घ्रानंदको हें आज, जल्मे तस्ने को जहाज, तमे मुनि मुक्ति पहुनानवारुं ॥ घन्य ॥ १॥ देते घर्म देशनासार, क रते भविजनका उद्घार, भवमे कर्यंते हैं पार, धर्मका सार दिखाने वाले॥ धन्य॥ २॥ रखते मय पर हैं मन भाव, जातम सम गिनते छकाय, गुरु हैं सन जीव सुखदाय, पग पग जो के चलने वाले॥ धन्य॥३॥ पाले कही गृहितीन, समिनी को पालन में प्रवीन, रहते जान ध्यान में लीन, मुक्ति से नेह लगाने वाले॥ धन्य॥ ४॥ कृपहिछ गुरु द्याल, रखके लीजो विनरी संमाल, '' जागर '' कहे दीजो दु:खंस टाल, भवका अमण मिटाने वाले॥ धन्य॥ ६॥ ६॥ हित॥

॥ गहुंछी ॥

रागः -(इंग्य बात साची जगमाहे)

कृताचन्द्र सुरिजी पथारया, सेव करा भाइ मारें। देर । पंच महाव्रत के हैं धारी, पाप की से हैं न्यारें क्षमा क्षांन्त्यादि गुगा करी शोसे, गगन मंडल में ज्यां तारे । १ । पांच सुमित और तीन गुप्ति की; मडी रीतें गुरू पाले, छकाया की रक्षा करते, साधु धर्मको उज्जावाले ॥ कृता० । २ । मोहमंथी न गरी के भीतर, या वार्यपद्र शोभित कीना, सर्व संघ में मंगल वरत्यान साल वहीत्तर मन भीना ॥ कृता० । ३ । " प्रगार र कहत है ज्याप गुरुजी, धर्मनैया खेवनहारे, सेवी सुरव अनुभव रस पावा, अष्ट की से हो न्यारे। कृता० । ४।

संवत उनीसे साल पच्यासी, जेठम्हिने शुभवारे, शुक्कचनुर्थी सात मुनि संग, बीकानेर में गुरु भाये॥ कृपाः । १ । इति॥ १(बम्बह)

॥ गहूंछी ॥

राग:- [चालो हूडन को सडेकी] ें

सुरिजी को बन्दों रे सब मिल के, पुरुष से आये है गुरुराय [पु०] भन्य जीवों को देवे देशना, आवे सहुरेदाय ॥ (टेर) पु॰॥पुन्योदय से च्याप पधारे, पार कर्म से हैं गुरु न्यारे, सकल जीव सुखदाय ॥१॥ पु० प्रवाहावृत के हैं धारी, विषय वासना दुरनिकारी, सेव्यां पाप पुलाय ॥ २ ॥ पु० ॥ पांची उन्हिया बस में करली, मन में समता को है धरली, ममता दीनी नमाय ॥ ३ ॥ पु० ॥ करुणा के सागर हैं भारी, भन्य जीवों को देते तारी, यचाते छ काय ॥ ४ ॥ प्र० ॥ घट सेती धाज्ञान नसाया,ज्ञान उजाला हिय में छाया, मन है ध्यान के मांच ॥ ५ ॥ पु० ॥ गुरु सेवन ते ज्ञान मिनत हैं, पाप कमें से दूर टलत है, मुक्ति नो एह उपाय ॥ ६ ॥ प्र० ॥ " क्रगर " कहे गुरु सेंबो भाई. राद्ध भाव रिये में लाई, गुणगाबो वितलाय ॥७॥ पुर्वा।

॥ गहंली ॥

राग:- (जावो जाने नेम पिया)

तारों तारों कृपास्ति, अरजी लो मानीरें। तारां।
तुम्हरी सरण में आयों, हं ग्रम ज्ञानीरें ॥ देर ॥ चार
गति माहें भग्यों, शुद्ध शुण नवी रम्यों, भग्यों भन्न
सागर, अधाह जाको पानीरें ॥ १ ॥ तारों। ॥ दुःख में
चहुत सच्चों, सो तो नहीं जायू कहुयों, अनंत काल
वित्यों, समकित न पिछानीरें ॥ २ ॥ तारों। ॥ महा
शाञ्च कम् आठ, पीछे फिरे लिये लाठ, छोडे नहीं लार
मेरो, करे खेंचा तानीरें ॥ ३ ॥ तारों। ॥ पुन्य योग
द्रिश पायों, हिय में आगंद छायों, मीठी अमृत सी
मानों, लागे तोरी बानीरें ॥ ४ ॥ तारों। ॥ समकित
शुद्ध पाऊं, कह अगर येही चाहं, जन्म मरण छुटे,
चहं वित्य पटराणोरे ॥ ४ ॥ तारों। ॥ ईति

रण कार है 🤔 ।। गहुंली ॥

तारण तरण है। ऐने। पंच महावत सुधापाले, अशुभ कर्म को दूर हरण ॥ ऐने ॥ १ ॥ अंताचार वावन को छोड़े, निज आतम को निमल करण ॥ ऐने ॥ २ ॥ बाबीस प्रिसह सहे गुरु ज्ञानी, यति धर्म दश भेद धरण ॥ ऐसे ॥ ३ ॥ ब्यालीस दाँष टाल आहार लेवे; शुद्ध संयम का साधन करण ॥ एमे ॥ ४॥ बारह विध्य नप करण में सुरा, पाप मैल को दूर करण ॥ऐसे॥ ७ ॥ कास्त्र विभारत है गुरु ज्ञाना, भव्य जीव के ता-रण तरण ॥ ऐसे ॥ ६ ॥ '' ज्यारचंद '' वहे ये गुरु सेवो, ज्यु मिट जावे जन्म मरण ॥ ऐसे ॥ ७ ॥ पाप से नियुत, धर्म में प्रवृत्त, शिवं रमणी को वेर्ग वरण ॥ ऐसे ॥ ८ ॥

॥ गहूंऌी्॥

भवितुम देखोरे नैना, कमृत सा सुण होरे वैना ॥ ऋावडीं ॥ दोहा- पच म्हाबन पालते, पाची स-मिती समेत । तीन गुंसि गुपते सदा, अंजर अमर पद हेत ॥ शींल का पहना है गहना, परिसंह वाबीस को सहना ॥ भवि तुम० ॥ १ ॥ दोहा- पद् दर्शन नाजाण है, स्वाद्वाद् परवीन । ज्ञाने उदाने चारित्र ये, रतन त्याराधेतीन ॥ निरंतर ध्यान मंग्नरहना,सभी जीवी का भला चहना ॥ भवि तुम् ।। २॥ दीहा:-तत्व रमणता में २मे, निरखे चात्म खंदप । क्रपा कोष भवि जीव को, पहना रखें भवे कृषं ी पैरों से पेटल ही बहुना, संभी की हिल को मार्ग कहना ॥ भवि तुम् ।। है ॥ दोहा:- उन्नीस चौरामियं, वसंत पंचमी दिन । पुनये आया फलाधी से, मह जन मन प्रमन्न ॥ हरिषत हो योले इम वैना, चार्तुमास यहाँही रहना ॥ भवि तुम० ॥ ४ ॥ दोहा:- कृपाचनद्र सृरि नाम है, संग मुनि है सात । भगवती वांचे स्वर्धां कीना चार्तुमास ॥ भक्ति करते जो नर सेणा, "अगर" निस दिन रहते चैना ॥ भवि तुम० ॥ ४ ॥ इति

॥ गहूंछी ॥

(जिनवाणी)

भविजन सुणजो रे जिन ज्यागमनी वाणी,ए वाणी छै मुक्ति निसाणी ॥ ग्रा० ॥ राग देव करी रहित जिने-श्वर, इस वाणी के भाषक, अर्थे श्री जिनदेव कही है, स्त्रे रची गण धारक ॥ भविजन० ॥ १ ॥ स्याद वाद् नय भग अनोपम, निक्षेपादि सुहाइ, सर्वमत नो समावेश इसी में, छोपी न चलसके को हा। भविजन० ॥ २॥ उत्सर्ग चारु चापवाद मार्ग है, गृढ़ रहस्य है इसका, समको गीतार्थ गुरु पासे, मिटे दु:ख जन्म मरण का ॥ भविजन० ॥ ३ ॥ इक चिते सुणजो भवि भावे, पाप मैल दे धोइ, सर्दहजो ज्यों कही तेमही. शंका न धरजो कोइ॥ भविजन०॥ ४॥ शंका पुछ निवारण करज़ि भरल रा-खड्यों इसप भविजनः॥

१ ॥ प्रारंभ से सुनजो सुत्रको, आखिर तक चित-लाइ, घन स्थिर करी भाव विमल धरी, सुगाजो कान लगाइ ॥ भविजन० ॥ ई॥ नयं एकांत न ताणजो कोइ, स्पाद् बाद् सर्दहलो, " अगरबंद " कहे जिन वाणी पर, पक्की अद्धा रखजो ॥ भविजन० ॥ ७॥ इति

॥ गहुँली ॥ (पर्युमण की) रागः- (सूण चंदाजी)

अवि भाव धरी, पर्व पर्य्युसण ब्राराधो व्यानंद सु। ए पर्व अलो, है सह में सिरटार,चिन्तामणी रह ज्यू ।। भ्रांकडी ॥ ए पर्व नदिम्बर सुर जावे,करे ग्राटाइ म-होत्स्वशुभ भावे,बो भाग भविजन यहाँ लावे ॥भवि० ॥ १ ॥ अमारी पद्दहो बजवाहजे, जिनराज पुजन वि-धिसुं कीजे, बलि दान सुपात्र ने दीजे ॥ भवि० ॥२॥ करप सञ्जनी भक्ति करो चंगे, राज्ञि जोगो चादि मन रंगे, सु सूत्रगो इक चित उमगे॥ भवि०॥ ३॥ असु जनम महोत्सव शुभ भावे, जिन चरित्र सुणो णतिक जावे,विल मुक्ति पूरी वासो धावे ॥ भवि०॥ ४ ॥ फिरे नित्य प्रवाशो गुरु संगे, संबत्सरी पर्डिकमणो रगे. करो क्षमत खानणा मन चेंगे॥ भवि०॥ ५॥ स्वामी वत्मल भाटि कीजे, शुद्ध भाव घरी द्रव्य खरचीजे, पर्व सेवीने लाहो लीजे ॥ भवि०-॥ ६ ॥ पंचा श्रवका दूरे टारी, पचग्वागा ठाक्ति साम घारी, कहे "अगर" पर्व सेवा इकतारी ॥ भवि० ॥ ७॥ इति

॥ गहूंळी॥ (पर्स्यूसणकी)

राग:- (नेमर्जा को जानवनी भारी)

पर्ध्युक्षण पर्व है जयकारी, सेवतां होवें भव पारी ॥ देर ॥ पर्व ए छै सहु में सिरदार, सेव्या वरते ज-यजय कार। लोकिक लोकोत्तर मन धार, पर्व सुख-दाई सेवा इकतार ॥ दोहा:- ए पर्व ग्राया सुरमर्भा, जाय नंदिश्वर द्वाप । ऋठाइ महोत्मव रंगसुं, करे प्रसु ने समीप ।। भवि तिम करो यहाँ सुखकारा ॥ पर्य्यू० ॥ १॥ अमारी पड़हो वजवाओं, प्रभु पूजा को मन लावो । स्वामी वत्सल करबा उमावो; द्रव्य खर्ची ने लहं लावो ॥ दोहा:- अठम तपं करं भावसुं, देवं वंदन निर धार । टंको टंक करो पिडिंकमणो, गुरु भक्ति सुविचार ॥ पूजा करो प्रभु नी हितकारी ॥ पर्ध्यू० ॥ २॥ कल्प सूत्र भक्ति शुभ भाव, रात्रि जोगो मन उछाव । वेर इकवीस सुणों चितलाय, रहोन भव में कहे जिनराव ॥ दोहा:- चरित्रं सुशी जिनराज नो, क्राणी उज्वल भाव। जन्म महोत्सव भाव सुं, करो अधिक उच्छांच ॥ भाव शुद्ध राखो निरधारी॥ पर्य्यू० निवार बहाचर्य पालो भवि

निरधार । दान सुपात्र ने दो सार, तपखा शक्ति सारू धार ॥ दोहा:- प्रतिक्रमण संवत्सरी, करो भविक शुभ भाव। " चागर " कहे सब जीवसुं, क्षमत क्षामणा चाह ॥ पर्व सेवो मुक्ति दातारी ॥ पर्य्यु० ॥४॥ इति

गहंली

रागः- (प्यारं प्यारं नेम सलुना)

गावो गावो हिल मिल स्वही, गुरू गुण को चित लाहरे। पंच महावत के हे धारी, धर्म प्रवर्तक गुरू सुलकारी, सेवो मन गृद्ध लाईरे ॥ गावो ॥१॥ मनुष्य योनि में दुष्कर खाया, आर्थ क्षेत्र बत्तम कुल पाया, जैनधर्म सुखदाई रे ॥ गावो ॥२॥कैसा अवसर घाच्छा पाया, वीकानेर में सरिजी आया, नमी चरगा सिर-नाइरे ॥ गावो ॥३॥ क्षात्यांदि दका भेदे पाले,घति धर्म को गुरु उजवाले,कृपाचन्द्र सृरिराइ रे ॥ गावो ॥ ४ ॥ आदा रखो जो मुक्ति केरी,धर्म कार्ध में मत करो देरी, देरी महा इख दाइरे ॥ गावो ॥ ५ ॥ " भवरलाल " कहे ये गुरुष्यावो, शिवनारी को तुम अपनाचो, एक्य भाव दिल्लाहरे ॥ गावो ॥ ६॥

॥ गहूंळी ॥

कृषाचन्द्र सुरिजी, अवके चौमासो वीकानेर में ॥टेर॥

दोष बवालीस ब्याहार के टालत, गुण छत्तीस हैं धारी । श्रीर बीर गंभीर सहत है,कठिन परिसह भारी ॥२॥ संपम शस्त्र धार कर मुनिवर, मान मोह दिये मारी। काम कोध वस किये शक्ति से, कुमति कदाशह टारी ॥ ३ ॥ तप जप ज्ञान ध्वान फल डारी,झूम रही मत-बारी। तोड़न वाले हं अझानी, रीति कही तुम सारी ॥ ४ ॥ दान ध्यान करते है नर पर, क्रोध मान सिर थारी। क्रोध मान होय दूर हिये से, कहो ऐसा मंत्र विचारी || १ ॥ हम अज्ञान और अविवेकी, ग्रत्या-चारी अनारी। आप हो चतुर सुघर मेरे मुनिवर, भव सागर दो टारी ॥ ई ॥ यती धर्म साथक करने को. स्वयं ही दिक्षा धारी । ज्ञानवान मुनि गुर्ज्जर पहुंचे, जैन ज्योति पसारी ॥ ७ ॥ उन्नीसे चौरासी सम्पत्, माघ मास शुभ वारी । मुनि वर गुण गाये शुद्ध मन से, भक्ति हिय विच घारी ॥ ८ ॥ आत्म सिद्धि विन मुक्ति रिद्धि की, पावत नहीं नर नारी। ' ज्ञान " कहे दो आत्म साघना, जैन घर्म जय कारी ॥ ९ ॥ इति

॥ गहुँछी ॥

राग:- (धानी पला श्री तिताला) भाज जगे जो भाग्य हमारे, मुनिवर भ्राप

पधारे हैं॥ अ॰॥ सहन- शील मुद्रा शुभ कारी, सदुल बचन बोले मनुहारी। क्रोध मोह मद् लोभ को जारी, पाप तिमिर से न्यारे हैं।। १॥ सतर प्रकार संयम सुःखकारी, सुमित गुप्ति पाले हद् भारी। पंच महात्रत हिय बिच धारी, दोष बयालीस टारे हैं॥२॥ ञ्राचारज गुगा छतीस धारी, स्ररि पद पाये सु:खकारी । ज्ञान वंत आराम विस्तारी, शास्त्र मधन अतवारे हैं ॥ ३ ॥ दें उपदेश शास्त्र बानुसारी, तर्क –तत्व – नय नीति विचारी। भवि जन को लागत अति प्यारी ज्यो असृत की धारे हैं ॥ ४ ॥ आये बीकानेर मंझारी कुर्वाचन्द्र कृषा करी भारी। संग शिष्य गुणि जन हित कारी, जैन जगत के सितारे हैं ॥ ५ ॥ (दोहा):-शुरु दीवो गुरु देवता, गुरु बिन घोर अन्धार । जे गुरु वाणी नहीं खुणी, ते भटक फिरा सन्सार ॥ ६॥ चौ-रासी संवत् छु:ख कारी,माघ मास ऋतु वसन्त प्यारी । स्वागत को धाये नर नारी, बामन शक्तिकर धारे हैं॥ ७॥, " ज्ञान " कहे आशा हिप धारी, जैन जाति उन्नति करी सारी। फूट भगा दो लब्धि पसारी - शब्द चरण में डारे है ॥ ८॥ इति

॥ गईंठा ॥

राग:- (गजल ताल धमाल)

विना सरि राज के देखे, नहीं दिल को करारी हैं ॥ देर ॥ जगत के विच में आया, मनुज की देह को पाकर, फसाया जाल माया के, धाद प्रभु की विसारी है ॥ विना ॥ १ ॥ सकल संसार के अंदर, नहीं हितकार है कोइ, नजर फैलाय कर देखा, सभी मतलब की घारी है ॥ विना ॥२॥ किये जय नेम तप युजन, फिरा तीर्ध के धामों में, न जाना रूप प्रभुजीका, उमर सारी गुजारी हे ॥ विना ॥ ३ ॥ फटे खाजान का पड़दा, कटे सब कर्म के बंधन, कुपा स्टिर जैसे संतन का, समागम मोक्ष कारी है ॥ विना ॥ ४ ॥ इनि

॥ गहुँछा ॥

राग!- (गजल ताल धमाल)

वता दो मोक्ष का मांग, मृस्जि शरण में तेरी ॥देर ॥ जगत के विच में नाना, किसम के पंच हें भारी, मृत्ति हैं क्या ख्रापनी, मदकते हो गयी देरी ॥ पता० ॥ १ ॥ कोइ मृतिं के पूजन को, पतावे होम करने को, कोइ पम्रा के दरशन को, किराते हे सदा फेरी ॥ यता०॥ २ ॥ कितावे धर्म चर्चा की हजारो, बांच कर

देखी, मिटा शंसय नहीं मन का, कक्क जंजाल में वेरी ॥ बता० ॥ ३ ॥ सकल दुनिया में है पूरण, सुना में नाम सहिजनका, छुडादो जन्म बंधन से, कहे " चंद फतेह " करजोरि ॥ बता० ॥ ४ ॥ हित

॥ गहुंली ॥

राग:- (वरहंस ताल धमाल)

आज सृरि सुनिये चर्ज हमारी, मेंतो आयो हूं सरण तिहारी ॥ देर ॥ बाळ पणो सब खेळ गमायो, तरूण कियो वश नारी। गृह कुटम्य के पोषन कारण, परचर हुयो भिखारी । ज्ञाज ॥ १ ॥ में जानत ये बान्धव मेरे, स्वार्थ की स्व यारी। धन से हीन मयो में जवही, सबको लाग्यो गारी ॥ च्याज ॥२ ॥ च्याया था जिस काम करण को, सकी याद विसारी। झाकर माया जाल में फर्यो, तकलन की नहीं बारी ॥ झाज ॥ ३ ॥ भव सागर में इवत हूं अब, लीजिये वेग उखारी। "चंद फतेह " पै करूणा कीजो, तुम धिन को हितकारी ॥ ज्ञाज ॥ ३॥ इति

॥ गहूंळी ॥

राग:- गजिष् (ताल धमाल) अगर है ज्ञान को पाना,तो स्वरि की जा सर्ग भाइ ॥ देर ॥ जटा सिर पे रखाने से, भरम तन में रमाने से, सदा फल फुल खाने से, कभी नहीं मोक्ष को पाइ ॥ क० ॥ १ ॥ वने मृरत पुजारी है, तीथ या- आ पिपारी है, करे जत नेम भारी हैं भर्म मन का मिटा नहीं ॥ घ० ॥ २ ॥ कोटि स्रज शिवातारा, करे परकाश मिल सारा, बिना गुरु घोर अन्धारा, नप्रभु का रूप दरसाइ ॥ घ० ॥ ३ ॥ प्रभु समजान सुरिदेवा, लगा तन मन करो सेवा, " फतेह " को परम पद मेवा, मिले भव बंध कट जाइ ॥ अ० ॥ ॥ ॥

ंगहूंळी

(राग:- गजल कव्वाली)

ऐसी करी 'गुरु देव ह्या, मेरा मोह का बंधन तोड़ '
दिया ॥ टेर ॥ दीड़रहा दिन रात सदा, जग के सब कार व्यवहारनमें, स्वमें सम विन्व दिखाय मुक्ते, मेरे बंधल चितको मोड़ दिया ॥ एसी ॥ १ ॥ कोइ होष गयोदा महेदा रटे, कोइ पूजत पीर पेगम्बर को, सब पंप ग्रंथ छुडाकर के, श्री सेडंजे महातम बताय दिया ॥ ऐसी ॥ २ ॥ कोड हुटत है मधुरा नगरी, कोइ जाय बनारस बास करे,जब व्यापक रूप पिछान लिया, सब अमे का शंडा फोड़ दिया ॥ ऐसी ॥ ३ ॥ कीन

कर गुरु देव की भेट, न वस्तु दिखे तिहु लोक न में, कृषा स्वरि समान न होय कभी, धन माणक लाख करोड़ दिया॥ ऐसी ॥ ४॥ इति

गहूंली

ं राग:- (ताल चलित हुमरी)

मेरा गुरु मुक्ते दिखलादोरे, कोइ आन के आज मिलादोरे, ॥ टेर ॥ में विरहिण नित रहु उदासी, गुरु मिल न की जान विद्यासी, प्रेमका नीर विलादोरे ॥ मेरागुरु॰ ॥१॥ वर्षा विनचातक दुःख पावे, नीरं विना मछली तरसावे। हाल मेरा बतलादोरे॥ मेरा गुरु। २। चरगा कमल की दासी तेरी,कृपासूरि चर्जसुन मेरी, भव नाटक से छुड़ादोरे ॥ मेरा गुरु० ॥३॥ में गुगा-हीन कंपट छलंभरिया, कैसेमुक्त पर होय नजरिया, "वंद फर्तेह " को दर्शदिलादोरे ॥ मैरा गुरू ॥ ॥ ॥ श्रीमान् सुरिवरो महामुनि कृपाचन्द्रः कलो धर्म राट्। प्राप्ती जैसलमेरनारिन नगरे हमां पावयन स्थिपता॥ संसत्तेनवरापरोप कृतये जीणीगमोद्धारिणी । वर्षे वहि-वसुग्रहेन्द्रगणिते ग्रन्थस्तयालेखितः॥१॥

॥ गहुंछी॥

सहियर चालो सुरिश्वर पास, ज्ञान को सीखना जी ॥ एतो सुरिश्वरजी का उपगार, कभी नहीं भूलना जी ॥ सहियर ॥ १ ॥ एतो स्रिश्वर है वैरागी, जि-नकी सबम स लब लागी । एतां तपस्या से हुवे रागी, मोक्ष को देखना जी ॥ सहियर ॥ २ ॥ सृरिश्वर ज्ञान का पेड लगाया, एतो दया की डाले छाया । एती शियल सुरंग लगाय, भोक्ष को देखनाजी ॥ सहियर ॥ ३ ॥ सुरिश्वर मनावन ने काहे, ऐतो तेबीसन द्रै द्यांडे । पीछे चातुभव जाग्रत होय, मोचा को देखना जी ॥ सहिषर ॥ ४ ॥ सृरिन्वर विवेक दीवो करे उन जवाली, एती काहे मित्यात्व अधकारी । एती पामे ध्यानंड भर पूर मोक्ष को देखनाजी । सहियर ॥ ५॥ सुरिश्वर सुमित महेली थी खेले,एनां हुर्गति ने दुरी मेले। एतो जिन रमणी सु खेले, मोक्ष का देखनाजी ॥ सहियर ॥ ई॥ सृतिभ्वर युक्ति अमृत गुरू पट धारी, एटी क्रवाचंद्र सुरिमा उपगारी। एटी जय सागर सा जपकारी,मुक्ति को देखना जी ॥ सहियर ॥ ७ ॥ मृ-स्थिर बहुन किया उपगार, उन्हों की कीति खपरंपार। पतो पर दर्शन के जाग, मोच्न को देखनाजी ॥ सहि- वर ॥ ८॥ एतो संवत् एक्रीसे चौरासी के साल, एतो निगसर मास मनुहार । एतो " महिमा शी " करे भरदास, मोक्ष का देखनाजी ॥ सहियर॥ ६॥

॥ यहूंकी॥

राग:- (गुम हें सुखकारी)

मुनिराक्ष को चंद्रो, पाप निकंद्रो, आतम के हित काज ॥ टेर ॥ देशदेश में आप पधारे, सव जन के हितकार । देशना देते खूझ सुनाते नरते पर उपगार हो ॥ सुनिराज ॥१॥ आश्रव वारी कर्म निवारी, सु-नित के दातार। दोष वयालीस निसदिन टाली, छेते शुद्ध बाहार ॥ हो मुनिराज ॥ २ ॥ माया को छोड़ी ममता को तोड़ी, देते ज्ञान अपार । भव जल से मोहे पार लंघावो, करो गुरु मोरी सार हो ॥ सुनिराज ॥ ॥ है॥ गुरु वर जैसा जग में नहीं रे अवरन को आधार । दो गुरु वर मुसको सहीरे, अवगा ज्ञान हि-तकार ॥ हो मुनिराज ॥ ४ ॥ इत्यादि गुणे करी है, महिमा चापरंपार। कीर्ति जग में सुखकरी रे तीन लोक मनुहार ॥ हो मुनिराज ॥ ५॥ फूट मिटीवी झगड़ा भंगावो, देश का करोनी उद्धार । जैन घर्म का नाम दीपावो, विद्या का करोनी प्रचार ॥ हो मुनिराज

॥ ६ ॥ अन्य जीव को तारो सुरिजी, कृषाचन्द्र महाराजा अर्जा 'चंद्र मृल की '' सुनिये, महर करीने खाज ॥ हो सुनिराज ॥ आ सम्बत् चर्ता ते पन्यासीये रे, वैसासमास मंझार । खाठम दिन भले भावसुंजी आनंद हुपै रूपार ॥ हो सुनिराज ॥ ८॥ प्रचत्त शिर्ष्यर है खावके, सुखसागरजी नाम । समृत बचन सुणाके सबनो, करते उत्तम काम ॥ हो सुनिराज ॥ ९॥

॥ गहुंछी ॥

मे हूं दास तुम्हारा छूपाएरि मेहूं दास तुम्हाराजी। स्तिपितु मात जगतका नाता, स्वार्थ का सब खंसारा जी। सब जगस्वपना कोइ न अपना, तू मेरा रखवारा जी॥ १॥ तपजप कीना तत्व न जाना, महीं सतसंग विचारा जी। सब ग्रुण हीना धर्म न कीना कैसे हो नि-श्नारा जी॥ २॥ मोह माया ने जाल विछाया, फर्सीया जीव विचारा जी। तुझ विन करुणा भव भव हरणा, महीं होवे छुटकारा जी॥ ३॥ अवगुण मेरे हे सुरिजी धनेरे, नहीं झुळ पारावारा जी। ' चंदमूल '' शुरुण मे आयो, कीजे भव जल पारा जी॥ ४॥ इति॥

॥ गहुंछी ॥

गुरु विन कौन सराई जगत में गुरु विन कौन सहाइ

रे॥ देर ॥ साल विना सुन यांचय नारी, स्वार्थ के सव भाई रे। परसारण का यन्तु जगत सें, सतगुर वंध सहाह रे॥ १॥ भय त्यागर जल दुरतर भारी, कर्म महा दु:खदाई रे। गुरु वेयदीया पारलंघाये,ज्ञान ज हाज वेठाइ रे॥ २॥ जनम जनमको सेट छंधेरा, संशप सकल नसाह रे। ज्ञुपाचंद्र हिरि गुण प्रणः घटमे दे दरसाह रे॥ २॥ गुरु का यचन धार हृद्य में, आव अति मनलाइ रे। ' वंद्सूल ''करो नित सेवा, सोक्ष पदार्थ पाह है। ४॥ इति

॥ गहुं छी ॥

शह के सरगा में आधके फिर आश किसकी कीजिये। देरा नहीं दिख पड़ता है सुमे, दुनिया में नोरी शान का गंगा। किनारे वैठ के किम, क्रूपका जल पीजिये।। गुरु०।। हें ।। हरिगज नहीं लायक हूं में, गरचे तोरे गुगा गानका। मेरी खता को माफकर, दीदार अपना दीजिये।। गुरु०।। २। मिलता है आनंद जिनके, नाम हेनेसे सही। हैसे गुरु को छोड़ कर, फिर कीन से हित कीजिये।। गुरु०।। ३।। क्रुपाचन्द्र स्वरि नाम सुनकर में सरण तेरी पड़ा। सफलकरों हमको गुरु, अब पार अब से की जिये।। गुरु०।। ४।। " मूल " पर कर के कृषा गुरु, बचना मृत पा टीजिये । होय चेड़ापार भवसे, अर्ज ये सुन लीजिये ॥ गुद्र० ॥ ७ ॥ इति

॥ गहुंछी॥

राग:-(गुरु विन भौन सहाई)

गुरु विन कौन मिटावे भव हु.ख गुरु विन कौन मिटावे रे॥ गहरी निद्यां वेगवड़ा है, यहुत जीव पहजावे रे॥ गहरी निद्यां वेगवड़ा है, यहुत जीव पहजावे रे॥ गहरी निद्यां वेगवड़ा है, यहुत जीव पर जावे रे॥ गुरु०॥ १॥ काम कोघ मद लोभ चोर मिल लूंटर कर खावे रे॥ गुरु०॥ १॥ कृषाचन्द्र स्तिर मनुहारी, कर्मन से छुडवावे रे। सीधे मार्ग पर पग घरवा कर, सुखसे धाम गुगावे रे॥ गुरु०॥ ३॥ तन मन प्राण सव चर्पण करसे, जो गुरु देव रिझावे रे, "मुलचंद " भव सागर हुस्तर,सहज पार होजावे रे॥ गुरु०॥ ४॥ इनि

॥ महुली ॥

रागः-(राखु हमारे घटमे) रराखु मेरे हृदय में, कुपासृति नाम तेरा ॥टेर॥ पीकाणे में मृति विगजो, भविजन के हित काजो, अगणित गुगसे राजो ॥ रखलु ॥ १॥ शासन सम्राट तुमहो, न्याय विशारद तुमहो, म्याचीय मेरे तुमहो ॥ रखलु ॥ २॥ इत्तीस गुगो के धारी, गरमीर वाणी भारी, तुम शान्ति मुद्दा प्यारी ॥ रखलु ॥ ३॥ तुम म्राति श्यवंत भारी, महिमा हे व्यपरंपारी, करे घर कर्म छारी । रखलु ॥ ४॥ गुरु चार्जी मेरी सुनना, चरणों में मुझको रखना, भव पार भी तो करना ॥ रखलु ॥ ४॥ भ मूलचंद ११ हप पावे, दिलमें डमंग मावे, सेवा तुम्हारी चावे॥ रखलु ॥ ६॥ इति

॥ गहूंकी ॥

मुनि सुखसागरजी, ज्ञान देवोनी सज्ञानी समाज को ॥ देर ॥ कुषा ख्रि के शिष्य रहनहों, शोधा अप-रंपार, मधुर ध्वनि सुनकर द्यति सुखकर, पायो हर्ष अपार रे ॥ सुनि० ॥ १ ॥ शासन समाट गुरुदर है ग्राप के, मुल्क सुल्क सरनाम । उनके शिष्य कहलाले मुनिवर, साक्षात चंद्रसमान रे ॥ मुनि० ॥ २ ॥ पंच महाव्रत पालो मुनिवर पंचाश्रवको टालो । पंच सुमती को धारो मुनिवर, दोष बयालीस टालो रे ॥ मुनि० ॥ ३ ॥ बालहाचारी हो सुनिवर, शास्त्र के वेता भारी । जो जन वंदे भाव धरीने, होजावे सव पारी रे ॥ दुनि० ॥ ४ ॥ ध्याणित गुण के धारक मुनिवर, शास्त्र अर्थ सुविचारी। वाँच्छितफलको देवो ग्रस्वर मिले मुक्तिबधु प्वारी रे॥ मुनि०॥ ५॥ सम्वत् उन्नीसे साल पच्पासी, ग्रुभ दिन हे बुधवार, '' चंदमृट '' को दास जानकर करदो बेड़ापार रे॥ मुनि०॥ ६॥ इति॥

॥ गहुंछी ॥

हाथजोड़ी ने विनवृं रे चाब क्या रे मिलसो द्याल ॥ सुगुवजी ॥ जेसाणेरा भाव राखजी रे, द्दीन देजी कुपाल ॥ सुगुरुजी ॥ १॥ शिव रमणि वरवा भणी रे, तुम लीनो संयम भार ॥ सुगुरुजी ॥ श्रोध मान माया त्याग के रे. तज दियो सब संसार ॥ सुगुरुजी ॥ २॥ शिष्पादिक परिवार क्षेत्रे, परिवर्ष जगदाघार ॥ सुगुरुजी ॥ भारंड पक्षीनी परे रे,प्रमन करो विहार ॥ सुगुरुजी ॥ रे।। पहिले महिने नहीं खोलख्या रे दुसरे रही धंघा माप ॥ सुगुरजी ॥तीजे महिने मे खोटख्युं रे, विहार किया चौषा माय ॥ सुगुरुजी ॥ ४ ॥ ईस यिना जिम चन्द्र गिरी रे, तुम विन सुनी धर्मशाल ॥ सुगुरजी ॥ बोलुं घणेरी ब्यावसे रे, टागसे हिवड़े मे साल ।। सु-एक्जी ॥ ५ ॥ प्रतिक्रमण कोण करावसे रे, कीण करासे पचलागा ॥ सुगुरुजी ॥ मविक जीवने तारवा रे,कौन 'सणासे व्याखान ॥ सुगुदनी ॥ ई ॥ घन्य नगर धन्य तेधरा रे, जिँहा विचरे गुकराय ॥ सुगुक्जी ॥ धन्य ते आवक आविका रे, भेटसे तुम गुक पाय ॥ सुगुक्जी ॥ ७ ॥ ते दिन क्यारे आवशे रे,देखसुं तुम सुख चंद ॥ सुगुक्जी ॥ भव भंद चरणरी सेवना रे, दिजो जिन कृपाचन्द्र ॥ सुगुक्जी ॥ ८॥ उर्गणीसे त-यासीये रे,जेसलमेर भंकार ॥ सुगुक्जी ॥ ६ ॥ इति

॥ गहूळी ॥

श्री कृषाचन्द्र महाराज अरज छण मोरी, तुम द्रीन की बिलहार सुरत लगे प्यारी ।। आप कीयो सुमति से प्यार कुमति देई छांडी। आप जीते परि-सह सर्व, क्षमाखड़ धारी ॥ आप लिये शास्त्र सह चीन, पाखंड दियो टारी। आप भविजन के हित कार ज्ञान देवें भारी ॥ १ ॥ आप चारों ही दिये छोड़, पंच लिये धारी, आप धरो चौबीसी को घ्यान, अष्ट दिये जारी ॥ आप सोलह दीने काट अये ब्रह्मचारी, आप सुनयों के बीच, सुद्रा सुभ कारी, जिम तारा माहिं चंद सोमे अति भारी ॥ हम दुषम आरा के लोग -अज्ञानी नारी, आप हित को दो उपदेश सद्दा दिल धारी'।। ३ ॥ इममुल चंद्' कर जोड़ अरज कर गाई, धाय के चौमासो विक्रम पुरदो ठाई। होवेगा वहु उपार, सुगुरु सुपसाई, वर्तगा धानन्दकार सकल संघ माहि, ॥४॥ हे माल चौरामी माम, चैत्र अति भारी विद द्रामी दिन सुलकार आनंद से गाई। प्रवर्तक सुलसागर महाराज, अन्य सुनिराई, गुरुचरण कमल का दाश चर्डन गुण गाई॥ ४॥

रागः- (जिनजी मुझ पापी नेतार)

कुपानाथ केम करो आप विहार जीव घणो धक्क जाय। गुरुजी केम करो आपविहार । जान गुणे करी शोभ ताजी कापा कचन सार। रूप गुणे करी दीपताजी, करता उस विहार ॥ गुरुजी ॥ १॥ घर ना घथा में पड़ी जी, सुत्र न सुष्यो लिगार। हमने कुण संभला बसेजी, आप कीया विहार॥ गुरुजी ॥ २ ॥ तुम द्दीन विन किम कहजी, वेहने पुछु रे बात। क्षिणक्षिण में मुज माभलेजी, एक दर्शनमा बात ॥ गुरुजी ॥ ३ ॥ पुरुष् संयोगे गुरू मिल्याजी, हिच मिलवो के रे दूर । कूर् क्म महु में कीयाजी, हिन चाल्या गुरु दूर ॥ गुरुजी॥ शें। उपामरो सुनो पटयोजी, जोना होने दुःख अपार । पुरु बिन धर्म मिले नरींजी, पृथा जडकर रें पुकार ॥ . गुरुनी ।। ६।। खांघेठीधा पातराजी, घांघी कंवर आज।
-धन लाअ शुभ देईने जी, सार्या आतम काज ॥ गुरजी ॥ ६ ॥ स्रिक्ठपाचन्द्र विन्वुजी, अरज करू कर
जोड़। सुख शाता में रेहजोजी, थासे मंगल कोड़
॥ गुरुनी ॥ ७ ॥ संवत् उन्नीसे तयासीयेजी, पोष मास
शुभवार । स्री कृषाचन्द्र सेयताजी, होसे शिवसुख
सार ॥ गुरुजी ॥ ८ ॥

। गहूं ली ॥

गजल

कृपाचन्द्रस्हि द्या करके, अब सागर से करो पार मुझे ॥ देर ॥ नीर अपार नतीर दीसे, किम भीर धरू अब में मन में । मेरी नाव डुवाय रही मझमें में शरणागल जानके तार मुझे ॥ १ ॥ कम बसे घलवान बहु, चेहु वेरे पड़े बहु मारण में। बाज रही विपरीत हवा लंहीं एक बचावनहार सुके ॥ २ ॥ छूट गया सब साथ सेरा कुछ हाथ में जोर रह्या भी नहीं । अब गुरु न देर लगाय जरा निज बांह पसार ड्या मुझे ॥ ३ ॥ तेरा नाम जहाज बड़ा जग सें, सब शास्त्र सिद्धांत बतावते हैं। " चंदे सूंल " जपू दिन रात सदा, गुरु की किये भव से धार हुके ॥ ४ ॥

॥ गहंळी ॥

करो सत संग प्यारा, जन्म सफल हो जाय तुमिरा। शंसप सकल मिटाय ज्ञान का होय उजारा।। करो॥ १॥ मृतिं पूजन में मनलावे, कोटिनतीर्य फिर आवे। मन का भरमन जाय, विना सत संग विचारा रे॥ करो ॥ १॥ तप जप दान ध्यान बहुचारी विट समसे किया यहुभारी। ज्ञान विना नहीं माक्ष होय करो जतन हुः जारारे॥ करो॥ ३॥ करे अनेक काम शुभ कोड़, मत संग न सम एल नहीं होड़। घड़ी पलक छिन माहि, होय भव सागा पारा रे॥ करो॥ ४॥ निस दिन गुरु शिक्षा जहां होड़, वहुचंद मूछ " संग शुभ सोड़। कृपाचद के चरण सरण से, हो निस्तारा रे॥ करो॥ ६॥

॥ गहूंकी ॥

। राग:-गजल ।।

ह जगत में नामये,रोशन सदातेरा सुरि, तारते उमको सदा जो हे सरण तेरी सुरि ॥ देर ॥ हाख़ चौराखी में घेरा कमने सारा मुझे। हे बचा खबतो सहारा, हं मुम्ने तेरा सुरि ॥ १॥ है०॥ मैक्हों को तारते हो, महर की करके नजर । वर्षों नहीं तारो सुके,हें क्या सुना मेरा सुरि ॥ है०॥ २॥ हाल जी तनका हुआहे आप विनं किसको कहूं। सोहराजा ने सुके,चारो तरफ वेरा खरि॥ है०॥ ३॥ कुपास्रि से "फतेह" की तो गई। अरदास है, आप सरणों में रहे, मेरा सदा डेरा स्हि॥ है०॥ ४॥ इति

॥ गहुंली ॥

राग:-(माड ताल दाद्रा)

सेरी विनती सुनी स्रि तेरी शरण में पड़ियो।।
देर ।। माता तात आह्वंधु, स्वार्थ के सब भीत। कोइ
सहायक है नहीं रे, स्तुठी जग की प्रीत।।तेरी।।।।।।
भव सागर में भटिक येरि, पायादु: ख अपार। अवती
द्या करके स्रि, लीजिये मोहे उवार।। तेरी।।।।।।
तीर्थ बत प्रयदान, किया नहीं शुभ काज। दास तुम्हारी
आन के जी, रखिये "फतेह " की लाज।। तेरी।।।
रे।। अवगुण सेरा ना निणीजी, पतित पावन हार,
कुपास्रि तेरे विना, मेरा कीन करे निस्तार।।तेरी।।।।।

॥ गहूंळी ॥

राग:-(अमराव थांगी बोली प्यारी टागे) स्रिराज रहानें शिवपुर गेल वताना गुरुद्याल ही गुरुद्याल जी हो गुरुद्याल ॥ देर॥ लख बौरासी

मीनि में, पायो हु:ख अपार, नरक और तियेच में,

हरूत फिरयो संसार । हो स्रिराज अवतो शरण तुमारी आया । गुरुद्याल ॥ १ ॥ भव सागर के मझ भार में, भमर पढ़े गांत चार । गहरी निद्या नाव पु-रानी, जलती करदो पार । हो स्रिराज येतो मांझी नाम घाराबो । गुरुद्याल ॥ २ ॥ केइ अपराधी तारीया केइ तारणहार । गुझ पापी को तारो स्वामी, अरज करू सिर नाय । हो स्रिराज म्हाने शिवपुर टिकट टिलादो । गुरुद्याल ॥ ३ ॥ हाथ जोड विनती करू, चरणों में भीस ननाय, " चंदफतेह " परणा को चाकर, मन वंछित फल पाय । हो स्रिराज म्हाने भव नाटक हुडादो । गुरुद्याल ॥ ४॥ इति

॥ गहूली ॥ (जिनवाणी की)

(राग—सिद्धाचलागरी भेटयारे)

श्रवणसुणी जिनवागारि,गया पाप हमारा ॥श्र०॥। जिनवाणी की रचना श्रद्धत, कर्रा न सर्कू विस्तारा । साची श्रद्धाडण पर राख्यां, वपन्ने समकित सारा रे॥ गया॰ ॥ १ ॥गुण पैतीम-लीये इक जोजन, वरसे अ-मृत धारा । त्रपनी खपनी भाषा में समसे, द्यति। सप पर उदारा रे ॥ गया॰ ॥ २ ॥ स्याद्वाद अरु नय निक्रेषा, जीवाजीव विचारा। विविध्वेक इग्राने सेच्यां थीं, सकल जीव हित कारारे। गयां। ॥ इ॥ संपत् खुल हित कारण वाली, कही हैं खूत्र मंभारा । निज सत्ता ने प्रगट करण को, एही छै उपचारारे ।।गया।।। ४॥ प्रगटे परो इसा पंचम काले,सरसत पर उपगारा। केशरीचन्द्र'' के अब अब होड़ियों, वाणी रो आधारारे ॥ गयां।। ६॥

॥ गहुँ ही ॥

सुरिश्वर फलोधी नगर चौमासोरे। छा विनतडी मन लासो। सुरिभ्यर। फळो।१। सुरि देश विदेश थी सायारे, खहु मिवजन में मन भावा है। द्हिशन करी ने सुखपाया ॥ सुरिश्वर ॥ १॥ कंचन कामिनी के गुरु त्यागीरे, ज्ञान द्रान था लय लागीरे। मोक्ष नगरी त्या गुर रागी॥ सुरिश्वर ॥२॥ पांच सुषति ने सुधी पालेरे,तीन गुप्ति ने निहालेरे। यावन अनाचार ने टाले॥ स्टिस्थर ॥ ३॥ विद्या बेलड़ं।ये वीटानारे, गुण माला करी लपटानारे । गुरु चार्या करन सुहाया।। स्र्रिश्वरा।४॥ गुण सुगुरु तणा से गासुंरे, निरमल ज्ञातम ने करखंरे । मोक्ष नगर तगा खुल लेख ॥ मुरिश्वर ॥ ५॥ मोह जाल माया यां पड़ीने रे, सूत्र सुप्यो नहीं चित्त घरीने रे। सहिर अब के चीमासो करीने :॥

सिरिश्वर ॥ ६ ॥ संवत् उन्नीसे चौरासीरे, कार्तिक मास वदी सु'ख रासीरे । महूं ही करू मन च्छासी ॥ सु-रिश्वर ॥ ७ ॥ मच्छ खरत्तर मां स्रिश्वर राजेरे, कृताचन्द्र सुरि गुण छाजेरे । एतो गुमान गुजर गुण गाजे ॥ सुरिश्वर ॥ ८॥

॥ गहुळी ॥

च्याज रंग घरसेरे, माहरो सुश्थिर देख्यां मनदो हरतेरे ॥ एदेशी ॥ मरुधर देश जोधाया भारी,चामुं मगर सहाया रे। मेघराज कल भाण जगत में, नाम दिपायारे ॥ घाज ॥ १ ॥ वंश घ्योस मोच षाफणा मात द्यमरा देवी जाय रे, दिकम उन्नीसे तेरे बर्पे महीनां चैत्र सुहाया है।। स्वाल छतीसा है सखकारी, मन वराज्य समाया रे। युक्ति अमृत बचनामृत पीके, सुद्ध समकित रस पाया रे।। प्राज ॥ ३ ॥ पर् काया प्रति पालक सहस् नय नि-क्षेप मन लाया रे। जीवाजीव नेद दर्शाउन, आगमसे रुष लाया रे ॥ प्राज ॥ ४ ॥ पांच सुमित नीन गुप्ति घरं,नित संयम से चित लाया रे । पंच महावृत सुवा पाले, पर उपगारी पराचा रे ।। घ्याज ॥ ६ ॥ उन्नीसे यहोतर वर्षे, सुम्पई शहर मन आयारे । क्षंच चतुर्विध

महोत्सव करके, पद आंचार्य मुखदाया र ॥ आज ॥ ६ ॥गुण छतीस शांमे सहुक, खरतरगच्छना रायारे ॥ चंद्र सूर्य जिम दीपे सहुक, सहु संघ के मन भागारे ॥ आज ॥७ ॥ शहर फलांधी पघारे सहुक, संघ महु हुः रखाया रे, । देख दीदर अनुगम गुरुवर का, अति हुः लसाया रे ॥ आज ॥ ८ ॥ मधुर ध्वनी अमृत सम वपने, भगवति सुत्र सुनाधारे । सुरि कृपाचन्द्र जय वन्ता वर्ता, शिद्यु पङ्कज मन भागा रे ॥ आज ॥९॥ संवत उन्नीसे साल जौराकी कार्तिक मास सुहायारे। धंवल पक्ष द्वादशी द्विस, मुनि वर्द्धन गुण गांधा रे अंगज ॥ १०॥

॥ गहुंकी ॥

सुरिश्वर द्याया शहर में, संहियां वंदन चालों है। दर्शन करतां जेहना, गुद्ध समिक्त थावे हे ॥टेर॥ खरतर गच्छ में राजता महियां गिम्बा गुण गंभीर। तरणी सम गुरु दीपता शहिया, इशिवत निर्मल नीर।। सिहियां मोरी मांभलों, गुण निधि द्याया रे॥१॥ द्याचार्थ पद में शोभता, सहियां सुरिकृदा शशिराज जग में भवियण प्जता, सहियां सहज कला निध भाजा। १॥ कोश वंश कति शोभता, सहियां गोन्न षाफणा जान । वंदा दीपायो तेहनो, संहियां जिम परगट थयो भागा ॥ ३ ॥ युक्ति ग्रमृत गुरु राघना, सहियां भलो मिलयो छै जोंग, उगणीसे छतीस में सहिषां, प्रकट्यो पुष्य संयोग ॥ ४ ॥ ज्ञान ध्यान में राजना,सहियां स्थादवाद मत पर वीण। जीवा जीव प्ररुपता, सहिंचा जिम सरस्वति नो वीण ॥५॥ शुद्ध संपम को पालता सहियां पर काया प्रति पाल,पंच-महावृत धारता, सहियां घरम तणा रखवाल ॥ ई ॥ श्रीसघ सह वीनवे, गुरु देवो ज्ञान विशाल, मुरख ने प्रति बोघने, गुरुकरदो च्याप निहाल ॥ ७॥ सागर वर्द्धन बीनवे, गुरु सुन ज्यो एह चारदास, चरण सेवा में राखड़यो गुरु शिष्यको हरदम पास ॥८॥ संवत सप **खगणीस में, सहिंगां मास फाग्रग् गुलजार ।** निधी एकाद्द्यी सोमती, सहियां वार भृगु मनुहार ॥ ९ ॥

॥ गहूळी ॥

षालवाल म्हारी सुगुगा सहेल्यां,गुरु गुण गावोरे ॥ महुमिल वालौरे ॥ पृथ्वी मंडल में विचरता, जंगम तीथे राया रे ॥ संत्र चतुर्विय हरख वधायो, फलोधी सहर में स्नाया रे ॥ महु ॥ १॥ अहार सहस शि-लांगना धारी, पंचाचारने पाले हे। कपाय घड नि-

वारके षर् काया रखवाले रे॥ सह ॥ २॥ चरण सितरी करण सतरी, भावना भावे बारे रे। रज्ञत्रपी च्याराधते, संयम सतर प्रकारे रे ॥ सह ॥ ३ ॥ रुची वंती सुश्राविका सुंदर, मुक्ता फल ले बावे रे। चड गति दारण मंगल कारण स्वस्तिक ठावै रे ॥ सह ॥४॥ नवगम भंग निक्षेपा जाणे, चार प्रमुवांग कहाया रे! स्वाद्वाद् वाचना पूरी, भगवह अंग बचाया रे ॥ सह ॥ ६ ॥ पूर्व पुन्य अपूर्व जेहना, जिन वाणी रस चाखे रे । अद्वावंत सुणेजो काने, सद्गुर भाखे रे ॥ सहु ॥ ६ ॥ संघ न । यक कृपाचन्द्र सूरि, सहकोइ मन आणे रे। खरतर गच्छ मांयने कांह, उदयो भाणे रें ॥ सहु ॥७॥ संबत् उन्नीसे चौरासीये, कार्तिक सुदि शुभ वारी रे । च्यानंद गुमान मिल गहुंली गांवे, मंगल कारी रें॥ सहु ॥ ८ ॥ इति॥

॥ गहूंछी ॥ (बधाई)

खांज तो हमारे भाग्य कृपास्हिशायै। श्राधिका खड़ी दुवार, हाथ में सोवन थाल । मुक्ता कुंक् लेघ शालि, गहूंली कराये ॥आज० ॥१॥ माता समरादे के नंद, मेघ से उद्ये दिणंद । धन्य श्री कृपास्हिन्द् भव्य हरखाये ॥ आज० ॥ २ ॥ दिक्षा ली छतीसे सारु, छोड़के जग का जंजाल । किया श्रंथ जेशल उद्घार,सृरिसुहाये॥ ग्राज०॥३॥ वीकानेर सप्तिवारे, शिष्य सात सुखकारे । कृपासृरि चारणाम्युजारे, 'भेवर' रुपटाये॥ आज०॥४॥इति॥

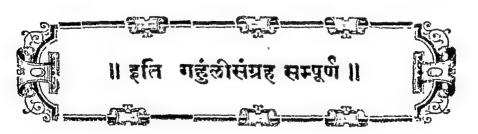
गहूंर्छा

राग:--(कलाली)

चालो सहेल्यां समकित निर्मल काज हो सहे यां, कांई आज गुर्वावंता गुरुने वधावस्यां हो राज । (टेर) जोसां जोसां गुरु सुख भमल विकाश हो सा०। कांई पूर्व संचित कमेने मेटस्यां हो राज ॥१॥ चा० ॥ करता करता भवि जीवो उपगार हो सा०। काई पूर्व संघोगे सुगुरु पधारिया हो राज ॥२॥ चा० ॥ राजै राजै नभ खरतर गच्छ' भाण हो मा० । कांई स्टरि जिन कृपाचंद्र स्रि श्वर हो राज ॥३॥ चा० । भरिया भरिया क्रुकुंम रयण कवील हो सा० । काई सुगुगी आवक्ताी इम गहुरी करे हो राज ॥४॥ चा०॥ उभा उभा अरज करे श्रीसप हो सद्गुकं किंह भगवती मृत्र प्रकाशो रंग सुंहो राज ,॥५॥ चा०॥ मीठी मीठी साकर डाख विशेष हो माः। काई मीटी प्रमृत सम वाणी गुरु तणी हो राज ॥६॥ चा० ॥ चासे चासे जिन वचनांमृत विन्द्र हो सा०। काई सहज मौभागी शिवरमणी वर्रे हो राज ॥७॥ चा०॥ काई दीजै दीजै तुम चरणां रीसेव हो सद्गुढजी। काई चतुर सहिल्धां इम चरजी करे हो राज ॥८॥ चा०॥



श्रीमान् स्रिवरो सहामुनिकृपाचन्द्रः फलोधमराट् । प्राप्तो जेसलभेर नाम्निनगरे ६मां पावधन् स्थापिता । संमत्तेनवरापरोपकृत्तये जीर्गागमो द्वारिणी । बर्षे-बह्विसुग्रहेन्दु गणिते ग्रन्थस्तया लेखितः ॥१॥





पुस्तक मिजने का पता—

१ श्री जिनद्त्रसूरि ज्ञान भण्डार

गोपीपुरा ओसवाल मुहल्ला

सुरत

२ श्री जिन कृपाचन्द्रसूरि ज्ञान भण्डार

मोरसजी की गजी

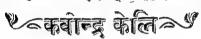
इन्दौर (मालवा)

सेडिया जैन प्रिंडिंग प्रेस बीकानेर में मुद्रित ता॰ १६-१

Muni Mangal Sagar.

कै के के देह की देहें के के कि कि के के देह के हैंड सुखसागर ज्ञान विस्तु न० २१

॥ श्रीसुलसागर मगवेदु हरि पूज्य सदगुर प्रोनमः॥



क्षपर ना

‡ गहूंली संग्रह प्रथम भाग ‡

निर्माता —

॥ मुनि-प्रवर कवोन्द्र सागर जी महाराज॥

मुद्रण-द्रव्य-दात्री 🕳

म्ब्य श्रोमतो कुञ्जी वाई 🖘 मानीवाडा हीरानन्द की गली, देहली।

28

चीर सं० २४५७-वि० सं० १४मम् ।. ्र् मृत्य

पठन ऋतुशीलन ।

and the state of t

पुस्तक परिचय

गहूं लियाँ गाने की प्रथा पाचीन काल से प्रचलित है, वर्त्तमान में व्याख्यान के मध्य में गाई जाती हैं। पूर्व कवियों की बनाई हुई गहुंलियाँ वर्त्तमान में भी संख्यातीत मिद्ध विद्यमान हैं, उन में उस २ समय के अनुकूल भाव, भाषा और तजें रही हुई हैं अतः गाने में कुछ कम अनु-कूलता पड़ती है, उसी अनुकूलता को बढ़ान के शुभहेत से 'पूज्यपाद गणाधिश्वर श्रीमान् हरिसागरजी महाराज साहव? के शिष्यरत 'मुनिपवर कवीन्द्रसागर जी महाराज ने गहुं लियों को महात्मात्रों के गुण ग्राम के साथ शिक्षामद सदुपदेशों से भूरपूर सरल मधुर नई तजों से हिन्दी भाषा में निर्माण कर के हमारी अभिलाषा पूर्ण की है। 'पराप-काराय सताँ विभूतयः।

पस्तुत पुस्तक को 'श्रीहरिसागर जैन पुस्तकालय' द्वारा पकाशनार्थ देहली निवासी 'जौहरी सोहनलाल जी वहारे की धर्मपत्नी श्रीमती कूंजीबाई ने द्रव्य सहायता दे कर स्वपुत्री हीरोदेवी के स्मरणार्थ भेंट स्वरूप वितीर्ण करवाई है। श्रत: धन्यवाद देता हूं और उदारात्माओं को तदनु-सरणार्थ भेरणा करता हूं।

परिचायकः —

रतनगढ निवासी वैरागी तोलामल सींघी



स्वर्गीया श्रीमती होरोदेवी



जन्म । वि० सं० १४६७ चैत्र कृष्णा प्रतिपत्।

मृत्यु वि० सं० १६म्पू आश्विन कृष्णा १४।

SADDHARAM PRESS DELHI.

अभिती हीरोदेवी की संक्षिप्त जोवनी क्षिप्त जोवनी क्षियं आराधितो येन, कृत कर्त्तव्य मात्मन । हिताय जीवितं यस्य, किं मृत स न जीवित ॥ (कवीन्द्रकेलि)

स्यूल देह को छोड कर के भी वर्मी-कर्च व्यशील-सर्वहिते-पिणी मारमाए पृथ्वीपट से लुप्त नहीं होती, प्रत्युत वही प्रभाव स्तमकाय से जगत् में जमाये रखनी हैं। वैसे ही श्रीमती हीरो-देवी वि० स० १८६७ चैत छ० प्रतिपदा के दिन अपने मोसाल वसई में देहली निवासी जौहरी लाला सोहनलाल जी की धर्मपत्नी श्रीमती कुजीबाई की कुत्ती स जन्म खेकर, अपने पिरुगृह में सामायिक प्रतिक्रमणादि धर्मपन्यों का तद्तुशीलन करती हुई, स्कृल की ७वीं फ्लासमें चारी इल्मों में पास होती हुई विनय विवेक-सदाचार-सुशील-शाति मादि गुणों से भरौ हुई, युवावस्था में कलकत्ता निवासी श्रीयुत लामचन्द्रजी आडियेके साथ न्याही गई थी। सुयोग्य गृहिणी पदको सुशोमित करती हुई. नवपदकी भोली, मधा-पद की ओली पत्रमी तप, पचासुवत आलोचना शत्रु अयादि महातीयों की यात्रा इत्यादि अनेक धर्मछत्यों को करती हुई दो महीने के विमलचन्द्र नामक बालक को अपना स्मरण-चिम्हरूप छोडती हुई वि० स० १६म्५ के झारिवन छ० १४ के दिन १८ ह वर्ष की मल्पनय में समाधि से मसार ससार को छोडकर, सुदमकाय-यश कायसे अमरत्व को पाई श्रीमती का सादगी से, सामाविक शांति से भरा फोट्ट उपर्युक्त विषय की साली दे रहा है। प्रत्यच विषये कि प्रमालम् अतः अलम्। जीवनी लेखक ---

रतनगढ निवासी वैरागी तोलामल सींघी

东东东海本东东:东京东-西东西东东东东东 * समर्पगा प्रातःस्मरणीय पूज्यपाद घोरतपस्वी श्रीमत् छगन सागरसद्गुरु को सेवा में सादर ज्ञानी महाध्यानी तपस्वी पूज्य गुरुवर श्रापका स्वर्गीय दिन ही है स्मर्गासाधक विनाशक पापका। इसमें सदा से तुच्छ में अत्युच भावों से भरा कृतकेलि रसरेली समर्पण आप सेवा में धरा॥ दया बुद्धि से देव! स्वीकारें आशा यही। दर्शन दें स्वयमेव हृद्य भावना में कही।। भवदीय दासानुदास कवोन्द्र भाद्रशुक्ल ६ 本本本本本本本:本本:本本本本本本本本

॥ कवीन्द्र केलि॥

* भएर नाम *

। गहूंली संग्रह प्रथम भाग।

। श्री गौतम स्वामि गुख वर्णन गहूंली । १ ।

। राग—माशावरी ।

नित्य नमो दितकारी रे चेतन १ गुरु गौतम जयकारी । टेर।
लिब्य नियान ज्ञानगुर्णोद्धि, विघ्न विनाशनकारी ।
गुरु भनुरागी परम विरागी, सुव्रतिजन सुखकारी रे। चेतना१
सरल सुयुक्ति बोधन शक्ति, अद्भुत गुर्ण अविकारी ।
निरिममान विधान विधायक, क्षायक भाव विदारी रे।चे०।२।
अद्भते केवल ज्ञान का देते, दान महा उपकारी ।
शिष्य दुए वे निथय करके, होते शिवमग चारी रे। चे०।३।
सुखसागर भगवान मश्च श्री, वर्द्धमान पट्यारी ।
पृथिवी नन्दन बन्दन करते, हारे मोहमहारि रे। चे०।३।

श्रुतदेवी जाके मुख पङ्कज, खेलत विविध मकारी। इरि कवीन्द्र नमो गुरु गौतम,वर्चे मङ्गलाचारीरे।चे०। ५।

। श्री पूर्वाचार्य गुरु स्मरण गहूंली । २।

। राग-माढ।

नमो शिरनामी गुरु गुराधामी, शासन के शिरताज। टेर। पावन जीवन गौतम स्वामी, गराधर गुरामियानाल । प्रातःकाल में नाम लिये ते, पकटे मङ्गल माल । नमो० । १। अन्तिम केवलि जम्बूस्वामी, मुक्ति रमा वर कान्त । प्रभव प्रभु प्रभृति श्रुतकेवली, देवें वोध नितान्त । नमो० । रा महागिरि त्रादि दश पूरवी, प्रवचन प्रागाधार दैवर्ध्दिगिि जिनभद्रादिक, त्रागम संग्रहकार । नमो० ।३। श्रीसिद्धसेन हरिभद्रमञ्ज, शासन थम्भ समान । ज्ञानी ध्यानी पूर्ण तपस्वी, दिच्य अतिशयवान् । नमो० । १। नवाङ्ग वृत्तिकार हुए प्रभु, अभयदेव सुरीन्द् । श्रीजिनवल्लभ सूरि किये थे, खंडित पाखंड दृन्द । नमो। । ।। दादा श्रीजिनदत्त सुवोधक, श्रावक संघ विशेष । त्र्यान भी नाके पुराय मतापे, भागे विद्यन त्रशेष । नमो० ।६।

उनके पट परस्पर में हुए, गिए क्षमाकल्यान ।
सनेगी सुविदित गीतारय, करते स्व पर कल्यान । नमीं ।
यथा नाम गुर्णों के धारक, गर्णनायक अभिराम ।
श्रीसुलसागर सद्गुरु स्वामी, दुिल्योंके विसराम । नमीं । ।
भाग्यवान भगवान गुरु थे, भव वन सारथवाह ।
दिव्य सपस्वी छगनसागरगुरु, हर्रे सिलोंक का दाह । नमों । ९।
गुरु गर्णनायक श्रीहरिसागर, समकित के दातार ।
नवनिधिसुरतरु वाँछित पूर्या, आतम के दितकार । नमों । १ ०।
गुरु पदसेवा अनृत मेवा, दे आनद अपार ।
गुरु गुर्ण कीर्तन दिच्य कवीन्द्रका है श्रीतिभाग्दार। नमों ०। १ १।

। ज्ञान का खजाना गहूंली । ३।

। राग—गजल ।

पुरु जी ज्ञान का भारी, खजाना खुव खोले हैं।
नहीं हैं खुटने वाला, जिसे लेना हो ले लेवे। टेर।
भिणक इस जिन्टगानीमें, नहीं फिर हाथ खाने का।
अमोला माल से पूरा, जिसे लेना हो ले लेवें। १।
समय पाकर खगर भूनें, भवो भव दुख होने का।
विवास हैं इसीसे कि जिसे लेना हो ले लेवें। २।

हृदय भं दार में इसका, जरा भी जो गया हिस्सा। समजलो पार है बेड़ा, जिसे लेना हो ले लेवें । ३। उभय भव में हमेशा से, चलन चलता इसीका है। समजमें आगया हो तो, जिसे लेना हो ले लेवें। १। इसे जल चौर अगिन या किसी का भी न खतरा है। सदा आनन्द देता है, जिसे लेना हो ले लेवें। १। खजाने के निकट में ही, भरा है दिव्य सुखसागर। त्रिविध सन्ताप हरता है। जिसे लेना हो ले लेवें। ६। वही भगवान है जिसके हृद्यमें यह खजाना है। 'स्वयं भगवान होने को जिसे लेना हो ले लेवें। ७। मुनिगरानाथ हरिसागर, गुरु हैं प्ज्य उपकारी। दया ला दान करते हैं, जिसे लेना हो ले लेवें। = ! सुनो संसार भर में भी, न इससे सार है कोई। कवीन्द्रोंने इसे गाया, जिसे लेना हो ले लेवें। १

। सद् गुरु सेवा फल गहूंलो । ४।

। राग-मेरी गली आजारे खांवरिया मेरी गली झाजा धेनु चरा जा महिरा खिवा जा रे सांवरिया। सेवोगुरु परमं कृपाल भवियाँ, सेवो गुरु परम कृपाल भवियाँ गुरू कृपा यकी, जीव ग्रुगित की वर विजय वरमाल भिवयाँ। सेवाँ०।१। हृदय तिमिरभर, करें नाश गुरूवर, कार्टे मोह की जाल भिवयाँ। सेवाँ०।२। सट्गुरू सेवा, मीठा मेवा, देवें नित्य, रसाल मिवयाँ। सेवाँ।३। सट्गुरू शरणे, शुद्ध आचरणे, रहते जाय जजाल भिवयाँ। सेवाँ०।१। जनम मरण जावे, कीरति कवीन्द्र गावे, सट्गुरू सेवां विकाल भिवयाँ। सेवां। ५।

। सद्गुरु महिमा गहूंली । ५। । राग-पैसा प्यारो रे कि बोहन गारो रे।

सिवियाँ गावारे कोई गावो गुरुगुणमाल सिवियाँ गावारे ।टेर्। षडगित चहुटे वीचमें,कोई जीव अनादिकाल । सिवियाँ ।१। गुरुगमकोपाये विना, कोई वहोत फिरा वेदाल । सिवयाँ ।२। रागद्देप ठिगये जहाँकोंड रहें विद्याकर जाल । सिवियाँ ।३। लूटिलयाधन मालको कोंड वना दिया कगाल । सिवियाँ।४। मोह महा अन्नेरमें, कोंइ भूला स्व पर विवेक ।सिवियाँ ५।

परवश पामर जीवने, काँइ पाये दु:ख अनेक । सखियाँ ।६। सुभ पुरायोदय जीवके, काँइ आज मिलेगुरुराज । सखियाँ । ७। मारग दर्शक मोक्षके, काँड् सुव्रतिजन सिरताज । सखियाँ । न। त्रालस विकथा छोड़के, काँइ होकर उद्यमवन्त । सखियाँ । ९। योग शुद्धिको धारके काँइ सेवो गुरु निर्भानत । सिवयाँ ।१०। पसरे गुरुमुख मेघतें। काँइ स्याद्वाद रस रेल । सवियाँ ।११। अाज उसी रसरेल से, काँइ पाप ताप दें ठेल । सखियाँ।१२। स्वारथमय संसार में, काँइ परमारथ का पन्थ । सिवयाँ।१३। सुखद सरल अव होगया, काँइ सेवत गुरुनिग्रन्थ । सिखयाँ ।१८। गुरुखुलसागर विश्वमें, काँइ हैं श्रीगुरु भगवान् । सिवयाँ ।१५। श्रीहरिसागर पूज्यहैं, काँइ गरानायक गुरावान । सिवयाँ ।१६। गुरुद्शेन कीर्तन कियाँ, काँइ आतम निर्मलहोय । सिख्याँ ।१७। हैंकवीन्द्रसद्गुरुविना,काँइ अशर्गाशर्गानकोय। सिवयाँ।१८।

। सद्गुरु उपदेश महिमा गहूंली । ६।

। राग—लाल ख्याल देख तेरे अचारेज मन आवे।

भैरवी

सद्गुरु उपदेश देत भविक बोध पावें। भविक बोध पावें सखी। भविक बोध पावें। टेर भरकत भव बनमें जीव-जनम मर्ग्ण पावें । सुगुरु चर्ग्ण शर्मण श्रजर श्रमरता निपावें । सङ्० ।१।

लोइ भी सुवर्ण वर्ण पारस सङ्ग आवे।

शिष्य सुगुरु होय यदि सुगुरु सङ्ग जाते । सद्० ।२। सुगुरु कोध-मान-माया लोभ को भगाते ।

रविशकाश तिमिर नाश शीघ ज्यों दिखावे । सद्० ।३।

श्रमित सपन घन घटा को पवन ज्यों नशावे । सुगुक कुमति कुगति कुटिलता को त्यों हटावे । सट्०।८।

सिन्धु लहर बद्दु है ज्यों चन्द्र उटय भावे । सुगुरु सुमति सुगति सरलता को त्यों बदावे । सट्०।४।

तुर्ह निकट विकट पन्थ सहस्र ही लखाने । विनय विभान वस्त्र वर विवेक प्रकट पाने । सद् ० ।६।

विनय विमल इत्त वर विवेक प्रकट पावे । सङ्० ।६। सुगुरु पाप ताप दुख दूर ही गमावे ।

सुवनिधि भगवान रूप श्राप होड जावे । सट्० ।०। परम भरम धीर वीर भावना सुभावे । सुगुरु पूच्य हरि हमारे गुण कवीन्द्र गावे । सट्ट० ।=।

। सद्गुरुगुण माहात्म्य गहूंली । ७।

राग—हूं किया जग सारा जग सारा जग सारा सिंधिंगिरि सानी ना मिला।

पुर्य उदय गुरु पाया गुरु पाया गुरु पाया करो वंदना। टेर। सद्गुरु वन्दन पाप निकन्दन, विबुध हृदय सुखदायक नन्दन। भवदव ताप विनाशन चन्दन, वन्दत सखी सुखपाया सुखपाया-सुख पाया करो वन्दना। १।

सद्गुरु सेवा करण में हेवा; धरे होय सेवक नित नर देवा। पावे आतम अनुभव मेवा, हरे सखी मोह माया मोह माया-मोह माया करो वन्दना। २।

सद्गुरु चरणा अशरणशरणा, पवलकरम अरिदलकामरणा। आधि व्याधि उपाधि हरणा, सेवो सखी हो अमाया हो अमाया

हो अमाया करो वन्दना। ३।

सद्गुरु सङ्गे परम उमंगे, सहज समाधि सरस तरंगे। रहत सदा ही भाव निसंगे, सखी निज रूप निपाया निपाया-

निपाया करो वन्दना। ४।

सद्गुरु साचा निर्मल वाचा मोहराय को मारे तमाचा। पुद्गल बन्धन होवत काचा सखी वहिरात्म हठाया हठाया-

हठाया करो बन्दना। ५।

सद्गुरु पूरण ब्रह्मको कारण, श्रन्तर श्रातम भाव मचारण।
 भगोदिष दु लको दूर निवारण, करे सली शान्त सुझाया सुझाया सुझाया करो बन्दना। ६।

सद गुरुसुबोद्धिभगवान्ऋद्धिसिद्धि, धरैदिगपग२ अनहदनविधि भव्यजनोंकोबोधतशिवविधि, वही सखी मेरे मनभाया मनभाया मनभाया करो बन्दना । ७ । सद् गुरु झानी सेवो भानी आतम निर्मल कारण मानी । द्वि हिर पूज्य सुगुरु गुणाखानी, दिव्यकवीन्द्र गुणागाया गुणागाया गुणागाया करो बन्दना । ⊏ ।

। सद्दगुरु प्रार्थना गहूंली । ८।

। राग—मेरे राम अयोध्या बुलालो सुके।

गुद ज्ञानकी बातसुनायाकरें, हमें समकित रत्न का दान करें।टेर।

मूल विन साखा कहीं होती हुई देखी नहीं,

सम्यक्तव विन त्यों धर्म कर्रणी भी सफल होती नहीं।

कहीं है न वही हम कैसे करें। गु०।।१।

माया लगी चारों तरफ कुछगम हमें पडती नहीं,

मिन्यात्व की छाया हृटयसे यों छिटकतीही नहीं,

दसे केंसे कहो श्रव द्र करे। गु०।२।

साधन नहीं तैयार साधक साध्य कैसे पा सकें। नैया न है नाबीक तब क्या सिन्धु जलको तिर सकें। कैसे साध्य कहो अब प्राप्त करें।गुट्रीका

क्रोड़ों भवोंमें भी नहीं हम पूर्ण बदला दे सकें। उपकार होगा आपका वर्णन न जिसका होसके।

ऐसे आप गुरु उपकार करें। गु० 121 कामधेनु कलपटुम चिन्तामणि भी तुच्छ है, पालिया गर एक जो सम्यक्तव अच्छा स्वच्छ है।

यही आप उपाय बताया करें। गु०।५। संसार सागर पतित जन उद्धारकर्ता आप हैं, सच्चे हितैषी हैं हमारे आप ही माँ बाप हैं।

कभी सोच न अब इम दिलमें धरें ।गु०।६। दुःखहर्त्ता भाष सुखसागर गुरु भगवान हैं , ज्ञान गुरा भरदार सच्चे आप इम अज्ञान हैं।

निज रूप हमें भी वनाया करें। गु०।७।
तत्त्व की श्रद्धा सुमिथ्या हिस्त भेदन में हिए,
सागरों से भी बड़ी दोवे हृदय में विस्तरी।
तब दिव्य कवीन्द्र सुकीर्ति करें। गु०।=।

। कर्त्तव्य सद्पदेश गृहं ली । ६।

। राग-जिन धर्म का डका मालममें बजवा दिया वीर जिनेश्वरने।

दु लहर सुलकर भविजीवोंको शुभवोध दिया श्रीग्रह्वरने। माचार विचार सुधार करो। शुभ वोध दिया श्रीग्ररुवरने हिर अज्ञान दशामें एड़े हुए जब आतम भान ही भूले थे। तव उदय दिशा के सूर्यरूप, शुभ बोध दिया श्रीश्रव्यर ने ।१1-न्यायोपार्जित धनसे ऋपना, निर्वाह करो जो सुख चाहो। धन माप्ति विधन जय हो वैसा, श्भवोध दिया श्रीग्रञ्वरने ।२। न्यायी जीवन जीने वाले ही, उभय लोक सुखमय होते। अन्याय कभी न करो ऐसा शुभ बोध दिया श्रीग्रह्वरने ।३। डव्य-क्षेत्र श्रीर काल भाव की नाड़ी कैसे चलती है। उसका अति शुद्ध सरलतासे शुभ वोध दिया श्रीग्र**रुवरने ।**शाः आदर्श बनो आदर्श वनोः कर्त्तव्य करो अपने जो हों। निज शुद्धि सगडन सिद्ध करो शुभ बोध दिया श्रीएव्बरने ।४। हैजैन धर्म का मृल तत्त्व जो स्याद्वाद उसको जानो। किनना विशाल है वह देखो, शुभ वोध दिया श्रीग्रच्वरने ।६। श्रीसुखसागर भगवान् गुरु, हरिसागर सम गुराधाम वनो । यों दिच्य कवीन्द्रोंसे वर्णितः शुभ वोध दिया श्रीयुष्वर ने । । ।

। कर्त्तव्योपदेश गहुं ली ।१०।

राग—शुद्ध सुन्दर श्रति मनोहर वोल बन्देमातरम्।

्कर्त्तव्यका उपदेश पाकर भूलना नहीं चाहिये। कर्चव्य ही आदर्श हैं आदर्श जीवन के लिये। टेर । परमातमा की पुराय पूजा नित्य करनी चाहिये। विगड़ी हुई निज त्रातमा को शुद्ध करने केलिये। कर्तव्य ०११। ्ज्ञानदाता सद्गुरुसे बोध, पाना चाहिये। निज अविद्या अन्धता को, दूर करनेके लिये। कर्राव्य०।२। माणियोंमें मेम - अनुकम्पा बढ़ानी चाहिये। विश्ववल्लभ और निर्भय रूप होने के लिये। कर्चव्यव ।३। याकर सुषात्रोंको सदा शुभदान देना चाहिये। चाहतेके साथ बाँछित वस्तु पानेके लिये । कर्चव्यवाश सद्गुणी जनके गुणों में, राग रखना चाहिये । देव दुर्लभ दिव्य सद्गुरा, रतन पानेके लिये। कर्त्तव्य । धा आगम श्रवरा चिंतन मननमें, लो लगानी चाहिये। हितत्रहित क्या तत्व हैं, उनको समभनेके लिये। कर्त्तव्य ०१६। हैं मनुज भव दृक्षके फल, ये सभी प्रत्यक्षमें। शान्त सुखसागर जनित, अमृत पर्म रस के लिये।कर्त्तव्य।७।

उपदेश हरिसागर गुरु के, नित्य धारण कीजिये । निज यशोगाया कवीन्ट्रॉसे गवानेके लिये । कर्राञ्य० ।=१:

। सदुर्म वृक्षरक्षणोपायोपदेश गहूं ली । १९।

। राग-- शुद्ध सुन्दर झित मनोहर योल वन्देमातरम् । श्रीगुर सत्संद्र में सद् ज्ञान श्रमृत पीजिये ।

विश्व पावन धर्म के उपदेश को सुन लीजिये । देर। धर्मरूपी द्रल के शुभ, बीज बानेके लिये। श्रात्म भूमिका विशोधन, खूब ही कर दीजियें। श्रीग्रुकट ।१। जो विरोधी तस्व हैं, उन की परीक्षाको करें। धीर हो सदबीर से फिर, नाश उनका कीजियें। श्रीग्रहः।२। हैं कल्पित भावरूपी कीट कार्टे पेड़ को । शान्ति पूर्वक यत्न करके, दूर उनको कीजियें। श्रीग्ररु०।३। निञ्चल बना निज इन्द्रियों को नित्य रक्षा के लिये। दिव्य तर दृढ़ चित्र हत्तिः वाड् फैला दीजिये । श्रीगुरू०।८। सींचकर निर्मल दया जल द्रव्य मार्वे सर्वथा। यों यथोचित धर्म के कर् हुझ लहरा दीजिये। श्रीग्रहाश। नर मुरामुरनाथ मुख सर्व, जानली ये फूल हैं। मोत सुख फलरूप ई, पत्यक्षकर चख लीजिये । श्रीगुरुवाहा

अक्षय अनन्त अपार सुख, सागर प्रकट होगा सही। यों स्वयं भगवान हो करके, परम सुख लीजिये। श्रीग्रह्म । पूज्य हरिसागर ग्रह, सुकवीन्द्र कीर्तित हैं मिले। अर्म का सचा तरीका प्राप्त उनसे कीजियें। श्रीग्रह्म । प्र

। ऋहिंसा धर्मीपदेश गहुंली । १२।

। राग-म्हांसुं मूंढे वोल ।

परम थरम का मूल ऋहिंसा तत्व हृदय में धारो रे। श्रीग्ररु दें उपदेश भविकजन श्राप विचारो रे। कि दिल में धारो रे। टेर।

पाँचों इन्द्रिय मन-वच-काया, बल हैं तीन प्रकारा रे। श्वासोच्छ्वास आयु मिल दशधा, प्राण प्रचारा रे। कि आप विचारो रे। १।

प्राणों को धारे सो पाणी, जीव सभी कहलावे रे।
पाण वियोग हुए से होता, मृत्यु नजरों आवेरे।
कि आप विचारो रे। २।

जैसे श्रनुभव सुख दुःख का, निज श्रातम को होवे रे। चैसे ही सब प्राणीमात्र को, सुख दुःख होवेरे।

कि आप बिचारों रे। ३।

जीवन सब ही को प्यारा है, है सब सुख के कामी रे। ३। जीवन हर दु खड़े मत होना, दुर्गति गामी रे। कि आप विचारो रे 18 । श्रपना जन्म मरुगा नहीं चाहें, वे पर को क्यों देवे रे। कार्य नहीं चाहें उसके क्यों, कारण सेवेंरे।

कि आप विचारो रे। ५

किसी जीव को किसी तराँ से, कष्ट कभी नहीं देना रे। द्रव्य भाव से नित्य श्रहिंसा, हो ज्यों रहेना रे । कि श्राप विचारों रे । है ।

कर्मोदय से दु ली जीव को, देख हृदय भर लाना रे। **उन दु लों को दूर इटाने, शक्ति लगाना रे**।

कि आप विचारों रे। ७।

अन्धा लूला और अपाहिज, भूखा प्यासा होवे रे । उसकी रक्षा करना इसमें, द्रव्य श्रहिसा होवेरे।

कि आप विचारों रे। 🕒

श्चारम धर्म से पतित जीव को उस ही में थिरकरना रे। भाव श्रहिसा यही इसे कर, भव जल तिरना रे।

कि आप विचारोरे। ९।

श्रीहरिसागर गुरु गंगानायक, भाव दया मगटावें रे । दिव्य कवीन्द्र उन्हीं की निर्मल कीरति गावें रे ।

कि आप विचारो रे। १०।

ा। निज घर पर घर स्वरूप गहुं ली। १३।

राग-जिन धर्मका इंका आलम्में बजवा दिया वीर जिनेश्वरले

परघरके मेमको त्यागोसभी, अपने घरका कुछ ख्याल करो। गुरुराज सुनाते हैं बोध यही, सुख से अपने घरमें विचरो टिरा पर घरमें जो नर जाते हैं वे पराधीन बन जाते हैं। पद पद उकराये जाते हैं, ऐसे दुःखको कैसे विसरो । पर०।१ह पर घरमें जो सुख दीख रहा, है अन्त उसी में दु:ख महा। ज्ञानी पुरुषोंने भेदलहाः कुछ ज्ञान दृष्टिस देखा करो ।पर०२। जाना नरकों में फिर है भला, पर परघर तो है बूरी बला। जाने पर जाय नहीं निकला, बस पड़े वहाँपर सड़ा करो ।पर । ३। परघर धोखे की टही है, शाँताप भरी वह भट्टी है। श्राखीर में तो वह मिट्टी हैं, वहाँ जा क्यों जीवन रूवार करो ह पर घरमें भूत विलास करें. श्रानं वालों का हास करें। बेहोस बना सर्वस्व हरें। उनसे अब पींड छुडायां करो। पर ०।५१ निज घरमें है स्वाधीनपना, जिसमें सचा सुख है इतना। कि है जिससे सुर सुख सुपना अब उससुखका उपयोग करो है निज घरमें ही सुखसागर हैं, निज घरमें ही भगवान रहें। निज घरको बात को कौन कहें, तातें उसके पथ को पकरो। 😅

इरिसागर गुरू गणनायकके, उपदेश मदीप को लेकरके। मारगदेखो श्रपनेघरके,तव दिव्यक्वीन्द्र सुकीर्ति करो ।पर०।⊏।

। सद्गुरु वन्दन गहूंली । १२।

राग-पया कहुँ कथन में मेरा नाथ क्या कहुँ कथनमें मेरा।

भाव से वन्दन मेरा नाय, भाव से बन्दन मेरा। काटो भव दु ल फैरा नाय, भावसे वन्दन मेरा। टेर । वारक सद्गुरु चरण कमलमें, कीना ब्राज बसेरा। मानत हु ऋव मैने पाया, भववन ऋन्तिम छेरा नाय । भाव०। १। संसार कारागारमें छाया, मोह निविड अंथेरा। सद्गुरु सूरजञ्जाज मिले तन,पकटा पुरुष सबेरा नाय।भाव०।२। काल अनादि श्राप्तम धनका. लूटे करम लूटेरा। संबलसुभरगुरूचरनश्रनतें,भिटगया श्राज विखेरा नाय ।भाव०३। अन्यकारका बाच्य गुपट है, क्पट बाच्य उजेरा । श्रनाकारका नाशक तार्ने, गुरुपद द्यर्थ सुहेरा नाय । भावसे०।श सद्गुरु बोघ सुधा का प्याला, पीवन होत ऋडेरा । तत्त्व अगन्त्रीका होता है, अपने आप निवेस नाय ।मावसे०।४।

कपट रहित जो हो रहता है, सुखद सुगुरू पद चेरा।
सुखसागर भगवान रहे नह, शिवरमणीसे घेरा नाथ।भाव०।६।
श्रीहरिपूज्य सुगुरू सेवामें, नित नित वन्दन मेरा।
थन्य कवीन्द्र वही नर हैं जो, होत गुरुका पूजेरा नाथ। भाव०७।

। सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणिमोक्षमार्गः गहूं ली । १५।

। राग-माढ।

है जिनवाणी, गुरु गुणखाणीः निरूपम सुख दातार ।

हे भविमाणि? निजहितजानी, देखो तत्त्व विचार । टेर । सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चरण हैं, जिन वाणी का सार । उनका ही उपदेश करें गुरु, सुन होना भव पार । हैजिन०।१। ये तीनों ही रत्न अमोलक, पूरण सत्य स्वरूप । पाता है सो हो जाता है, त्रिअवन का भी भूप । हैजिन०।२। वाहिरके जितने हैं भूषण, दूषण से भरपूर । रिव शिश से भी बढ़कर ये तो, प्रकटाते हैं नूर । हैजिन०।३। नरभवमें निज वीरज योगे, प्रकटावे सो धन्य । परमातम पद पा सुख भोगे, सहज समाधि जन्य । हैजिन०।8

सम्बन्दर्शन झान-चरण की, पूरण प्राप्ति वही ।
है संसार श्रसार उसी में केवल सार सही । हैजिन०।५।
इन्ही तीनों के धारक ही हैं सुलसागर लयलीन ।
वे ही हैं भगवान उन्हीके, मुक्तिरमा स्त्राधीन । हैजिन०।६।
श्रीहरिसागर गुरू गणनायक, के उपदेश यही ।
सन्मय जीवन में हैं कीरति, टिच्य कवीन्ट कही । हैजिन०।७।

। समकित लक्षण गहुं लो । १६।

गग-हो प्रोतम जी पीत की रीति श्रनित्य तजी चित्त घारिये।

सुन है बहेनी ? गुरुवर दें उपदेश हृदय में धारना।

उससे जगमें फिर अपना उत्तम जीवन निर्धारना। टेर।

नव सन्वों की पहिचान करो उनमें निश्चल अद्धान धरो।
समिकत गुणुडाणे में विचरो। सुन है वहेनी ? ।१।
समिकत री सार सटा जानो, उससे ही धर्म किया टानो।
ता विन मत धर्म सफल मानो। सुन है वहेनी ? ।२।
समिकन कें लक्षण पाँच कहे, अपराधी पर भी न कोय वहे।

उपश्म समता में नित्य रहे। मन है वहेनी ? ।३।

नर सुर सुख हैं सब दु:खभरे, अक्षयसुख मोक्षकी चाह करे। संवेग यही दिल वीच धरे । सुन हे वहेनी ? संसार को कारावास लखे। तासों निर्वेद सदेव रखे। धर्मामृत रस को नित्य चखे। सुन हे बहुनी? लख दीन दीन दुखिये मानी, उनकी अनुकम्पा दिल ठानी। करे रक्षा नित निज हित जानी। सुन हे बहेनी? जिन कथित वचन सबही सच हैं, मिथ्या मतिका जहाँ लेश न हैं। श्रास्तिकतामें यों रंग रहे। सुन हे बहेनी? समिकत सुखसागर का तद है, पहोंचे लय होते सङ्गट है। भगवान वहाँ मिलते भट हैं। सुन हे वहेनी ? ।=। गरुहरिसागर गणनायक हैं, सुलकर शुभ समिकत दायक हैं। देते हैं बोध जो लायक हैं। सुन दे बहेनी ? जिनने गुरु सुरतर पाये हैं। समिकत वाँ छित फल खाये हैं। वे ही कवीन्द्र मन भाये हैं। सुन हे बहेनी ?

। समकित दूषण परिहारोपदेशगहूं ली।

राग-मेरे राम अयोध्या बुलालो मुक्ते। निर्मल समकित को ऐसे तूं धार सखी, पंच दृषण द्र निवार सखो। टेर। वीतरागी के विमल सिद्धान्त में शद्धा कभी ! क्रना नहीं वस मानना हम श्रज्ञ क्या जानें सभी। गुरुगम को तू पाके विचार सखी। निर्मल० ।१।

सक्ष्म अयों से भरे सिद्धान्त है संसार में।

फिर शक्ति इस फैसे करें उनके सभी निर्धार में।

उनसं जोड़ तूं बुद्धि के तार सखी ! निर्मल० |२| ज्ञानावरणी कर्म का क्षय हो तभी पत्यक्ष मे ।

तद्रप होगा ज्ञान भी वस सर्वया उस पक्षमें।

वातें तु न चपलता धार सखी। निर्मल० ।३। कॉक्षा क्रमत की वाँछना है राग होप जहाँ भरे। हो रागद्वेपाधीन ही स सारमें जनमे मरे।

ऐसी कॉझा को चिच से टार सखी। निर्मल । श है विचिकित्सा यहीं की धर्मफल है कि नहीं।

इसको हृदयसे दूर कर मुन धर्मफल है ही सही। वार्ते धर्म में भाव सुधार सावी। निर्माल०।॥

मिथ्यात्विगुण की भी मगंसा भूलकर करनी नहीं। दे विप मिला जो द्घ वह क्या प्राण को इरता नहीं। सातें ऐसी मगसा विसार सखी। निर्म ल० ।६। मिथ्यात्व जन की सङ्गति को दूर ही से त्यागना।
जिससे लगे सम्यत्तव की शुभ वासना को दागना।
निज सङ्गति शुद्ध स्वीकार सखी। निर्मल०। १९१
पूर्णतां को पालिया उनके लिये अपवाद है।
वे जो करें करते रहा वे सर्वथा आजाद है।
हममें न हैं वसा विचार सखी। निर्मल०। १९१
अति दिन्य सुखसागर महा भगवान हरिसागर गुरु।
उपदेश देते हैं यही इसमें प्रमादं मा कुरु।
यही साधु कवीन्द्रों का सार सखी। निर्मल०। १९१

। श्रावक धर्मोपदेश गहूंली । १८।

राग—महावीर तुम्हारी मोहन मूरति देखी मन ललचाय०।

हपदेशें सुगुरुधर्म उभय भव भय का नाश करे। टेर।
दुर्गित पढतोंको रक्षे, सुगति को फिर जो वक्षे।
वह धर्म कहा निष्पक्षे, जिसमें दो हैं भेद परे। उपदेशें०।१।
यहि-यितयों ने सुलकारा, वह देश सरव से धारा।
होते यहस्थ के आचारा, जिनका वर्णन यहाँ करें। उपदेशें०।२।
जीवादिक तत्त्व विचारे, निज अद्धा को निर्धारे।
नित वर्ते मार्गानुसारे, समकित दर्शन शुद्ध धरे। उपदेशें०।३।

त्रस निरापराधी पाणी, की सेच्छा न करे हानी।
निज शक्तिको पहिचानी, स्थूल ऋहिंसक भाव घरे। उपदेशें । १८।
इत्यादिक नारह ब्रतको, पालें भरें सुकृत को।
सेवें श्रमणोंके पदको, पंचम गुणठाणे विचरें। उपदेशें , ११।
उत्कृष्ट भावके धारी, वारम देवलोक विद्वारी।
क्रमसे होवे शिव संचारी, श्रात्मिक श्रक्षय सौक्यवरें। उपदेशें ० ६।
सुखसागर श्रीमगवाना, गुरु हरिसागर गुणवाना।
उपदेश करें चितलाना, वर्णन दिव्य कवीन्द्र करें। उपदेशें ० ७।

। वारह व्रतकी गहूंली । १९ ।

। राग—धनासिरी ।

बारह ब्रस ये जान सखीरी ? बारह ब्रस ये जान । धारत होत कल्यान । सखीरी । टेर । जान ब्रूफकर विन अपराधे प्राणातिपात न ठान । सखी०। कन्या गी-क्षे ब्रादि विषयमें, त्याग अलीक विधान । सखी०।१। राजनियमसे द्रिहत हैं वह, छोड़ अद्चाटान । सखी० । इह परलोक विडम्बन हेतु, सब मैथुनसे तान । सखी० ।२।

निज धन-धान्यादि परिग्रहका, कर लेना परिमारा। सखी । दशों दिशामें जाने आनेके नियममें रख ध्यान । सखी० ।३। भोगोपभोग प्रमाण में निशदिन, हो रहना सावधान। सखी०। पापोपदेश मचार न करना, अनर्थ दंड प्रधान । सखी० । ।। दो घडि राग-द्वेष विना करो, सामायिक सन्धान । सखी । दिग्- त्रत छूटें नियमित करना, देशावकाशिक मान । सखी । ६। पर्व तिथिमें पौषध पुष्टि, उपवास पूर्व क जान । सखी० । अतिथि संविभाग वही जो दियासुपात्र में दान। सखी । ६। पंचागुवृत हैं तीन गुगावृत, चउशीक्षा पहिचान । सखी० । सब मिल होते श्रावक के ये, वारह वृत सुमहान् ।सखी०।७। समिकत पूर्वक आराधन कर, पहुंचे अमर विमान । सावी । क्रमसे सुखसागर को पाकर, होते हैं भगवान । सखी० । न श्रीहरिसागर गुरु गगानायक, देवें स्वृत दान। दिव्य कवीन्द्र वृताराधकके करते कीरति गान । सावी० ।९।

। गुरुविनय गहूंली । २० ।

। राग—ज्ञानादिक गुण संपदारे तुज अनन्त अपार। सुनावें हे सखी ? हितशीक्षा श्रीगुरुराज।

श्रातम परिगात जो करें सखी पावें श्रविचलराज |टेर|
मूल कहा जिनधर्मका सखी, विनय जिनेश्वर देव |
मूलदें विनयी जीवको सखी, सद्गुणगण स्वयमेव | सुनाः व

च्य्रभ्यन्तर तप भेद है सखी, विनय सदा सुलकार। कर्म सघन वन दाइमें सखी, अद्भुत रूप तुपार । सुनावें । रा नामादिक निक्षेपसे सखी, विनयके चार मकार। भाव विनय के धारते सखी,होत हैं वैद्रा पार । सुनावें ० ।३। उत्तराध्ययन सुसूत्रमें सखी, प्रथमाध्ययन विशेष। विनय स्वरूप विचारते सखीः न रहे लेश कलेश । सुनावें । १८। मन वच काया-शुद्धि से साबी। गुरु आज्ञा अनुकूल । श्राचरणा को धारते सखी, शुल बने सब फुल। सुनावें । धा गुरु ईर्प्या निन्दा करे सखी, वक्तवि उतपात । रेसे श्रविनयी श्रातमा सखी, खावें जम की लात । सुनावें ०।६। जो है विनयी आतमा सखीः रहते निर्भिमान । सुखसागरभगवान वे सखी,त्रिभुवन तिलक समान । सुनावें०७। श्रीहरिपूच्य सुगृह मिले सखी, करना विनय अपार ।

। तामस - समतापदेश गहुंली । २१।

दिव्यक्षीन्द्र सभी करें सखी। निर्मल कीर्ति प्रचार। सनावें । न।

राग—यन हो ऋषभदेव भगवान युगला धर्म निवारन वाले। सुनलो सुनलो गुरुषपढेशाः जो निज घोर ऋविद्या टाले। टेर। हैं उलट वरण दुःखखान, दें सुलट वरण शिवदान । तामस समताको लो मान,दोनौँ के हैं पन्थ निराले।सुनलो०१। हैं उलट सुलट दो व्यक्ति, गुगा बाधक साधक शक्ति। क्रमसे बन्धन और मुक्ति-के हैं ये देने वाले। सुनलो०। रा हैं उलट सुलट दो चालें, स्गति, कुगति से बचालें। हैं भारी भेद विचालें, माने सारे मतवाले । सुनलो० ।३। हैं उलट खुलट दो चकरः लेते जो इनसे टकर। वे लख चौरांसी चकर के खाने न खाने वाले। सुनलो । १९। हैं उलटवरण गुणवाती तामस है मोह का नाती। होता है नाना भाँती, त्यागें शिव जाने वाले । सुनलोवाध। जिन सुलट वरण को जाना, वे सुखसागर भगवाना। पावें निज द्रव्य खजाना, हरि पूज्य विशद गुरावाले । सन। ६। हैं सुलट वरण जयकारी, समता सुव्रतिजन प्यारी। करें कीर्ति कवीन्द्र अपारी, पर पार न पाने वाले। सुनलो । ७

। भाव स्तव गहुं लीं ।२२।

राग – मारु – कहो सब जय २ श्री महावीर

नमोरे नमो श्रीगुरु गुगा भगडार ॥ टेर ॥

भाव स्तव के पावन पदका, श्ररथ दिखावन हार ।

वीतरागगुगा बोध विधायक, निजगुगा निर्मलकार । नमोरे ०।१।

श्रमण ऐरवर्यादिक पूरणः त्रिभुवन जनआधार।

श्रीमहाबीर जिनेश्वर स्वामी, श्रादिकर श्रवतार । नमोरे० १२११ तीर्यद्वर सहसम्बुदातमा, पुरुपोत्तम सुलकार । पुरुषसिंह भवर पुरवहरीक, गधहस्ति गुर्णधार । नमीरे० ।३। लोकोत्तमवर लोकनाथ नितः योग क्षेम करतार । यथावस्थित वस्तु मवाशक लोक प्रदीपाकार । नमोरे० १८। मानि भाव विभासन समस्य, केवल क्वान प्रचार । लोक मधोतक भयहर अभयद, चक्षु श्रुतदातार । नमोरे० । धार सम्यग्दर्शन ज्ञान चरणमयः मारग देशकसार। शरणागत मतिपालक सुतकर,अद्भुत रक्षाकार । नमोरे० ।६। श्रुत चारित्र वरम उपदेशक वरम सारिथ मनुहार। गुण सम्पन्न विशेषण वाले. वीर मन्न नयकार। नमीरे० 10, सीजिनगुरा निज श्रातम के गुरा, दोनों है इकसार । पर निभाव परिशासिके कारण, अन्तर पड़ा अपार । नमोरे०।=1-परपरियासितज निजपरियातिभज गुरुउपदेशविचार । काल लब्धि परिपाक हुए से होवेगा निस्तार ! नमोरे । १। श्री भगवती जी सूत्र विषयमें, यों भाषें गराधार ।

श्रीहरि पूज्य गुरु मित बोर्जे होत कवीन्द्रोद्धार । नमोरे०।१०1

पर्याप्ति स्वरूप गहुं लो । २३।

। राग -- आशावरी । अवधू सो जोगी गुरु मेरा।

भावें वन्दों वार इजारी श्रीगुरुवर उपकारी रे भावें । टेर । त्रातम तत्व परम हितकारीः सत्य स्वरूप दिखाया कर्मजनित पर्याय विचारे, ऋद्भुत बोध निपायारे। भावें० ।१। विज आहार शरीरादिक की, पर्याप्ति छह पावे। कर्मोदय से कैसे आतम, श्रीगुरुराज वतावेरे। भावें०।२। निज उत्पत्ति स्थानक पहुँचा, जीव लहे आहारा। ताको खल रस रूप करे वह, पर्यापित आहारारे। भावें०।३। विस शक्ति से रसकी परिणति, सात धातु वन जावे। . शरीर पर्याप्ति कहते जासों. जीव शरीर वनावे रे। भावें 181 जातें होता इन्द्रिय रूपे, धातुन का परिगाम। इन्द्रिय पर्यापति ये जानो, करण पर्याप्ति तमामरे। भावें।४। श्वासोछ्वास तथा भाषा मन, योग्य सुपुद्गल दलले। तत्तर्र्षे परिगात जासों, छोड़ें त्रालम्बन लोरे। भावें।६। . उस उस नामें हैं पर्याप्ति, जीव शक्तियाँ जानों। · খুरीकर पर्यापति मरते, लब्धि पर्यापता मानोरे । भावें ০। । चड एकेन्द्रिय विकल श्रसनी-के पर्यापति पंच। अह सन्ती पचेन्द्रियके यों, हैं पर्यापति मपंचरे । भावें ० |८।

समय मात्र त्राहार पर्याप्ति, त्रान्तर मृहरत पंच । निजनिज शक्ति पूर्या करते जगमें नर तिर्यचरे । भावें ० १९० -ऐसे त्रातम निज गुणमें जो सारी शक्ति लगावे । श्रीहरिष्ठ्य विशद गुण वनके,दिन्यकवीन्द्र सुगावेरे । भावें ० १९००

श्रीमहाबीर समवसरन गहूंली । २४।

जिल्ले की देशी।

निभुवन तारक वीरजी जग उपकारीरे त्यकारी जिनराज ।
निभुवन तारक वीरजी, जग उपकारीरे तुजाख । देर ।
चडद सहस ग्रुघ साधु महान्रत धारीरे हितकारी महाराज ।
संग्म साधक साधवी इतिस हजारीरे ग्रुजाख । १ ।
विद्यमान जिन शासन उज्जलकारीरे अनगारी सिरताज ।
मभु आज्ञा के पालक उन्न विहारीरे मुजाख । २ ।
गामानुगाम विचरता पावनकारीरे अवहारी शिवसाज ।
रागगृह नगर सुगुणसिल चैत्यमभारीरे मुजाख । ३ ।
विरचे समवसरन योजन विस्तारी रे मुखकारी मुरराज ।
चडमुखतोरख दृढ धजा मनुहारी रे मुजाख । १ ।
रतनसिहासन पूरव दिशि,मुखकारीरे गुणधारी जिनराज ।
वारह परिपद् को उपदेशे भारीरे मुजाख । ४ ।

चतुरङ्गी निज सेना को सिर्णगारीरे नहिं पारी नरराज।
श्रेरिणक वन्दे सिवनय भाव सुधारी रे सुजार्ण। ६।
करे मुक्ताफल साथियो मङ्गलाचारीरे गुणधारी धनगाज।
गावें चिलगादिक पटराणी सुन्दरी सारीरे सुजार्ण। ७।
समिकत सुन्नतको लहे शिवकारीरे नरनारी समाज।
श्रातमगुर्ण उजवालें वोध विचारी रे सुजार्ण। ६।
जिनवाणी भवसागरमें निस्तारीरे दुखहारी वरपाज।
पाकर परिपद् निकसी दिशि श्रनुसारीरे सुजार्ण। ९।
श्रीहरिपूज्य प्रभुतर्गी वलिहारीरे जयकारी महाराज।
दिव्य कवीन्द्रे कीरित नित्य उचारीरे सुजार्ण। १०।

ं श्रीगीतमस्वामीकी गहुं ली । २५।

सीता माता की गोदीमें हनुमत डारी मूंदडी इस रागमें।

वन्दो वीर विभु के शिष्य मथम गरा धार कोरे। चडिंघ संघ सुनायक इन्द्र भूति अरागार को। टेर।

> जिनका गोतंमगोत्र पवित्र । जगमें जो आदर्श चरित्र ॥

धारें सात हाथ श्रीर उच्च विस्तार को रे। वन्दो । १।

जिनका समचौरस संठान । पूरुष लक्ष्या परम मधान ॥ धारे श्रदुभ तरूप श्रनुप मवर श्राकारको रे । वन्दो० ।२। जिनका बज्ज ऋषभ नाराच । संहनन श्रस्थि सध निकाच ॥ . न लहें कोई भी सुरनर जिनके बल पार को रे। वन्दो०।३। जिनका वर्ण सुवर्ण समान। दर्शन दे आनन्द महान ॥ करते विश्व हृदयमें अनहृद्ध मेम मचार को रे। वन्दो । १८। जिनका उग्र तपोमय जीवन । करते शासन की परभावन ॥ भव भय हरते घरते मितिदिन शुद्धाचार को रे । बन्दो०।५। शत काल में जिनका नाम। जपते इरता विघ्न तमाम ॥ करते मंगलकारी नित्य महादय सार को रे। बन्दो० ।६। श्री हरिप्ज्य गुरु गुणवान। गौतम स्वामी का शुभध्यान ॥

करते पावे दिव्य कवीन्द्र भवोदिय पारकोरे । वन्दो० १७१

श्री गौतम स्वामी जी की गहुं ली। २६।

रावणने शक्ति मारी हरके तान तान तान इस रागमें। सेवो प्रेम धरीने गौतम गुरु गराधार धार धार।

जानों तीन भुवनमें सद्गुरु सेवा मार सार सारा टेसा जो करम गहन वन भारी. के दहन समर्थनकारी। देदीप्यमान तपधारी, वंदो वार वार वार । सेवो० । १। तप तपकर कर्म तपावे, निज आतम को यों तावे। पापों के ऋछूत बनावे, जो इकतार तार तार । सेवो० । २ । श्राशंसा दोष पहारी, भीरुजन को भयकारी। सर्वोच कोटि संचारी, तप श्रोधार धार धार । सेवो० । ३ । जो परीपहादिक दुश्मन, नाशन में हैं निर्दयमन। श्रातम निरपेक्षी वर्तन, घोराचार चार चार ! सेवो० । ४। जो घोर गुणेँ को धारें, तप घोर सदा विस्तारें। श्रितिघोर ब्रह्म व्रत सारें, मोग विसार सार सार । सेवो०।५ संस्कार विद्दीन शरीरा, संक्षिप्त विपुल गम्भीरा। तेजो लेश्या गुर्ण हीराः अपरम्पार पार पार । सेवो० (६): चउदस पूरवी चङज्ञानी, सर्वाक्षर योग विधानी। अव्याक्षर पूरन वार्गा, है श्रीकार कार कार । सेवो० 101

नाति निकटे छति दूरे, सविनय शुभ व्यान सन्हें । मश्चवीर चरण चित धूरे, नित अनगार गार गार । सेवो०।≈। उत्कटुकाशनके घारी, नियमित दृष्टि विस्तारी । सम्यग्घ्यान सुकोठ विद्वारी, तज ससार सार सार ।सेवो०।९। श्री दृष्टि पूज्य गुरु गोतम हें, सेवत दृरते अवतम है । फिर तो दिव्य कवीन्द्र सुगम हैं, बेड़ापार पार पार सेवो०।१०।

श्रीगौतम स्वामि जी की गहुंली । २७।

अय दिल प्रभु की याद में गाफिल ना हो जरा इस राग में।

श्रीगीतम तत्त्व विचारणामें भाव यों घरा। देर।
महत्त श्रद्धा है जिन्हों को, तत्त्वों क मित।
फिरभी द्वाद्यस्थक भाव में, सहाय तां है भरा।श्रीगीतमः।१।
जनमाणे चिलयें सूत्र में जो श्र्य है रहा।
उसमें हैं काल विचार विपयिक सहाय दिलजरा।श्रीगीतमः।२।
कीतुहल भी जिनको हुआ हे कैसे यों सही।
श्रीवीर मधु निज झान सेती निञ्चय है करा। श्रीगीतमः।३।
पहिलो न यी श्रद्धा वही उत्पन्न है हुई।
उत्पन्न श्रद्धा भाव जिनके हैं हुआ हरा।श्रीगीतमः। १।

जात श्रद्धा में तथा उत्पन्न श्रद्धा में। है कार्य कारण रूप भारी भेद तो भरा। श्रीगीं०। १। श्रद्धा शंसय कौतुहल वाले गोतम स्वामी ने। श्रीवीर प्रभुके पासमें जा मश्न यों करा। श्रीगों०। ६। श्रीहरि पूज्य पश्च जग जीवन पावन वाणी से। सुकवीन्द्र वंदित गौतम स्वामी शंसय को हरा। श्रीगों०। १०।

सद्गुरु वेषि प्याला गहुंली । २८।

। दांडिया रस के राग में ।

पीलों ने प्रेम धरी रे सुभिवयाँ, पीलों ने प्रेम धरी।
सद्गुरु वोध सुधा का प्याला, पीलोंने प्रेम धरी।। टेर।
अजर अमर पद पावो नियमसे, जानो न जुंड जरो।
रे सुभिवयाँ पीलोंने।१।
लोक अलोक के विविध स्वरूप को, देखों प्रत्यक्ष करी।
रे सुभिवयाँ पीलोंने।।२।
हदय नयन निज निर्मल होवे, घोराँधकार टरी।
रे सुभिवयाँ पीलोंने।।३।

संसार सागर दु खों का त्राकर, जल्दी से जाओ तरी। रे सुभवियाँ पी लोन० 181

त्रष्ट महा भय मेघघटा वह, जावे सभी निखरी। रे सुभवियाँ पी लोने०।४।

अनहृद आतम शॉित समर्पे, ताप अमाप हरी । रे सुभवियाँ पी लोने० ।६।

"शुभस्य शीद्रा" वोध न भूलो, गतकाल न आवे फरी। रे सुभवियाँ पी लोने०।७।

सुल भगवान इरि पूज्य गुरू सेवो, वास्त्री क्वीन्द्र उचरी । रे सुभवियाँ पी लोने० ।⊏।

प्राणी प्रवाघ गहूंली।२६।

। राग—मादः।

भाणी सुनले गुरु उपदेश, प्राम्मी सुनले गुरु उपदेश । ⁷ सुग्रुघ वाणी सुधाका खेश,हरे काल कराल कलेश । प्राम्मी०।टेरा काम-क्रोथ-मट-लोभ-मान-हर्ष, य्र तर शृतु छह । विग्रह करके निग्रह करके पटके नीचो तह । कव तु. चेतेगा य्या कह । प्राम्मी०।२। काम कहा वह जो होता है, विपयों से सम्बन्ध। स्याग अरे तुं शीघ उसे श्रव। क्यों करता मितवन्ध। फोकट होता है तुं श्रन्ध। माणी०।२।

श्रन्तर श्रातम सद्गुगादाहक, श्रद्भुत श्राग्न रूप।
निज पर को हानिकर होता, ह्वो दे भव कूप।
ऐसा है रे क्रोध स्वरूप। प्रागी०।३।

श्रीरों के गुराको क्यों निन्दे, ईर्ष्या से सानन्द। मदगद सन्निपात घिरा तूं क्यों करता आकन्द।

कव तूं त्यागेगो यह फंद। माणी०।।।।
कुग्रह रूप परिग्रह उसका योग्य सदा है त्याग।
राग धरे तूं त्याग करे नहीं, लोभ समुद्र अथाग।

अब तो चेत अरे महा भाग माणी०। १। जात्यादिक जो आठ मकारे, निज गुण रोधक दुए।
भान महागिरि है उसपे चढ़, क्यों सहता है कए।

गिरकर आखीर होगा नष्ट माणी ०। ६।
भव वर्द्ध के साधन कों साधे, विषय कषाय अनेक।
उनहीं में तूं हर्ष मनावे, भूला आत्म विवेक।
ऐसी क्या है तेरी टेक। माणी०। ७।

मुख सागर भगवान् सदा हिरि-सागर गुण गम्भीर । चरम्म शरम को दिव्य करीन्द्रो, धारो होकर धीर । जिससे पहुचोगे मनतीर । माणी० । ८ ।

सद्गुरु संगति गहूं लो। ३०।

। पथीडा सन्देशी कें जे मागवोर ने० इस राग में ।

सद्गुरु स गे समिकिन रह सुहाबना । अह लगे तब राग द्वेप होय नाश जो । अनुपम आतम ज्योति मकटे औं कटे माया बल्ली रहे न पर की आश जो । स०१।

काल अनादि पुद्गल सगी आतमा

गुरु गम विन तज निज घर परघर भटकाजी। जनम मरणके दुस्सह दुख को भोगता

विविध गतिमें वेप धरा नित नटका जो। स०२।

श्रापंदेश आरजकुल श्री जिन धर्म की माप्ति हुई है अब कर्जव्य हमारे जो।

श्रीसद्गुरु श्राधीन हुए सव सीखले

माया शल्य विहीन वृत्तिसे धारें जो। स०३।

स्थूल-ऋणुत्रत-गुण त्रत शीक्षा त्रत धरें

क्रमसे जिनकी वारह सँख्या होवे जो।

सुव्रत धारें विधि पूर्वक गुरु पास में

देशविरति पंचम गुणठाणे रहेवेंजो । स०४।

परमगुरु प्रभु वीतराग महावीर के उपासकाँग में वारह व्रत के धारी जो।

निरतिचार जीवन प्रतिमा धारी हुए त्रानंदादिक श्रावक जाउं वलिहारी जो । स०५।

सद्गुरु तारें तिरें स्वय भवसिंधु से करें करावें सदा क्रिया निष्णाप जो।

सम्यक् तत्व निरूपक साधु धर्मके लीन रहें नित हरें जीव संताप जो। स०६।

मुखसागर भगवान् गुरु हरि पूज्य हैं

परम महोदय पंथ के सारथ वाह जो।
पक्षपात विरहित हितकारक लोक के

दिव्य कवीन्द्र सुवर्णित वचन प्रवाह जो ।स०%

चौमासी व्याख्यान गहुं ली। ३१।

। राग-पनिहारी।

महलमय दिन ग्राजका सुन साहेली,

श्रारम्भ वर्पाकाल साहेली।

दर्शन श्रीगुरु मेच के सुन साहेली, अन्तर्भ करके हों सुग हाल साहेली। देर!

पाप ताप ऋतु नाश से सुन साहेली,

फेला शानि समीर साहेली।

टुष्ट रजा राशि मिटी सुन साहेली,

पाकर वार सुनार् साहेली। १।

धर्मलना लहरा गई सुन साहेली,

भविजन हृदयोयान साहेली।

मनवनयाके जीवका सुन साहेली,

है आराम महान साहेली।२।

मोर महोदिशिशोष को मुन साहेली,

पाया त्राप ही त्राप साहेनी।

सामायिक मध्या नदी मुन माहेली.

हरे मभी मनाप साईनी। ३।

श्रावश्यक श्रातम क्रिया सुन साहेली, खेती सुन्दर रूप साहेली। भव्य जीव खेडुत रचें सुन साहेली, मकटे धान्य अनूप साहेली 181 पौषध पौंधे धर्म के सुन साहेली, देते हैं फल फूल साहेली। नर-सुर-शिव-सुख रस भरे सुन साहेली, सहज समाधि मूल साहेली। १। श्रम् पूजा की नाव से सुन साहेली, सुखसागर के वीच साहेली। लीला में लयलीन हो सुन साहेली, हरें करम मल कीचं साहेली। ६। श्रीहरि सागर सद्गुरु सुन साहेली, हैं शुभ मेघ समान साहेली।

दिव्यकवीन्द्र सुकीर्ति की सुन साहेली, यों नित छेडें तान साहेली । ७।

चौमासी व्याख्यान गहूंलो । ३२।

। राग—नाग जीकी । मल्हार ।

चौमासी हित देशनारे वारी, धारत चिच-धारत चित्त उल्लास। मव भय भीरू भव्यके रे भव भय भीरु भव्य के रे बारी। तोडत है भव-तोइत है भव पास । चौमासी हित देशनारे । १। यातम गुणघाती सभीरे वारी, वहसावध-वहसावद्य व्यापार । करना ही नहीं चाहियेरे । करना ही नहीं चाहियरे बारी, जीव दया टील-जीव दया टील धार । चौमासी हित देशनारे । २ । फागुन आदिक मास में रे वारी तिल वान्यादिक-तिल घान्यादिक सार । स ग्रहना नहीं चाहिये रे । संप्रहना नहीं चाहिये रे बारी। जीवोत्पत्ति-जीवोत्पत्ति विचार । चौमासी हित देशनारे । ३ ।

्रियमस्य वाबीसाँ तथा रे वारी। । श्रमन्त काय श्रमन्त काय वत्तीस । खाना कभी नहीं चाहियरे । खाना कभी नहीं चाहियरे वारी। मानो विसवा-

मानो विसन्ना वीस । चौमासी हित देशनारे । ८।

श्चन जाने फल को सदा रे वारी। पत्र शाक विन-पत्र शाक विन शोध। विगड़े आटा घी विपे रे। विगड़े आटा घी विपेरे वारी। माँस दोप अवि-

माँस दोष ऋविरोध । चौमासी हित देशनारे । ५ हिच्छारोधन भावसे रे वारी, वहुविध तप वि-वहुविध तप विस्तार । भवदवताप निवारगोरे,

भवद्वताप निवारणोरे वारी। शक्ति सहित चित-

शक्ति सहित चितधार । चौमासी हित देशनारे ।६। श्रीहरि पूज्य कृपा थकीरे वारी, समकित निर्मल-समकित निर्मल सार । दिव्य कवीन्द्र लहें वहीरे ।

दिव्य कवीन्द्र लहें वहीरे वारी। अक्षय सुख भं-

अक्षय सुख भएडार । चौमासी हित देशनारे । ७ ।

सामायिक गहूंली । ३३।

। अय दिल प्रभु की याद में गाफिल ना हो जरा। इस तर्ज में । सामायिक धारी श्रावक साधु तुल्य हो रहें । टेर्। हैं निन्दक वन्दक एक से श्रोर मान तथा अपमान। तस थावर प्राणी मात्रमें समभाव जो रहें। सामायिक०।१। ससार जहेरी वृक्षके त्राकृर जो दो है।
उन राग द्वेपको तोडके ज्ञानादिक लाभ लहे। सामायिक । दा सामायिक समयिक त्रादि है सामायिक त्राठ प्रकार। उनको धारे वे जीव त्रायने दुख को दहें। सामायिक । ३। भाव त्राहिसक सत्यवाणी पाप रहिन त्राचार। थोडे अक्षरमें कमे नाशक वाग को वहे सामायिक ० १।

तीन पढ़ों में ज्याप्त ऐसी द्वादशागी है।
सुनकर अनुशीनन सबया श्रजगामर भाव गहै। सामायिक ०५०
जो वस्तु मात्र को जानके, हेयोंका त्याग करें।
सुत्रत सामन में परीपहीं को मेम से सहैं। सामायिक ०१६।

सुत्रत साप्तन में परीपहीं को मेम से सहें। सामायिक । इ। इरि पूज्य मञ्ज आदेश से सामायिक नित्य करें। वसदिज्य कवीन्द्र यशोगाया उनकीही सत्य कहे। सामायिक । ७१

। चौमासी व्याख्यान गहूंलो । ३४ ।

। राग स्राशायरो सिद्ध चक्र पद वन्दो ।

चामासी चित धार रे भविका, धर्म विशेष विचार । टेर ।

च्चट् आवश्यक औषध अनुपम, उभय काल लो धार । जिनवर वर धनवःतरी भाषित, भव गद टालन हार ।रे भवि०१ ऋपुनर् बंधकयोगसे कीनाः आवश्यक विस्तार। चहुत पाप रजको हरता है, दे सुख अपरम्पार । रे भवि०।२। न्तज त्राहार शरीर की सेवा, यह व्यापार कुशील। पर्वदिवस में पौषध करके, मोह भूत दो खील। रे भवि०।३। द्रव्य भाव शुचिं प्रति दिन करना, जिन पद पूजा सार। ञ्चातम पूज्यपणो तव प्रकटे, पूजक को निर्धार । रे भवि०।४। इन्द्रिय मनका संयम करके, तज दो विषय विकार। ब्रह्मचर्य आदर्श वही है, अक्षय गुगा आधार । रे भवि०।४। अभयदान सुपात्र तथैव च, मुक्ति विधायक मूल । अनुकंपादिक दान जगतमें, नरसुर सुख अनुकूल । रे भवि०।६। इच्छारोधन तप को धारो, बाह्य अभ्यन्तर भाव। -कर्म निकाचितभी जरी जावे,लव्धि सिद्धि गुरा दाव । रे भवि०७ निन्दा दुर्गति की महतारी, कर निज दिल से दूर। विज दुष्कृत की निन्दा करना, मकटे आतम नूर । रे भवि०।= श्रीहरि पूज्य जिनेश्वरं शासन, दुर्लभ पाया आज। बिद्वय कवीन्द्र सुकीर्तितसेवो, पावो अविचल राज। रे भवि।९।

चौमासो व्याख्यान गहूंली । ३५ ।

। राग गुजरानी रासडा पद्धति ।

षालो भाव धरीने जड़ये ब्याव् भेटवारे० इस तर्ज में । सन्वियाँ भावे सद गुरू बोध हृदय में पारनारे। पाया अनुपम अवसर चौमासे का आज। सर्वे उर्म विशेष प्रकार मित्रक समाज। श्रानी श्रपनी करते कत दुष्कृत आलोचनारे । टेर । (मार्का) श्रावक को ससारमें, लगते है ग्रिवचार्। याचारों को सेवते, शुन चीबीस प्रकार । मिन्या दुष्कुाः उनका देते योग सुधारनारे एसखि० १। (सालो) समक्तित पूर्वक है कहे, श्रावक के ब्रत वार । अप्रमाद परिग्णाम से. तज करके अतिचार। भारापन से ऋम से छर शिव मुख विस्तारनारे । सीव०२ । (सावी) श्रानम गुरा शोधक सदा, पुष्ट निमित्त ममान । शुद्दव गम असी की, सेवा करी सुजान ! सना मेना दती है। श्रनुषम, स्वीकारनारे । सन्वि०३ ।

(मार्गा) बीतराम के मार्ग में , नहीं गा अस्टेप ।

तातें उपशम भाव में, वर्तन करो हमेश।।

है यह पावन जैन धरम का मर्म विचारनारें। सिवि० १।

(सारवी) श्रीहरिपूज्य जिनेश के, सुन ब्रादेश विधान।

विधिपूर्वक पालन करो, पावो पद कल्यान।

तातें दिव्य कवीन्द्र करें कीरित निर्धारना रे। सिवि० ५।

अपृष्ठिका व्याख्यान गहुंली । ३७।

हो जिनराज म्हारी नैया पार लगावो महाराज इस राग में।

है धन भाग सेवो पर्व पज्सन आये सुखकार। टेर।

(साखी) अष्ट करम वारक सही, परम धरम गुगाधाम,
अक्षय सुख दातार हैं, भव्य जीव विसराम।।
हो सुर राज जावे द्वीप नंदीश्वर भक्ति चित्तधार। है धन०१।

(साखी) शाश्वत जिन मन्दिर वहाँ बावनगिरि पर सार।
प्रति मंदिर जिन विंव है शत चडवीस उदार।
हो आठ दिवस करते उत्सव जिन पूजा हितकार। हैधन०२।

(साखी) ऐसे ही इस पर्व में, श्रावक तज परमाद।
उत्सव पूर्वक आठ दिन, धर्म करो आवाद।।

हो गुन्ताज करते धर्मबोध सुन पालो निजाचार । हैंबन०।३।
(साली) सामायिक जिन पूजना, करते तथा विधान ।
आश्रव आँर कपाय को, रोको दुरमन मान ।
हो नित देना टान अभय बहुभय मय जीवों को अपार हिंप०।
(सालो) श्रीहरिसागर सद्गुक, टें टप्टान्त रसाल ।
उपदेशे करते रहो, बरते महल बार ॥
ही निर्भय बोले दिव्य कवीन्द्र जयकार । है धन । ।।

अप्राहिका च्याख्यान गहुंली। ३०।

कुष जाएँ मारामाके मनकी, एनो मन की तनकी लगन की जो । कुए जाएँ। मारामाके मन की इस राग में

सली पर्व पज्सन सेवो, एतो सेन्यॉ पावत मेवोरे ।सली०टेर। आश्रव कारण सब त्यागो, घन मोह निंद से जागोरे । सली० कह मिष्ट वचन वा धनदे, आरभ तजाओ मनदेरे ।सली०।श नेलों से वदि छुडाना, जीवां को अमारि पलानारे । सली०।

मत भेदि छेदि कहा वाणी, कहो वाणी हितगुणखाणीरे ।स ा पर्धन पत्थर सम मानो विष रूप विषय सव जानोरे । सली वृष्णा अति दूर निवारोः संतोप सदा चित धारोरे । सखी 🤏 🧠 मीति को क्रोध हटावे, सुविनय को मान घटावेरे। सखी०। मैत्री को माया मारे सव गुण को लोभ संहाररे। सखी०।श समता संयम सुल धारो, दुध्यान हृद्य से टारो रे । सली ा लख खंडी कनक नितदानी, ना इक सामायिक सानीरे ।सखी० श्रातमगुण पुन्टि विधायि, करो पौपध पुराय कमाई रे ।सर्वी ॰ भौषध सामर्थ्य विद्योना, द्रव्य पूजा करो प्रवीणारे । सखी । द्र त्रिक शुदि तीन अवस्था, जाना पूजा की व्यवस्थारे। सखी व जिन दर्शन दुरित विनाशे, वन्दन मनवाँछित वासेरे।सखी०६। जिन पूजन श्रीसव पूरे, जिन सुरतरु चिन्ता चूरेरे । सखीं। जिन पडिमाजिनसमजाखो, उपकार विशेष प्रमाखोरे ।साखी० **८**। जिन पडिमा दर्शन सारा, वोधत है ऋार्द्र कुमारारे ।सखी०। पिंडमा-श्रुत पंचम त्रारे,भविजन के काज सुधारेरे । सखी०९ सुखसागर श्रीभगवाना, गणनायक गुरु गुणवानारे । सखी० इरिपूज्य नमो हितकारी, कीरति सुकवीन्द्र उचारीरे सखी०१०

अप्राहिका व्याख्यान गहूंली । ३८।

नर देख तू निश्चे जोड़ जगमें नहीं तेरा कोई इस राग में। भवि पुरायोदय फल पावे, महापवे पज्रसन ध्यावे । टेर । बल धर्म विषय विस्तारो, परमाढ हृदयसे टारो । समिकत सुत्रत गुरा वारो, भव भवके दू ख शमावे। भवि०१। 🥦 देश अनारजवासी, श्रीआई कुमार विलासी । सयम हिन शक्ति विकासी. जिनमतिमाके परभावे।भवि०।रा भागाविल कर्म खपावे. सयम में चित्त लगावे । रागादिक भाव गमावे, करुणार्स रेल चलावे । भवि०।३। निज श्रनुचरगण प्रतिवोधे, तापसहिंसा प्रतिशोवे । गोशालक मत प्रतिरोधे पश्च वोरशरण शिव जावे । भवि०।८। जिनमतिमा दर्शन भावे, श्रातम गुरा निर्मल दावे । परमातम भाव निपावे, निज त्यागम ग्रन्थ वतावे। भवि०।४। भाणान्त कष्ट त्राने पर भी तपो नियम ऋति दढतर । क्षोड़ो नहीं निश्चल होकर, घन घाति कर्म हठावे। भवि । ६। ज्यों देवी परीक्षा होती, त्यों बढती है निन ज्योति । शिव रमणी सम्रुख होती, है जगमें कीरति छावे। पवि०।७। श्रीसूर्ययशा भूपाला, निज नियम ऋखंडित पाला । सुरगाने गुण मणि माला, दृष्टॉतग्ररू दिखलाने । भवि०।८। श्रीहरिसागर गुरुराया, उपदेशें वोध सवाया । है दिव्य कवीन्द्रने गाया, धारे गतिचार मिटावे । भविवार।

दीवाली व्याख्यान प्रारंभ गहूंली । ३९।

केशरिया थांस्ं प्रीति लगीरे साचा भावस्ं इस राग में।

धन श्राज सुनेंगे पर्व दीवाली श्रधिकार को। टेर । उज्जयिनीपति संप्रति पूछे, आर्य सुहस्ती स्वामी। स्वामी जानें त्राप मुभी क्या, गुरु कहें तूं नामीरे । धन०१। विशेष पूछे शूत उपयोगे, कहें गुरु तव जाना । मोदक हित्र प्रनिवेश धार मर, हुआ तूं चप गुणवानारे धन । २। वंदन कर संप्रति तव वोले गुरु प्रताप है भारी। मुभागरीव को राज दिया यह, जाउं तुम वलिहारी रे । धन । ३। राज को लीजें उऋण कीजें राजा विनति उचारे। तन मूर्द्या भी नाहै क्या लें, गुरुयों कह कर वारेरे। धन० १। पुरुष मिली सम्पत्ति है यह, तातें पुरुष वढावो । धर्म करो नित पर्वदिनों में, आतमशक्ति जगावोरे । धन०५। सम्मित पूछे लौकिक लोको -त्तर वर पर्व दिवाली । मकटा कबसे पूज्य सुनावो, सुलकर महिमाशालीरे धन०६।

ममृत वाणी ग्रक्त खपटेगें, वीर चरित विस्तारी । व्यवन गर्भद्दरग्र जन्मादिक, छद्द कल्याग्रक भारीरे । धन०।७। मोक्ष गमन कल्याग्रक समये, मकटा पर्व दीवाली । उसदी का श्रिथिकार सुनो श्रक, श्रवधारो इकनारी रे । धन०८। श्रीदरि पूज्य गुरू गग्रा नायक, चरण शरण चित यारी । मविजन पार्वे श्रुत्यम कीरति, दिच्य कवीन्द्र उचारीरे ।धन०।९।

दीवालो व्याख्यान पुग्यपाल स्वप्नफल गहूंली । १० ।

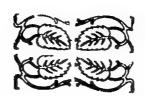
मेखरे उतारो राजा भरवगी दम राग मे ।

भन समय निज जान के कमें खपावन हेतु । भेल महर देवें देशना, बीर विश्व जग केतु । बीर वचन हित कर नमो । देर ।

एपपाल राजा वहाँ वन्द्यन विधि निरमार । ष्ट्र भयद्भर स्वप्न का, भावि फल पूळे सार । वीर० १। पिर जीरणशाल में, गज रहते व्यासक्त । है सुन्दरशाला यकी, रहते पूर्ण विरक्त । वीर० २। वम व्यारे माणिया, गृहस्थात्रमधारी ।

^{िष्}म्य चरमें रत रहें, दीना ले न ग्रनारी। वीर० ३।

वन्दर देखा चपलता, करता हुआ अपार । होंगे ज्ञानादर विना, साधु सिथिलाचार । वीर० १। क्षीर दक्ष कराटक विरा देखा स्वप्न मभार। यंगरागी श्रावक चिरे, कएटक लिंगी विचार । वीर० ११ काग कुचेष्ठा कर रहा, उसका फल मुनि मानी। शुक्द स्वगरा तज कुगरामें, जावें में हित जानी । वीर० दा सिंह मरा पर भय करे, ऐसे जिनमत होगा । कमल उकरडी पर उगा धर्म नीच कुल योगा । वीर०७। बीज वोये ऊपर खेत में, देंगे कुपात्र में दान। कनक कलश मलसे भरा सुव्रत पूजा न मान । वीर०८। हरि पूज्य प्रभु से सुना, दुखमय भावी काल । **५ंचमहाव्रत धारी हो। शिव जावें पुरायपाल । वीर०९**। धन्य दिवस धन्य वे वर्डा, परतिख मभु उपदेश। दिव्य कवीन्द्र सुनकर भवी, त्यागें राग रुद्देष । वीर १०१



दोवाली व्याख्यान चन्द्रगुप्त स्वप्नफल गहूंली। ११।

। सल्रु ए। की तर्ज ।

युगमधान श्रुतकेवलीरे, मद्रवाह् गर्ण धार सलूणा । पाटनीपुर समोसरेरे, वहु साधु परिवार सलूणा । १। चन्त्रगुपत राजा वहाँ रे, श्रावक धर्म सुजाण मलूखा । काणिक नृप सम श्रीगुरुरे, वन्डेकर बहुमान सल्ला । २। दृष्ट चतुर्दश् म्बप्न थेरे, पीपध पिछलीरात सलूणा । इनके फल पूछे कहें रे, गुरु निर्मल अवदात सल्ला । ३। मुर वरू शाला ट्रटतेरे, टीक्षा नहीं से भूप सल्एा। मृषं यकालमें याथमारे, केवल ज्ञान विल्प सलूणा । १ । चन्द्रला शत बिटसेरे, धर्म में पंथ श्रनेक सल्**णा** । भूगें को देखा नाचतेरे. क्रमनि उच्छ्रहता छेक सल्एण। प शना सॉप बारह फणारे, बारह वर्ष दुकाल सल्णा। ^{ते}देव विमान श्राकर गिरारे[,] नहीं नघादिक चाल सलुणा ।६। े वरीनी भूमि पद्मसेरे, धर्म विशक कुन धार सलूणा। ^मनुत्रा चमका विश्ववैरे, मिथ्यामन सनकार सलूणा ¹⁹। मृते सरसे धर्म की रे. कल्याग्यक थल हागा सल्ग्या। ^{रनक} वाल कुत्ता भलेरे[,] लक्ष्मी नीच मधान सल्गा ।८।

बन्दर हाथीपे चढारे, दुर्जन नित्य विशोक । सल्णा । सागर मर्यादा तजेरे, नीति राजा लांक । सल्णा । ९ । जंगी रथ वछड़े जुते रे, संयम लेवें बाल सल्णा । ज्योति हीन सुरत्नसेरे, साधु करें कुचाल । सल्णा । १० । नृप वालक वेलों चढारे, क्षत्रिय कुमत सुलीन । सल्णा । गज वालक लड़ते लखेरे, त्यों मुनि मेम विहीन ।सल्णा ।११ गुरु मुख से यों जानकेरे, मावि भयङ्कर रूप । सल्णा । श्रमशनकर स्वर्गे गयारे, चन्द्रगुप्त सुभूप । सल्णा । १२ । श्रीहरि पूज्य जिनेश के रे, शासन का विस्तार । सल्णा । उदय समय होगा सहीरे, दिच्य कवीन्द्र विचार । सल्णा ।१३

दोवाली व्याख्यान भाविकाल स्वरूप गहूं लो । १२।

। गुजराती रासडा पद्धति।

दुखमय पंचम काल कराल सरूप विचार कारे।

पूछें प्रश्न प्रभुसे सविनय गौतम स्वाम ।

भाषें अविसंवादी वीर प्रभु गुण्याम ।

सुनकर पालन करना सुख कर धर्माचारकारे। टेर ।

(साखी) तीन वर्ष महिने अविक उपर साहा श्राठ। मम निवर्णानःतरे, होगा पचम ठाठ । वह भी होगा निश्चय वरप इक्षीस हजार कारे। दु० १। (साखी) होंगे पचम कालमें, मानव दुखिये दीन। भिम रस कससे रहित, धन सपत्ति हीन। होगा नाश सही सब सार बस्त विस्तार कारे। द० २। (साली) उदय समय के योगसे, युगपरधान महान । जनमेगे उनसे यहाँ, होंगे पुराय विधान। फडेगा फिर भडा जैन धरम परवार का रे। दु० ३। (साली) अन्ते होगा सर्वथा, जैन धर्म विन्छेद। इहा आरा भी लगे, दुखम दुखम बहुखेद। उसका होगा वह परिमाण, जो पंचम श्रार कारे। दु० थ (साखी) फिर होगी उत्सर्विणी, बह श्रारों की एक। उत्तरोत्तर होंगे सही, उत्तम भाव अनेक। वैसे चलता है यह काल चक्र संसार कारे। दु० ५। (साखी) मनचन काल सरूपका, यों करके मश्च बीर । देव शर्म के बोध हित, गीतम को गुणवीर। भावीवश श्रादेश करें अन्यत्र विहारकारे। दु० ६। (साली) इन्द्रासन कम्पा तभी, मुक्ति समय को जान।

श्राकर बंदे इन्द्र भी, भावें श्रीभगवान ।।

गद गद कंटे वोले दुखसे वचन विचारकारे । दु० ७।
(साखी) भरमकग्रह से योग है, हस्तोत्तर का श्राज।

घिंड श्रायुप की दृद्धिकर, निष्फल करदो ताज।
भाषें वीर विषय यह जाने। नीई श्रिधिकार कारे। दु०८।
(साखी) भरमकग्रह जब ऊतरे, उदय धर्म का जान।

होगा भारतवर्ष में, धीरज हिर मन ठान।

गावेगा तब गीत कवीन्द्र सुमंगला चार कारे। दु०९।

दोवालो व्याख्यान गौतम विलाप गहूंली । १३।

पॅथीडा सन्देशों केजे मारा वीरने इस तर्ज में।

वीतराग जिन पारंगत प्रश्न वीर जी,
पावापुरमें मुक्ति सिधाये नाथ जो।
अपुनर्भव अजरामर पद्वी को लहें,
हुआ भरतमें चंडविध संघ अनाथ जो।१।
कल्याग्यक उत्सव हित आते देवके,
कोलाहल सुन जाना जिन निर्वाग्य जो।
वजाहत मूर्छित गौतम स्वामी हुए,

करते शोक विलाप अनेक विधान जो ।२। श्रन्त समय क्यों छोड चले हेनायजी. जानकार हो तोड़ा जग व्यवहार जो। गांतम गीतम कौन कहेगा अब मुभी-कौन हरेगा शसय मम दुर्वार जो ।३। किसको जाकर अब मै पूछ गा ममो ।। छायात्र्याज यहाँ पर घोर अधारजो। श्रन्त समयमें दर किया क्या जानके, जाना क्या मॉगेगा केवल सार जो ! 121 अयवा माना होगा पीछे वाल ज्यों. यावेगा यह गौतम मेरे साथ जो। श्रशरणश्ररण विरुट धारक स्वामीकहो न्या मुफी जो दूर किया है नाथ जो । भा देते तो क्या खोट लगे थी आपके त्राता तो क्या शिव हो जाता तग जो। मवल विरद्द दावानल तनमनमें लगा जला रहा है काम हुआ वेढग जो ।६। द्यादा! भृनावीतराग वेबीर थे. रागी होकर भूला में निज भान जो । मेरा तेरा मोह मंत्र ससार में.

श्रंध वना देता है दु:ख श्रमान जो ।७।
मेरा तेरा भाव जगत जंजाल की,
छोड चढे गुण ठाणे गौतम सामजो।
धाती कर्म हठाकर केवल ज्ञानसं
देखें परतिख लोकालोक तमाम जो।=।
दीवाली दिन वीर पश्च निर्वाण श्रो,
गौतम स्वामी पाये केवल ज्ञान जो।
चडिवध संघसुलीन हुश्रा सुखिसंधुमें,
हिर कवीन्द्र जय वोलें एकीतान जो।९।

ज्ञान पंचमी व्याख्यान गहूंली। ४४।

। राग—धनासिरि।

ज्ञान सभी में सार, सुनोरी सखी ? ज्ञान सभी में सार । देरा ज्ञानाराधन शिव सुखसाधन, पंचमी तिथि अवधार । सुनो०। पठन-पाठन-श्रवणा-मननतें, करना ज्ञान प्रचार । सुनो०१। ज्ञान महागुण पकटे पावें, मन वाँछित विस्तार । सुनो०। मन-वच-काया ज्ञान विराधक, पावें दु:ख अपार । सुनो०२। मन से शून्य बने नहीं पावे, वस्तु विवेक लगार । सुनो०। मुलमें रोगी मूगा होवे, काया कोड विकार । मुनो०३। करें करावे ज्ञान विराधना, मृरख जो नर नार । मुनो०। पुत्र कलत्र कुटुम्ब सह नाग्ने, परभव धन मंहार । मुनो०।श आधि न्याधि और उपाधि, होवे अनेक नकार । मुनो०।श सातें ज्ञान विराधन हित्त, हेना ह्म निवार । मुनो०।श ज्ञानी ज्ञानाराधक जनकी, भक्ति करो निर्वार । मुनो०। ज्ञानी ज्ञानाराधक जनकी, मक्ति करो निर्वार । मुनो०। ज्ञानावरणी कर्म विनाने, रहे नहीं अधकार । मुनो०। पुण मजरी-वरदत्त चरित को, लेना खुव विचाम । मुनो०। विराधम-आगधक भावे दुल्लिये मुल्लिये धाम । मुनो०। श्रीहरि पूज्य कथित विधियोगे ज्ञानाराधनकाम । मुनो०। दिन्य कवीन्द्र मुकीर्तित होकर, पावे भवजन्त पार । मुनो०ना।

कार्तिक पूर्शिमा व्याख्यान गहूंली । १५।

चन्द्रा प्रभु जी से ध्यानरे मोरी लागी १ स्म तर्ज में।
कार्तिक पूनम दिन जयकारी, महिमा अपरपारने।
सजी चित्त अवधारों, चित्त अवधारों, कारज सागे
सेवा विमल गिरि सारते। सजी चित्त अवधारों। देन।
आदिनाय मंग्र पोनररे, द्राविद बारिजील्लरे। सन्वीद।
देश कोडि मुनि सगर्मेरे, शोप कर्म चित्तिल्लरे। सन्वीद।१।

द्रव्य क्षेत्र ग्रह काल भाव ये, पाकरके श्रनुकूलरे । सखी ० तीरथ राजा सेवो भावे बालो कर्म समूल रे। सखी०।२। शक्ति अभावे तीरथ संमुखः वन्दन भक्ति विशेषरे ।सखी०। द्राविड-वारिखिल्लके जैसे, तोडो राग रु द्वे परे । सखी०३। सुव्रतधारी हो ब्रह्मचारी रथयात्रादि विधानरे । सखी०। समिकत निर्मल कार्गाठानो,निज निज शक्ति ममानरेसखी० १ शत्रुंजय गिरि जो भवि भेटे, शत्रुंजय होजाय रे। सली०। नहिं तो गर्भावासी है वह श्रीजिन आगम गायरे । सखी०५। अष्टोत्तरशत नाम विराजी विमलाचल गिरिराजरे। सखी । साधु कर्म खपाकर पाये, यहाँपर वर शिवराजरे । सखी०६। काती पूनम पर्व आराधो ती (थ भक्ति सुधाररे। सली०। सद्गुरु बोध स्थारस पीके, सफल करो अवताररे ।सली०७। श्रीहरिपूज्य पशु आदोश्वर, जाप जपो तिहूं कालरे । सखी०। दिव्य कवीन्द्र सुकीर्तितपहेनो,नित्य विजय वरमालरे । सखी० ⊏



मौन एकादशी पर्व व्याख्यान गहूंली ।४६।

सीता माता की गोदो में ध्वुमत डारी मूंटडो। इस तर्ज में।

भवियाँ करके योग निरोध, विरोध मिटावनारे । टेर । सेवा मौन एकादशी पर्व , चित में होकर आप अगर्व । मक्टे ब्रातम सिद्धि सर्वः परम सुख पावनारे । भवि० १। पुद्धें सविनय कृष्णा नरेश, वन्दन करके नेमजिनेश। संवर्षे दिन है कौन विशेष जिसे आराधनारे । भवि० २। भाषे जिनवर जगटाधार, मिगसिर स्टि एकाटशी सार । जिसकी महिमा का नहीं पार, ग्रुरारि वारनारे। भवि०३। वस दिन अरजिन दीक्षा जान, प्रकटा नामिजिन केवलङ्गान । मल्नी जनम-सुदीक्षा ज्ञान, कल्याग्यक भावनारे। भवि । श पॉच भरत-ऐरवतमें मान, ऐसे पच उल्याखक ठाख । गिनते होत पद्मास ममारा, नियम निर्धारनारे । भवि०५। कालत्रय से गिनते खास, होवे सी ऊपर पन्चास। लम्बते काल श्रनन्त विलास, श्रनना ज गावनारे । भवि०।६। यह दिन कल्याराक भराडार, आराधो पावो भत्र पार । "सुत्रत शैठणचरित सुनसार, करो पर भावनारे । भवि०।७। खाणी संयम मीन सुधार, उपवासी होकर निर्धार।
जिनगुण माला अङ्गीकार, करम कट जावनारे । भविः।=।
यों सुन नेमीश्वर उपदेश आराधें श्रीकृष्ण नरेंश।
आगे होंगे जो तीथेंश, तथा तुम ध्यावनारे । भविः।।
श्रीहरिपूज्य परम गुरु वोध, सुनकर करना वचन निरोध।
दिच्य कवीन्द्र सुकीरति धांध, करें विस्तारनारे । भविः।।

पौषदशमी पर्व व्याख्यान गहूंली ।१९७।

राग वनभारा--जगमें नहीं तेरा कोई नर देख तृं० इस तर्ज में।

नमो वीर जिनेश्वर राया, जिनने सत धर्म वताया। देर।

मश्च चम्पापुर में त्रावें, सुर समवसरण विरचावें।

तव बारह परीपद भावे, पश्च वाध सुनें सुखदाया। नमो०१।

चतुरङ्गी सेना संगे, उत्सवपूर्व क वहु रङ्गे।

कौरिणक नृप भक्ति उमंगे, जिन चरणे सीस नमाया। नमो०२

जग जीव दया दिल धारों, विपयों से इन्द्रिय वारों।

शुभ सत्य सदैव उचारों, यों धर्म रहस्य सुनाया। नमो०३।

पूछें तव गौतम स्वामी, चडनाणी जग हितकामी।

वदी पौष दशमका नामी, माहात्म्य कहो जिनराया। नमो०१।

जिन पार्र्व जनम दिन जाना, कल्याणकमय परमाना ।

वर धर्म किया तब ठाना, यों बीर मग्रु फरमाया । नमो० धा अराधन कर शिव जावे , मूरदत्तः यथा जग गावे । श्राराणे त्यों भवि भावे, जो सुख चाही मनभाया ।नमो०६। बदी पीप दशम श्राराधे, इरिप्ज्य परम पट साधे। मकटित गुरा सिंधु त्रमाये, सुकवीन्द्र भी पार न पाया । नमो०७।

मेरु त्रयोदशी व्याख्यान गहुं ली । १८।

। विमला चल वासी म्हारा म्हाला सेवक ने विसारी नहीं-रे विमारो नहीं। इस तर्ज में।

मुखदायक श्री जिन वाणी सजन चित धारो महीरे विसारी नहीं। टेर ।

गाँगम गगा वर ब्याटिक परिषट को उपटेंगे वीर । मैंर तेरमको श्वारायो महिमा गम्भीर। मुनन चित धारो मही रे निसारो नहीं । ? । माप्तरी तेरस दिन उत्तम, श्रादीन्तर श्ररिदना । भवधारी सब कर्म विनाशी होगये शिव वधू बना। ^मुतन चित्र यारो मही रं विसाग नहीं ०।२।

ताने उस दिस का आगवन विशिष्ट के मी भार । दुर्गति हेतु जान हृद्य में पन प्रमाद् निया । सुजन चिन धारों महिरे विसारी नहीं : 1 3] ची विदार अवास करी-भीत आदीरवर का प्रयात। रतन कनक रूपे या धीके मेर चहुत्या महान । सुलन चिन धारों मही रे विमारी नहीं। 2 । समिवन नवन शांन परम गुगानाम रन्ते नी मान । ख्यम पृत्र के मेमे पहेंनी दृर दे हें जीताल । सुजन चित्त धारो सहीरे विसारो नहीं । ॥। विकट कोटि संकट कट जावे. निविड करम हों नाश । 'पींगल राष ? चरित व्यवधारी तोडी मीहनी पाश् । सुजनित्त धारो सहीरे विसारो नहीट । ६ । सुख सागर भगवान परम गुरु श्री इरि पृज्य जिनेश् । श्राज्ञा रंगी जीवन जनके. गुण गावें कवोन्द्र हमेश्। सुजन चित्त धारो सही रे तिसारो नहीं । ७।







होलो निपेधोपदेश गहूंली। १९। वोलो रे पास जिलेश की सम्रोक्त की उस हो

। जय बोलो रे पास जिनेशर की परमेशर की जय बोलो । इस तर्ज में-राग होली।

मत खेलो रे होली विचार करो, मत खेलो । टेर । कुल-जाति-लज्जा-मर्यादा, होली में स्वाहा न करो । मत० । गाली गाना नीच जनों का, है लक्षण यह क्यों विसरी ।मत०१। मेला मृत्र जलादिक छाँटो, भगी से क्यों भेद धरो। मत०। माता-बहिन-बेटियाँ वेठी, उनका तो कुछ ख्याल करो।मत०२। निज सततिको दुष्कर्मीं की, शिक्षा देते क्यों न दरो । मत०। गक्रोंपर चढते भी शोचो, किस कुलका व्यवहार करो।मत० है। पीकर भट्ट कहो क्यों ऋपनी, मर्यादाका भंग करो। मत०। रग उडाकर निज का ही क्यों, रग जगत से लोप करो ।मत० १। बन कर आर्य अनार्य सरीखे, कामों को कर क्यों विगरी। मत०। होली के दुष्कमों के भी, प्रायश्चित्त[,]सुनो सुधरो । मत० ५ । [,] पाप सरूपी है द्रव्य होली, कर क्यों दुर्गति जाय परो । यतः। होली खेलन को जो चाहो, तो कमों की होली करो। मत०६। कमों की होली को होली, कभी न जनमो नाही मरो ।मत०। सुल सागर भगवान जगतमें, श्रीहरि पूज्य हुए विचरो । मत००। होली का व्याख्यान सुनो फिर,मनमें चिंतन खुब करो (मत०। दिच्य कवीन्द्रोंसे फिर ऋपनी, यश कीरति विस्तार करो ।मत० ८।

चैत्री पूर्णिमा व्याख्यान गहूंली। ५०।

जान्ना नवागु करिये विमलगिरि० इस तर्ज में।

चैत्री पुनम चित्त धारो रे भविका, चैत्री पुनम चित्तधारो। गुरु उपदेश विचारों रे भविका, चैत्री पुनम चित्त धारो। टेर। चैत्री पुनम दिन आदीश्वर के, गराधर पुराडरीक स्वामी। पाँच कोडि सुनिसंग विमलगिरिः होगये शिवगति गामीरे।भविश पुरुडरीकगिरि नाम प्रसिद्धो, पाप गने पुरुडरीक। होकर के उपवासी सेवो, चैत्री पुनम दिन ठीक रे।भवि० २। पुरुडरीक गराधर-गिरि ध्यावो, त्र्यादीश्वर त्र्यरिहन्त द्रव्य भाव पूजा-देव वन्दन, करो करमदल श्रन्त रे ।भवि० ३। सिद्धाचल यदि जा नहीं सकते, निजयर नगर विशेष। गिरि संमुख पट बंधन करके, पर्व छाराधो छशेष रे ।भवि०८। रोग-शोक-दौर्भाग्य-वियोगा, भूत-मेत हट जावे। पर्वाराधन करते भविजन, चउगति छेदक भावे रे। भवि० ५। दुर्भागी कन्या के चित्त से, श्री गुरुवर समजावे। शुद्धालम्बन योगे पाणी अजरामर पद पावे रे। भवि० ६। सुख सीगर भगवान परमगुरु, श्रीहरि पूच्य प्रभावी। शिवपुर द्वारको खोले ऐसी, देत कवीन्द्र सुचावी रे । भवि० ७।

अक्षयतृतीया व्याख्यान गहूंली । ५१ ।

केशरिया यांसु भीत लगी रे सच्चा भाव स् । इस तर्ज में।

मत भूलो भवियाँ ! कुटिल गति है त्राठों कर्म की।

कर नाश उन्हों का, सिद्धि लहो रे ज्ञातम धर्म की। टेर।

बार महर तक पूरव भव में, आदी चर जिन जीव । र्झींकी वैलोंके मुख वॉधी, दी अन्तराय अतीवरे । मत० १। अदी वर भव दीशानतर, कर्मोदय फल भावे। वारमासतक शुद्ध गोचरी, अंशमात्रनहीं पावेरे । मत० २। विचरत प्रभ्र हथणापुर श्राये. वह श्रायाँस कमारा । निशिमें स्वम लखे दिनमें फिर, पशु मुनिवेश विचारा रे।मत० ३। नाती समरण प्रकटा जाना, गांचरी विधि विस्तारा । मिण कचन-कन्याके दानी, लख लोकोंको बारा रे । मत० ८। सब लोकों को समभा कर के, ईक्ष् रस विदरावे रे। लुप दानविधि फिर पकटावे, पचदिव्य सुर लावेरे ।मत : ४। 'बर्द्धमान श्रेपांस भाव श्ररू पात्र जिनेश्वर जानो । शुद्ध मान ईक्रस योगे, ग्रक्षय मात्र वखानो र । मत० ६। अक्षय तीन हुई एस दिन से, अक्षय पट गुगा धारी। कमित्रनाश हुआ सब जिनको मकटा गुण अविकारीरे ।मत०७। कर्मोदय को तोड़ा पश्च ने, धीरवीर हो कर के। वैसे ही सब कर्म विनाशो निज प्रमादको तजके रे। मत० मा श्रीहरि पूज्य परम गुरु शासन, वासित चित्त वनाश्रो। दिव्य कवीन्द्रोंसे फिर अपनी कीरति खूव गवाश्रोरे। मत० ९।

श्री कल्पसूत्र महिमा गहुं ली । ५२।

तर्ज-जिल्ला की।

कलपसूत्र वर कलप तरु आराधो रे, शिव साधो नर नार ।

मन वाँछित फल पावो दुःख मिटावो रे, सुजागा। १।

श्रातम भूमि शुद्ध करो भिव प्राणीरे, गुरुवाणी सुन सार ।
कलप सूत्र वर कलप बीजको बोबो रे, सुजागा। २।

पुण्य अंकूर सनूर सफलता लावेरे, बहुदावे हितकार।

दूर प्रमाद-विषाद-विवाद मिटावो रे, सुजागा।। ३।।

काल लबधि अनुकूल हरे भवश्रल रे, करे दूर विकार।

गत दूषण पर्यूषण भावे ध्यावो रे, सुजागा।। १।।

पूजा-परभावन उत्सव विधि भारी रे, जयकारी मनुहार।

सुव्रत-संयम रत हो पाप नशावो रे, सुजागा।। १।।

निन दर्शन-गुरु वदन पाप निकन्दे रे, आनद विहार । निज दर्शन गुरा निर्मल खूब बनावों, रे सुजारा ॥ ६ ॥ ्र्औहरि पूच्य परमगुरु बोध सुनावें रे, समभावे विचार। दे दिज्य कवीन्द्र महोदय भटयट पावो रे, सुजारा ॥ ७ ॥

श्री कल्प सूत्र प्रथम व्याख्यान गहुंली । ५३। तर्ज-सिखया गावो रे कांइ गावो गुर गुल माल सिखयाँ। सिवयाँ सुन लो रे, काँड़ कल्प सूत्र श्रिधिकार । सिखयाँ सन ला रे। टेर। निन चरित्र थेरावली, कॉइ सामाचारी सार । सखियाँ० । श्रवण मनन-परिग्रत करो, कॉड ये तीनों अधिकार ।सिवि०१। भी ग्रादि जिन चीर के कॉड शासनथित श्रयागार। सिल०। थार्चलक श्रादि वहें, कॉइ दश कल्पी श्राचार । सिवयॉ०२ I 🕽 ऋजुजह क्क्रजडाणयी, कॉड पर्एिटत भाव विवोध । सरिव० । ^{भगम} चरम अरु अन्यजिन, कॉइ साधुमेद श्रविरोध ।सखि०३। नांकिक लोकोत्तर सभी कांइ पर्व शिरोमिण जान। स०। प्रेपण संसार में, कॉड उसमें पुरुष विधान। सिलयॉ० १। मीरमगा सवत्सरी, काँइ लोच अउम तप धार । सखि०। त्रिन बदन ग्रह खामगा, कॉइ साधु शुद्धाचार । सिवि० ४ ।

द्रव्य-भाव पूजा करें, काँइ खर्में खमावें आए। सिखयाँ०। ब्रान-संघ भक्ति करें, काँइ श्रावक छोडें पाप । सखि०६। 'नाग केतु' दृष्टाँत से, काँइ अठ्ठम तप अविकार । सिवयाँ ० परमेष्टि ध्यानें सही,काँइ जिन जीवनी विस्तार । सखि ०७। पच्छानु पूरवी सुनो, काँइ वीर चरित विस्तार । सिवयाँ । मोटे सत्तावीस भव, काँइ चउगति विविध प्रकार । सखिताँ० =। प्रागात नामक स्वर्ग में, काँइ पुष्पोत्तर सुविमान । सिवयाँ०। वहाँसे सुरभव भोग तज, काँइ च्यवते पुर्य निधान ।स० ९। पूरव भव में गोत्रमद, काँइ कृतकमीदय पाय। सिख्या०। देवानंदा ब्राह्मणी, काँइ कूख वसे तब ब्राय । सखि० १०। चौद सुपन कल्यागा मय कांड् लखती है वह ताम ।सिवि०। इरि कविन्द्र करते तभी, काँइ सविनय भाव प्रणाम ।सिव०११।

स्री कल्पसूत्र द्वितीय व्याख्यान गहूंली । ५८।

तर्ज-पणिहारी

श्रवधि ज्ञानविशेष से गारावादालाजी च्यवन कल्यागाक जान वादालाजी सौधर्माधिपति स्तवे मारा वादालाजी नमो नमो भगवान वादालाजी । १। धर्म आदि कर हे मभो ? मारावाहाला जी अन्तिम तीर्थ नाथ बाहालाजी। वन्दन करता हूँ यहाँ मारा वाहालाजी मोहे करा सनाथ वाहालाजी । २। भाव सहित कर बॅदना मारा वाहालाजी सोचे हृदय मभार वाहलानी। नीच कुल नावें सही मारा वाहालाजी श्ररिहादिक श्रवनार वाहालाजी । ३। काल अनते होत हैं मारा वाहालाजी श्रवरिज विविध भक्तार वाहालाजी (कर्मोदय से बीर लें मारा वाहालाजी नीच कुल अवतार वाहालाजी । 8। ऐसे दश श्रवरिज हुए मारावाहालाजी इस श्रवसर्पिणी मान वाहालाजी । सूत्रकार फरमा रहे मारा वाहालाजी देखो चतुर सुजान बाहालाजी । ४ । नीच कुल की काय से माराबाहालाजी पर जनमें ना कोय बाहालाजी। साते परिवर्त्तन करूँ मारा वाहालाजी तब सम्बन्ति यह होय बाहालाओ । ह ।

हरिगागमेपी देव को मारा वाहालाजी इन्द्रं कर आदेश वाहालाजी। देवा नँदा गर्भ का मारा वाहालाजी

त्रिशला कूल मवेश वाहालाजी ॥ ७ ॥ गर्भ परिवर्त्तन करे मारा वाहालाजी,

हरिग्गगमेपी देव वाहालाजी । श्री त्रिश्ला शिवकर लखे मारा वाहाला जी,

चौदह सुपन तदेव बाहाला जी ॥ = ॥ तब देवा नन्दा लखं मारा बाहाला जी

पूरव कर्म प्रभाव वाहाला जी। हरती है मम स्वम को मारा वाहाला जी,

त्रिशला सहज सभाव वाहाला जी ॥ ९ ॥ गर्भहरण कल्याणके मारा वाहाला जीः

यह दूजा व्याख्यान वाहाला जी। इरि कवीन्द्र सुनकर भवी मारा वाहाला जी, पावो पद कल्यान वाहाला जी ॥ १०॥



श्री कलप सूत्र तृतीय व्याख्यान गहूंली । ५५ ।

तर्ज-सोना रुपा के मोगडे सैया खेलत याजी।

सुत शय्या सोती हुई, सती त्रिशला माता। लय वर चीटह स्वम को, पाव सुख साता ॥ मुख० १ ॥ जग कर हंसी चाल से, पिछु पास पधारीं। सविनय मुपनों की कथा, कहतीं विस्तारी ॥ जग० २ ॥ नाना सिनारय कहें, मुना मान वियारी। मगन-शिव कल्यागामयः सुपने हैं भारी ॥ राजा० ३ ॥ र् भोग-पुत्र-सुराज्य सुख, शुभ लाम मिलेगा । हम कुन कमल भी श्राजसे, उस युत्र खिलेगा॥भोग० ८॥ नक्षण-व्यंत्रन गुण भग, सुकुमाल श्रीरा । पुत्र रतन होगा सही, जग में वह बीरा ॥ लक्षण ॰ ॥ बल भार को छोडते, चर्ता वह होगा। गों देवी ! ई मुनी, शुम स्त्रममुयोगा ॥ बाल० ६ ॥ मुन त्रिश्ला दर्पिंग हुई, मृदु बचन उचारा। यर्थ समर्थ कहा ममी ! पिपु माग थाधारा ॥ सुन० ७ ॥ गुन्दर मन्दिर में वधे पमे ध्यान मुनीना । सुव मे गर्भ रना करे, माो पर्म भवीगा ॥ सुन्दर० = ॥

श्री हरिपूज्य हुई तदा, त्रिशला जगमाता। दिव्य कवीन्द्र कहें सदा, जय जय जिन माता ॥श्रीहरि०९॥

स्री कल्पसूत्र चतुर्थ व्याख्यान गहूंली । ५६

(अन्म समय गीत)

तर्ज-महांस्ं मृंढे बोल०।

श्री सिद्धारथ नृप त्रादेशे, सुपन शास्तरी त्रावे रे । जय विजयादिक सूचक शब्दें, खूव बधावें रे ॥ कि मंगल गावो रे ॥ टेर ॥

स्वम फलों को पूछे राजा, पंडित भाव वतावें रे। पुत्र चक्री तीर्थ कर होगा। पुराय प्रभावें रे।। कि मंगल गावो रे।। १।।

सुन कर हर्षित राजा देवें, दान त्र्यनेक मकारे रे। पटराणी को पुन: सुना कर, दु:ख विसारें रे।।

कि मंगल गावो रे।। २॥

इन्द्रादेशी तिर्यक् जुंभक, धन-कंचन वर्षावें रे। गर्भ प्रभावे सिद्धारथ नृप, राज्य ऋद्धि बढ़ जावे रे॥ कि मंगल गावो रे॥ ३॥ वर्द्धमान भावों को लख कर, राजा राखी भावें रे। पुत्र हुए से 'वर्द्धमान' शुभ, नाम धरावें रे॥ कि मगल गावो रे॥ ८॥

मानुमक्ति अरु अनुकम्पावश, गर्भ रहे पशु शोर्ने । गर्भ व्यया को रोक्" यों निज अ ग सकोने रे ॥

कि मगल गावो रे.॥ ४॥

निश्चल गर्भ रहे तब माता, मोह वशा हो रोवे रे। हरा मरा या गला गर्भ मम, चलन जरा ना होवे रे॥ कि मगल गावो रे॥ ६॥

यों माता के भाव जान कर, वहाँ अभिग्रह धारे रे । भात पिता के जीते ना लु. टीक्षांश्री ग संचारें रे ॥

ढाता[,] अंग संपार र ॥ किमगल गावो रे॥ ७॥

होत्रें जो जो दिव्य दोहले. राजा दो वो पूरे रे। करें गर्भ रक्षा मुख पूर्वक, पाप कीं चूरे रे॥

. किमगलगादोरे ॥ ≂॥

साडा सात टिवस नी महिने यों पूरे जब होतें रे। फर्च स्थानक विंठे ब्रह्म श्रुम—हिंछ से जोवें रे॥ कि मगल गावों रे॥९॥ चैत्र सुदी तेरश दिन उत्तराः फाल्गुनी नक्षत्रे रे। हरि कवीन्द्र जिन जन्म लहें, सुख चौदह क्षेत्रे रे॥ कि संगत्त गावो रे॥ १०॥

्रश्री महावीर जिन भूलना गीत। ५०।

तर्ज — लाल ख्याल देख तेरे अचरिज मन आवेः।

(राग भैरवी)

हुलरे हुलरे वीर हुलरे, त्रिशला माता गावें। त्रिशला माता गावें वीर, सूलणे सुलावें ॥ टेर ॥ नन्द तेरे नूर कोटि, चंद सूर नावें। दरस फर्स करत तरस, नयन की न जावे । हुलरे० १। उटत-पडत-रमत-हंसत, खेल तूं मचावे। ऐरे मेरे लाल! तेरी, चाल चित चुरावे। हुलरे० २। कनक घडित रतन जडित, विविध रंग भावे। लाल! मूला देख जगत, भान भी सुलावे। हुलरे० ३। हीर चीर भूलणे, सुदोरी के खींचावे। रमक भमक रमक भमक, धूंधरी नचावे। हुलरे० ४। लाल! तेरा अंग रंग, ताप को बुभावे।

Muni Mangal Sagar,

चग गग नीर, शीतलाइ को इठावे। हुलरे० १। तृ निज जन्म से पवित्र, कुल मम बनावे । चींद्र राज राज आज, मेरे पास आवे । हुकरे० ६ । केशि कुमार कथित सार, वचन याड आवें। बीरय नाय प्रपने साय, तू मुभ्ते पुजावे । हुलरं ० ७ । मग्रस्त वस्तु राज्य-रत्न गर्भ में बढावे । बर्ड मान गुणनिधान नाम तेरो ठावे । हुलरे ० = । नद ! नंदी वर्धन की न्वयु तुभी रमावें। दैवर देवर कर पुकार गरी वारी जावें । हुलरे ००। चैदक भूप बन्धु मेरें रूप तब लखार्वे। गोद हाय र्वंध पे उठाय मोट पार्व । इलरे० १० । समिता रत्न रचित दिव्य खिनीने वसावे । निकट दर करत विविध भाँति से हँसावें । हुन रं० ११। पौषि हाय धार लाल ! पउन काज जातें । बाल क्यानकरत वाल साथ तृ सिगते। हुनरं ० १२। या कला विलास विश्द वान के मभावे। इतान बान तुमहान वय युवान पावे । हुन्तरे ८ १३ । श्चनन्य रूप राज रून्य ना विवाह टावं । स्थव नार मपुर कड परल गीन गावें । हुलरे ० १०।

जनीससो सत्यासी भाद्र. चतुरदशी भावे। हरि कवीन्द्र वन्द वीर 'जयपुरें भुध्यावे। हुलरें ० १५।

.श्री कल्प सूत्र पंचम व्याख्यान गहूंली। ५८।

तर्ज- तीरथ नी आशातना नवि करिये, हारे नवि करिये०।

तीन ज्ञान से उपने जिन चन्दा, हाँ रे भिव कमल विकाश दिखांदा।

हाँरे वंदत तोड़ें भवफन्दा, हाँरे पकटे श्रनहद सुख कंदा।

हाँरे अ।नन्द अपार,

तीन ज्ञान से उपने जिन चन्दा । टेर ।

ञ्बपन दिग कुमरी मिली वहाँ आवे,

हाँ रे जिन-जिनमाता नवरावे। हाँरे सब सुनि कर्म रचावे.

हाँरे करे नाटक सार । तीन० १।

सुरपति सुर गिरि पे प्रभु ले जावे, हाँरे लघु शङ्का मन में लावे। हॉरे बीर मेरू शिखर कम्पार्वे, डॉरे देवें शॅका टार। तीन०२।

सिद्धारय राजा करे सुख कारा, इाँरे जिन जन्मोत्सव निर्धारा।

हॉरे ब्राप्ति गोत्री जिया के उचारा, हाँरे वर्ष्यमान कुमार (तीन० ३ ।

शक्ति पशसे वीर की हरि यारी, हॉरे आवे टेव परीक्षाकारी,

हाँरे बहुरूप घरे भयकारी, हाँरे लहें जिन जयकार। तीन० ८।

मोह वने माँ वाप भी स्ते जावें, हॉरे पदमें को उत्सव भावे।

हॉरे हिर ब्राह्मण रूप ले श्रावे, हॉरे पूछे पश्र विचार । तीन० ५।

भैद तभी सब ही खुल जावे, हाँसे योवन वय सुन्दर पार्वे।

हाँरे नृष पूत्री यशोदा व्यावे, हार्रे जल कमल मकार । तीन० ६ ।

मात-पिता स्वर्गे सुख पावें, हॉरे निज पूर्ण श्रमिग्रह भावें। हाँरे भाई आज्ञा से टहरावें, हाँरे शुभ दीक्षा विचार । तीन० ७। साधु सम प्रभु जी रहें संसारें,

हाँरे सम्बत्सर दान भवारें। हाँरे तब दीक्षा हेतु उचारें, हाँरे लोकान्तिकाचार । तीन० = ।

नन्दी बदुर्धन इन्द्र के सहचारी,

हाँरे करे दीक्षोत्सव वहु भारी। हाँरे कहें जग जन जय जयकारी,

हाँरे होवें वीर ऋगागार । तीन० ९ । मन पर्यव वर ज्ञान भी तब भासे,

हाँरे संज्ञी मन वस्तु मकाशे। हाँरे नित दिव्य कवीन्द्र विलासे

हाँरे छठ तप को धार । तीन० १० 🏿







श्रो कल्पसूत्र पंचम व्याख्यान गहूंली । ५६।

तर्ज-भविका श्रो जिन विग्व जुहारो।

भविका बीर चरित चित लावो, आतम शक्ति जगावो । रे भविका बीर चरित चित लाबो । टेर । सविनय इन्द्र पशु को भाषे, बार वर्ष तक स्वामी। **उपद्रव होंगे बहुतेरे, सेवा करूं सिर नामी । रे मवि० १ ।** भापें बीर हुआ नहीं होगा, अरिहा पर शक्ति से ! केवल ज्ञान उपाव पावे, त्र्यातम गुण व्यक्ति से । रे भवि०२। अभिय ग्रामे शाल पाणि जक्ष करे उपद्रव भारी। परम शान्त दशा लखी मधुकी, तब भक्ति विस्तारी ।रेमवि॰ ३। मासाधिक सवस्सर् तक मधुः देवदुष्य पटधारी । वाद अवस्त सुशोभन कायाः सहें उपद्रव भारी। रे भवि० १। कनक खल वनमें चएड कीशिक, सर्प महा भयकारी। ब्रज्भ २ कहकर मतिवोधे, जाउ जिन बलिहारी। रे भवि० ५। गोशालक क्रशिष्य प्रभावे, दुःख सहें श्रविकारी। संगम सुर करे घोर उपद्रव, जिन निश्चल चित्त घारी । रे भवि०६। श्रभिग्रह श्रति दुष्कर धारीः स्वामी भाव सनूरे । **उ**ष्टद वाकुला कैटीवेशे, चढनवाला पूरे । रे भवि० ७ । कानों में कॉसी के खीले, गोपालकने ढाले।

हुई कायिक पीड़ा पशु को, खरक वैद्य निकाले। रे भवि॰ 🗀। श्रन्य भी कट पूतनादि उपद्रव, बारह वर्ष विचालें। सम भावे सहकर सब स्वामी, कर्म सघनवनवालें।रे भवि० ९। लोका लोक प्रकाशक केवल, ज्ञान महोदय पावें। सुरपति रजत कनक मिर्णिरतने, समवसर्ण विरचावें।रेभवि०१०। गौतम आदिक ग्यारह पंडित, शंकित अरु अभिमानी। शंका-मान हठाकर थापें, गराधर पद गुराज्ञानी ।रे भवि० ११। संघ चहुर्विध थापें स्वामी, सुर नर पूजित पाया। बहतर वरष स्वत्रायुष भोगी, पावा पुरंजिन रायारे।रेभवि० १२। सोले पहर उपदेश सुनाकर, अनत शैलेशी ठावें। भवधारी चउकर्म हठाकर, एक समय शिव जावें । रे भवि० १३। काती अमावस स्वाति कल्यागाक, वीर विभ्र निर्वान । वीतरागता भावे पावें गौतम केवल ज्ञान । रे भवि० १४ । वीर मभु आदर्श चरित को निज आदर्श वनावें। इरि कवीन्द्र सुकीर्तित होकर, परम महोदय पावें। रे भवि० १५।

श्रो कल्पसूत्र छठ्ठा व्याख्यान गहुंली । ६०।

तर्ज—क्या कहं कथन मैं मेरा नाथ। जिन जीवन सुर्वकार रे सिलयां जिन जीवन सुरवकार। देर। निज जीवन हितकार रे सिलयाँ जिन जीवन सुरवकार। टेर। च्यवन-जनम-दीक्षा तथा रे. केवल वर निर्वाण । पच विशाला में हुए रे, पारस जिन कल्याण । रे सलि० १। दशभव हे पी कमठकारे, दर किया अभिमान क्षमा सहित श्रातम शक्तिसे, नमो नमो मगवान ।रे सिवि०२। श्रथजलते श्रहि को दिया रे. परम मंत्र नवकार । वह पाया नागेन्द्र सुखदपटेर् जय जिन जगदाधार । रे सिवि०३। पुरुपादानी पास जिनेश्वर, सरस चरित चित धार । गुरुप्रुख सुनकर भविजन भावे वाबो भवजल पार । रे सखि० ८। नव भव का तज राग जिन्होंने, बीतरागता धारी। नेमीश्वर परमेश्वर वन्टों, कामविजयी जयकारी। रे सखि०४। कृप्ण भवल वलटर्प जिन्होंने, कीना चकनाच्र । दिखलाकर आदर्श अनुपमः ब्रह्मचर्य का नृर[े]। रे सवि० ६। पशुरक्षा हित निज सार्यि को, जिनवर दें आदेश । करुणा कोमलना भी जिनकी, है ब्रादर्भ विशेष । रे सुखि०७। राजीमती सच्ची सती रेः शीलवती गुणधाम । रथनेमि को राह पे लाई भात काल मणाम । रे संवि० 🗆 पारस नेमीरवर को ऐसी, पावन अरु परसिद्ध । हरि कवीन्ट जीवन कथारे अभ्यासे मुख सिद्ध । रे सिवि० ९।

श्री कल्पसूत्र सप्तम व्याख्यान गहुंली। ६१।

तर्ज-केशरिया थांसूं प्रीत लागी रे सांचा भाव सुं।

भवि भावे सुन लो ऋषभ चरित अधिकार को। सुन दूर हठात्रों दारुण कर्म विकार को। टेर । 'धनसारथ वाहकः भवे रें, देकर घी का दान। समिकत गुरा पैदा किया रे, ऋषभदेव भगवानजी।भवि० १। 'वजनाभ' चक्री भवेरे, वीस स्थानक सेव। तीर्थं कर शुभ कर्मकोरे, बाँध हुए जो देव जी । भवि० २ ह 'श्रीनाभिकुलगर' प्रियारे, 'मरुदेवी' के नन्द। युगल रीति वारक हुए रे, श्रीयुगादि जिनचन्दजी।भवि०३। 'भरत-बाहुबली' आदि थे रे, पुत्र एक सौ वीर । 'ब्राह्मी-सुन्दरी' वालिकारे, गुणसागर गम्भीरजी । भवि०८। पुरुषकला नारीकला रे आदिक जग व्यवहार। असि-मसी-कृपिकर्मकारे जिनने किया मचारजी। भवि० ५। शुद्धाहार विना रहें रे, दीक्षा ले अकलेश। अन्तराय के योग सेरे, बारह मास विशेष जी। भवि० ६। निर्दूषण ईक्षुरसे रें श्री श्रेयाँस कुमार। नाथ करावें पारणारे, वर्त्ते जय जयकार जी। भवि० ७। भथम भूप भिक्षु भथम रे, भथम केवली जान। तीर्थं कर सुखकर पहिलोरे, देवें शिवसुख दानजी। भवि० =ा

दश सहस्र भुनि सग में रे, अष्टापट अरिहन्त । हरि कवीन्द्र बन्दित हुए रे, अनुपम शिषवधुकन्त रे।भवि० ९।

श्री कल्पसूत्र श्रयम व्याख्यान स्थविरावली गहुं लो । ६२ ।

तर्ज-लघुता मेरे मनमानी, लही गुरुगम द्यान निशानी रे०। वन्दों स्थविर जयकारी, वन्दत नित आनन्दकारी रे। बन्दां स्थिवर जयकारी । टेर् । 🗦 जिन बीर पटोधर्भारी, गीतम् आदिक गराधारी । दरीन नित मगलकारी (रे, वंदर्डो स्यविर जयकारी । १ । सुधर्मा सन्तति श्राने, भारत में बहुगुण राजे। बहु मानित भविक समाने रि, वन्दों स्थविर जयकारी । २। श्रन्तिम फेवलि शिवगामी, ब्रह्मचारी जम्बू स्वामी। शभवादिक वीधके नामी है, बन्दों स्थविर जयकारी । ३। श्रीममन १मु श्रुतज्ञानीः श्रीमनक पिता श्रुतदानी । यशोभट सुभट्ट विघानी रें; वन्टों स्यविर अयकारी । ८ । ग्रन्तिम सब पूरवधारी, भटवाहु निर्युक्तिकारी। स्थुलिमट मदन मदहारी(रें) वन्टों स्थविर जयकारी । ५ ।

क्रम से विश्व वज्र विराजी, जिन की जग कीरति गाजी।
हुई शाखा वज्र सुताजी रे, वन्दों स्थिवर जयकारी। ६।
न्यायाम्बुधि बृद्धि सुधाकर, श्री सिद्धसेन दिवाकर।
हिरिभद्र प्रश्च पांगडतवर रि वन्दों स्थिवर जयकारी। ७।
नवत्रंग सुटीकाकारी, गुरु अभयदेव भय हारी।
जिन वल्लभ शुद्धाचारी रे वन्दों स्थिवर जयकारी। ८।
दादा जिनदत्त प्रभावी, जिन चन्द्र महा मेधावी रे।
सुख सागर सहज सुभावी रे, वन्दों स्थिवर जयकारी। ९।
भगवान परम गुरु सारे, हिर पूज्ये विश्वद गुगा वारे।
नित कीर्ति कवीन्द्र उचारे रि वन्दों स्थिवर जयकारी। १०।

श्रो कल्पसूत्र नवम व्याख्यान समाचारी गहूंली । ६३ ।

तर्ज-वारि प्रभु दशमा शीतल नाथ कि तुम सूं प्रीतडीरे हो।

सुनियें सामाचारी सार कि मुनि श्राचार कीरे लो। है जो देशकाल श्रनुकूल कि भव्य विचार कीरे लो। सु०१। जिस में उत्सर्ग रु श्रपवाद कि विधि विस्तार से रे लो। भापे जिनवर जगदाधार कि निज श्रधिकार से रे लो। सु०२। है जहं अब्बाबीस प्रकार कि गुरु समक्ता रहेरे लो । सद्गुरु लक्षण लक्षित भाव कि जो नित है वहें रे ली ।सु०३। पहेलें दिन पचास के बाद कि पर्य पए करें रे लो। बर्पाकाल अवग्रहमान कि धारें दूसरे रे लो । सु० १। सजल नदी लघन आदेश कि वृतीयमकार में रे लो। इत्यादिक हैं भाव विशेष कि मुनि व्यवहार में रे लो। सु०५। साधु धर्म विघाति कषाय कि दूर निवास्ते रे लो। होने यदि परमाद विवाद कि माफी माँगते रे लो। सु०६। **उपराम ही है सार अपार कि साधु धर्म में रे लो !** वातें उपराम रखते नित्य कि मन-वच-कर्म में रे लो । सु०७। साधु सुख सागर भगवान कि श्रीहरि पूज्य हैं रे लो। करते सुव्रति कीति त्रापार कि दिव्य कवीन्द्र हैं रे लो ।स्०८।

संबद्धरी पर्व की गहूं ली। ६४।

तर्ज-विना प्रमु पान के देगे गेरा दिल येकतारी है।

यदी धन आज की जानो, सवन्सरी पर्व पाया है।

हृदय से दूर माया है, अजब आनन्द द्वाया है। देर।

जिनेज्वर देव शासन सद्-पुरु निग्रन्य की सेवा।

सम्बन्न भाव से करते, अजब आनन्द झाया है।।यदी०१॥

जिनेश्वर चैत्य दर्शन में। निजातम शुद्ध करने का विचरते दूर अध होते. त्रजन त्रानन्द द्वाया है ॥घडी०२॥ सुरा सुर द्वीप नन्दीश्वर, महोत्सव खूव रचते हैं। तथा भविजन यहाँ रचते त्रजन त्रानन्द छाया है।।घडी०३**।।** जगत के सर्व जीवों से. विरोधी भाव को तज कर। अभय देकर अभय होते, **अजव आनःद छाया है ।।घडी०**८।। कलप तरु कलपसूत्र--श्री गुरु मुख मूल वारह सो । विधियुत भाव से सुनते. ञ्जनव त्रानन्द छाया है ,घडी०५॥ तपो व्रति ब्रह्मचारी हो. किये सव पाप खोने को। पति क्रमणादिको करते. श्रजव श्रानन्द छाया है।।घडी०६॥ **उदायी** चर्ड पद्योतन, सरीखे भाव को धर कर । खमाते श्रीर खमने में **ञ्रजव ञ्रानन्द छाया है।।घडी०७,।** मकट सुख सिन्धु अरु भगवान्, पावन वीर शासन में। हरि पूज्य मभु कृपया अजब आनन्द छाया है।।घडी॰=॥ सुभारत राजधानी में संवत उन्नीसो अठ्यासी। कवीन्द्रों के अगम ऐसा, अजब आनन्द छाया है।।घडी ९॥



श्री नव पद गहूंली। ६५।

तर्ज-देखण दो गणगोर, भँवर माने देखण दो गणगोर०।

वर्णवें श्री गुरुदेव सुभागी, सुन लो सहज सुभाव। सिद्धि विधायक शिव सुख टायक, श्री सिद्धचक्र प्रभाव ।टेर। दुर्लम नर भव श्रारज खेतजुः उत्तम कुल श्रवतार । सद्गुरु दर्शन पाये पुन्य से, धर्म करो इक्तार । सुभा० १ । दान शीयल तप माव भले ये, पर्म के चार मकार । रामें भी शुभ भाव विना तिनु, होवत है निस्सार। सुभा० २ । भाव की भूमि वहीं मन हैं जो चचल दुर्भर धार । ताथिरता हिन निर्मल निथल, व्यान सालवन सार ।सुभा० ३। हैं आलबन भी बहुतेरे, तो भी मर्वे मधान। जगगुरु जिनवर देव दिखावें, श्री नव पट का ध्यान (सुभा० श श्ररिहत सिद्ध श्राचारज पाठक, साधु ई निप्काम । सम्यग दर्शन हान चरण तप, ए नवपद गुणधाम ।सुमा०४। नवपद से ही सिन्द्र हुआ यह श्रीसिक्डचक युनाम। गहन करम वन जारन कारन ज्योतिश्रक उदाम । सुमा० ६। भी सिद्ध चक्र प्रयाव से चक्कर भववन का मिट जाय। श्री श्रीपान नरेंसर पेसे, इरि कवीन्द्र गुग्त गाय ।सुभाव ७।

निज नगर में पधारे गुरु दर्शन समय की गहूंली । ६६ ।

तर्ज-केशरिया थाँसु प्रीत लगी रे सांचा भाव स्ं०।

दर्शन को चालो गुरुसा पधारे, आज शहर में । टेर । भक्ति सहित नित वन्दन करते, आनन्द हर्ष न मावे। विकट कोटि संकट कट जावे, दर्शन निर्मल भावे रे।दर्श०१। गुरु मुख कमल निरख मन मधुकर, निज दुख दूर गमावे। तजकर सारी मोह चपलता सहज समाधि उपावेरे ।दर्श०२। संघ सघन वन हर्ष वढावन, गुरु, घन मेथ समाना। सरस बचन अमृत वर्षावें, शिव तरु सुखद निदानार दर्श ०३। पञ्चेन्द्रिय विषय विषदारी, पंच महाव्रतधारी। पंचमगति गतिकारन वन्दों, पंचम पद सुखकारी रे। दर्श० १ गुरु गम विन वर वस्तु तत्व को, कोई भी नहीं पावे। गुरु गम दीप ज्योति पाते ही, हृदय तिमिर हठ जावेरे।दर्श० थे। खरतर गरानायक गुरु सच्चे सुख सागर भगवाना। श्री हरिसागर पूज्य पधारे, सेवो सुगुरा सुजाना रे ।दर्श०६। मुनि मएडल में सोहें गुरुवर, ज्यों तारा में चन्दा। पूरव पुन्य से दर्शन पाया, कीरति करे कवींदा रे। दर्श० ७६

प्रपने शहर में पंचारने के लिये संदुगुरु को प्रार्थना गहंली । ६७।

तर्ज मेरे राम अयोव्या बुला लो मुभे०।

गरुराज विनन्ति स्वीकार करो। हम शहर को पावन आप करो ॥हेर॥ हैं अपावन आप के दर्शन विना इम तो यहाँ। सुर्य दर्शन के विना ही। है कमल खिलते कहाँ।। हमें आप सदर्शन दान करो ॥ गुरुराज ॥ १ । १ हम हृदय सन्तापमय है बोध अमृत के विना। होती कहीं क्या शांति है, शुभ मैच वर्ष के विना ॥ हमें बोध सुधा को पिलाया करो ॥ गुरुराज ॥ २ ॥ आप तो आनद मृत्ति सत्य सुख के धाम हैं। दु खमय जीवन हमारा हो रहा वेकाम है।। हमें श्राप समान बनाया करो ॥ गुरुराज ॥ ३ ॥

कर्त्तच्य हैं क्या क्यान जाने हम गुरु गर्म के बिना। भव दुख कैसे दूर हो सद्झान के पाये विना॥

हमें वही विवेक बताया करो ॥ गुरूराज ॥ २ ॥ श्राप विचर दूर गुरूबर भन्य जीव सुबोधते ।

सत्य सयम शाधते, सत्र आश्रवों को रोधते॥

शुभ महर नजा अब हम पे करो ॥ गुरुराज ॥॥॥ आप गणनायक सुलायक दिव्य गुरा है धारते ।
भाव जीव सब साता लहे, जँह आप पूज्य पधारते ॥
अब आप हमारे भी पाप हरो ॥ गुरुराज ॥ ६ ॥
आदर्शतर निज शिष्यगण को आप लेकर साथ में ॥
हम को तिराने के लिये, बीडा उठा लें हाथ में ॥
तब दिव्य कवीन्द्र सुकीर्नि करो ॥ गुरुराज ॥ ७ ॥

गणनायक श्रीमान् हरिसागर सद्गुरुवर के देहली प्रवेश समय की गहूंली । ६८।

तर्ज-केशरिया थांसुं प्रीत लागी रे सांचा भाव स्ं०।

धन त्राज की घडियाँ दर्शन पाये गुरुराज के ॥ टेर ॥
श्री हरिसागर गुरु गर्णनायक, लायक पूज्य पधारे ।
वन्दन चालो मङ्गल गा लो, पकटे पुण्य हमारे रे ॥
धन त्राज की घडियाँ ॥ १ ॥
श्राम नगर पुर में विचर ता, भविजन बोध करन्ता ।
सुण्य उदय देहली में दर्शन, देवें गुरु जयवन्ता रे ॥
धन त्राज की घडियां ॥ २ ॥

देहली सब सबन नदन वन स्रतह श्री गृहराया। मकटावे सताप विनाशक, निर्मल समकिन छायारे ॥ वन ऋाज की घडियाँ ॥ ३ ॥ सद्गुराशाली शिष्य सव मैं, शोभत है गुरुराया। तारों में ज्यों चंद्र मनोहर, मुख पर तेज संवाया र ॥ यन ऋाज की घडियाँ ॥ १८ ॥ कमल कु भारा मेच कु मोरा, छाया पथिक संभारे। दिल इपन गुक्त दर्शनहित त्यों, थी चित चाह हमारे रे ॥ धन आज की घडियाँ।। ५ ॥ • श्रान ही श्राशा पुरुष मकाशाः पूरुण भई हमारे । भव भय वारण शिवमुख कारण, है गुरु पूज्य हमारे रे ॥ धन त्राज की घडियाँ।। ६।। निन श्राणा त्रनुरागी खरतर, स्वन्द्र गच्छ में स्वामी । श्री मुखसागर गुरु गणनायक, भूमण्डल में नामोरी।। धन आज की चढियाँ।। ७॥ ृडन के पट्टगगन में शोभे, मुरज से परवाषी। र्श्री मगवान गुरु गरानायक, कीरति त्रिशुवन व्यापी रे ॥ धन ग्राज की घडियाँ ॥ = ॥

टन गुरुवर के पुष्य पट्ट पर सागर सम गम्भीरा। श्री हरि सागर गुढ गणनायक, वर्तमान वहवीरा रे॥ धन आज की घडियाँ। ९॥ व्यश्नि पाया आनन्द छाया। सुनें गुच्मुख वाणी। काल अनादि मोह जनितनिज कुमति लता किरपाणी रे। धन आज की घडियाँ॥ १०॥ गुरुवाई तिज भिज गुरुपद को, निर्भय हो विचरेंगे। निगुरापन अपना सब खोकर, सद्गुरु शिष्य बनेंगे रे॥ धन आज की घडियाँ॥ ११॥ श्रांति-मुक्ति दाता गुरुवर से, सविनय सब हम बोलें। चतुर्मीस की आज्ञा देवें, जय जय तब हम बोलें रे॥ धन आज की घडियाँ॥ १२॥ धन आज की घडियाँ॥ १२॥

सद्गुरु विहार समय की गहूंली । ६९।

तर्ज-चतुरंगी फोजां साथ रे महलार राव सेरनो सुबो क्या रे आवशे रे०।

सुन कर वात विहार की रे, आशालता मुरभाय रे।
गुरु जी सुनो आप यहाँ पे, विराजियें रे।। टेर ।।
आप विना अज्ञानकारे, घोर अन्धेरा छाय रे। गुरु०।
शून्य हुई सारी दिशा रे, चित्त अति अकुलाय रे।।गुरु० १।।

धर्म सनेही साजना रे, विरह सहा नहीं जाय रे। गुरु े भव सन्ताप को मेटने रे, गुरु विन कौन सहायरे ॥ गुरु० २॥ पर्मकथा करते हुए रे, मास मीनिट सम जाय रे ।गुरु०। त्रवतो मीनिट एक माससे र^{े,} मोहोटी श्रधिक लखायरे।।गु०३ हितिशिक्षा हमको यहाँ रे, कौन कहे सुखदाय रे । गुरु० । निर्नायक सेना जिसी रे, श्राज दशा हो जायरे ॥ गुरु० १॥ जीवा जीव स्वरूप को रे, जानें आप पसाय रे। गुरु०। तम सत्सगी श्रात्मा रे, समिकत र ग उपाय रे ।। गुरु० ४।। मोह ममादसे जो हुआ रे, अविनय दीजो भुलायरे । गृहः। श्राप श्रकारणहित करा रे विनित सुनी चित्त लायरे ॥गु०६ नरवर सरवर संत को रे, उपकारी जग गाय रे। गुरु०। रों उपकार निमित्तसे रें, श्राप विराजो गुरुरायरे ॥गुरु० ७॥ गगानायक हरि पूज्यजी रे, विनित सुनो चिनलायरे ।गृहः। सेवक सविनय वीनवेरे, स्त्रामी सीस नमाय र ॥ गुक्र = ॥

+

दोक्षा समय का गीत । ७० । तक्ष-ष्टण जाएं मारा सा के मन की०। दीक्षा का दका वजाया, मोहराज पराजय पाया रे । देर । दुर्लभ नरभर गुरु योगाः तजकर सर दुखकर भेगारे ।दीक्षा० द्याडा ते मात पिनाकीः कर दुर्मित दूर रगकी रे । दीजा० १। सव जीव श्रजीव पिछानी, सुमित निज चित्तमें ठानीरे दिशाव शिजनराजकी पूजा करके, निज रूप हृदयमें धरके रे ।दीक्षाव र विज्ञात चक्कर मेदनको शिवसुन्दरी से भेटनको रे ।दीक्षाव। संयम-सुन्त न्यलीना होकर सद्गुक श्राधीनारे ।दीक्षाव है। निगुरापन दूर हठाया, गुरु चरण कमल चित ठायारे।दीक्षाव घटकाय श्रमयपद दीना, निर्भय पद श्रपना कीनारे ।दीक्षाव पहसूत्र श्ररथतदुभयको गुरुगमसे सुन सब नयकोरे रे ।दीक्षाव। श्रज्ञान श्रनादि निवारी ज्ञानोदय कर श्रविकारी रे ।दीक्षाव। सुख सागर श्रीभगर्जाना, होकर हरिपूज्य मधाना रे। दीक्षाव। सम्पूर्ण कविन्द्र सुकेलीय गुणगाव नित्य सहलीरे ।दीक्षाव ।

इति श्री खरतर गच्छ गणाधीश्वर प्रयपाद प्रातः स्मरणीय श्रीहरिसागर सद्गुरु चरण कमछ चञ्चरीक कल्प शिष्य लेश कवीन्द्र सागर विनिर्मित विविध-विधि-निर्पेध विधायक गुरूपदेश गुण-माहात्म्य वर्णन वर्णित कवीन्द्र केलि-गहुंली संग्रह प्रथमो भागः समाप्तः



是是我我是我 我我我就就 पुस्तक प्राप्ति के स्थान: हरि सागर जैन पुस्तकालय, ठि० जाटावास मु॰ लोहावट (मारवाङ्)। श्रीमती कुञ्जी बाई, ठि० मालीवाड़ा हीरानन्द की गली में मु॰ देहली। पोष्टेज चार्ज के दो आने श्राने पर भेंट मिलेंगी।

भेड़े "सदम्म यन्त्रालयं" चावड़ी वाज़ार देहली में छपी। हैं भेड़े 回来来来来来来来来来来来来来来来来来来来?

